

NAAM RAKHNE KE AHKAM (HINDI)

बच्चों के नाम रखने के लिये इस किताब में सैंकड़ों अच्छे नामों की
फ़ेहरिस्त भी शामिल है



नाम रखने के अहक़ाम



شعبه اسلامی کتب
(دعوت اسلامی)

حسبہ اُمّ الخیر البوریم سلیمان محمد
ابوقاسم عبدالرحمن عبداللہ احمد

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَعُوذٌ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शौखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरि र-जब्वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ अव्वाह ! عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजूर्गी वाले।

(المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٣٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना

बकीअ

व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ि صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रूजूअ फ़रमाइये।

मजलिसे तरजिम (हिन्दी-गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिया” ने येह किताब “नाम रखने के अहकाम” उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तरजिम, बरोडा (हिन्दी-गुजराती) ने इस किताब को हिन्द की राष्ट्रिय भाषा “हिन्दी” में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

❶ कमो बेश दस⁽¹⁰⁾ मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोजिंग (2) सेटिंग (3) कम्प्यूटर तकाबुल (4) तकाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्प्यूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

❷ करीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क) को वाजेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतियाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये तरजिम चार्ट का बग़ौर मुतालाआ फ़रमाएं।

❸ हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़ के ऐन मुताबिक़ ही हिन्दी-जोडणी रखी गई है और बतौर ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाजेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) हर्फ़ को वाजेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के नीचे खोड़ा (؁) इस्ति'माल किया गया है। मषलन उ-लमा (عَلَمَاء) में “-ल” मफ़तूह और रहम (رَحْمَة) में “ह” साकिन है।

«4» उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (اَ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है।

जैसे : दा'वत (دَعْوَت)

«5» अरबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अरबी किताबों के हवालाजात भी अरबी ही रखे गए हैं जब कि “عَزَّوَجَلَّ”, “صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم” और “رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ” वगैरा को भी अरबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तशजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, e-mail या sms) मुत्तलअ़ फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रश्मुल ख़त) का तशजिम चार्ट

त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ٹ	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख = خ	ह = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड़ = ڈھ	र = ر	ज़ = ذ
अ = ع	ज़ = ط	त = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क = ق	फ = ف	ग = غ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
و = و	و = و	ی = ی	- = -	ی = ی	و = و

-: राबिता :-

मजलिसे तशजिम, मक्तूबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी ।

[illegible]

क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के
नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो

(अबु दाؤद، ३७४/६، حدیث: ६१६८)

नाम रखने के अहकाम

—: पेशकश :—

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो 'बए इस्लाही कुतुब)

—: नाशिर :—

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-110006

फ़ोन : 011-23284560

e-mail : maktabadelhi@gmail.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

नाम किताब : नाम रखने के अहक़ाम

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)

हिन्दी रस्मुल ख़त : मजलिसे तराजिम, बरोडा

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

सिने त़बाअत : शव्वालुल मुकर्रम, सि. 1435 हि.

कीमत : - - -

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1435 हि. हवाला : 192

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

“नाम रखने के अहक़ाम” (उर्दू)

(मतबूअ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अक़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़ही मसाइल और अरबी इबारात वग़ैरा के हवाले से मक़दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।



मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

12-11-2013

E-mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“बरकत वाले नाम” के व्याख्ये हुरफ की निश्बत से इस किताब को पढ़ने की “11 नियतें”

فَرْمَانِے مُسْتَفَاحَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نَبِیُّہُ الْوَحْدِیُّ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ

मुसलमान की नियत उस के अमल से बेहतर है। (معجم كبير، १/ ०८१، حدیث: २६९०)

दो मदनी फूल :

﴿1﴾ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का षवाब नहीं मिलता ।

﴿2﴾ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा ।

(1) हर बार हम्द व (2) सलात और (3) तअव्वुज व (4) तस्मिया से आगाज करूंगा (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा) (5) हत्तल वस्अ इस का बा वुजू और (6) फ़िल्ला रू मुतालाअ करूंगा (7) कुरआनी आयात और (8) अहादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (9) जहां जहां “**अल्लाह**” का नामे पाक आएगा वहां **عَزَّوَجَلَّ** और (10) जहां जहां “**सरकार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** पढ़ूंगा । (11) किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा । (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिया

अज : बानिये दा'वते इस्लामी, आशिके आ'ला हज़रत, शैखे
तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरि रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على احسانه وبفضل رسوله صلى الله تعالى عليه وآله وسلم

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक
“दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, इहयाए सुन्नत और इशाअते
इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अज़मे मुसम्मम
रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो खूबी सर अन्जाम देने के
लिये मुतअद्दिद मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है
जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिया” भी है
जो दा'वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی
पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअती
काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज |

“अल मदीनतुल इल्मिया” की अव्वलीन तरजीह

सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, अलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइषे खैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी अशशाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की गिरां मायह तसानीफ़ को अंसरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा'वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले खैर को ज़ेवरे इख़लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फिरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद पढ़ने वाले का नाम बारगाहे रिसालत में पेश किया जाता है

सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान,
 सरवरे जीशान **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने जन्नत निशान है :
 बेशक **عَزَّوَجَلَّ** ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर
 फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक की आवाज़ें सुनने की ताक़त
 अता फ़रमाई है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक
 पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता
 है कि फुलां बिन फुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है ।

(مسند البزار، ٤/٢٥٥، حديث: ١٤٢٥)

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर खुश
 नसीब है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत
 में पेश किया जाता है ।

बे निशानों का निशां मिटता नहीं

मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाम पूछा करते**

सरकारे मदीनाए मुनव्वरा, सरदारे मक्काए मुक़र्रमा

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी को अमिल (ज़कात व उ़शर वग़ैरा
 हासिल करने वाला ज़िम्मेदार) बना कर भेजते तो उस का नाम

पूछते, अगर उस का नाम आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को पसन्द आता तो खुश होते और उस की खुशी आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के चेहरे पर देखी जाती और अगर उस का नाम नापसन्द होता तो उस की नापसन्दीदगी आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के चेहरे पर देखी जाती । (अबु दाउद, کتاب الطب، باب فی الطیرة، ۲۵/۴، حدیث: ۳۹۲۰)

मुफ़्फ़िस्से शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان** इस हदीषे पाक के तहत लिखते हैं : इस लिये उ-लमा फ़रमाते हैं कि अपनी अवलाद के नाम अच्छे रखो, नाम का अषर नाम वाले पर पड़ता है। बुरे नाम वाले को लोग अपने पास नहीं बैठने देते। अच्छे नाम वाले के काम भी **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** अच्छे होते हैं। (मिरआतुल मनाजीह, 6/263)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

नाम बच्चे के लिये पहला तोहफ़ा है

नाम किसी भी आदमी की शख़्सियत का अहम हिस्सा होता है जिस से वोह पहचाना और पुकारा जाता है। घर, ख़ान्दान, महल्ले, स्कूल, मद्रसे, जामिआ, बाज़ार और दफ़्तर में नाम ही उस की शनाख़्त होता है जिस तरह कि किताब का नाम उस की शनाख़्त होता है। कई मरतबा नाम घरेलू माहोल और तहज़ीबी रिवायात की अक्कासी भी करता है। नाम अच्छा हो तो इन्सान का ज़मीर उसे काम भी अच्छा करने की तरगीब देता रहता है। बच्चे के पैदा होते ही उस का नाम रखने के लिये ग़ौरो फ़िक्क शुरू हो जाता है, ऐसे में बाप को चाहिये कि अपने बच्चे का

अच्छ नाम रखे कि येह उस की तरफ़ से अपने बच्चे के लिये पहला और बुनयादी तोहफ़ा होता है जिसे बच्चा उम्र भर अपने सीने से लगाए रखता है। **सरकारे मदीनए मुनव्वरा**, सरदारे मक्काए मुकर्रमा **أَوَّلُ مَا يُنَجِّلُ الرَّجُلَ وَلَكِنَّ اسْمَهُ فَلْيُحْسِنْ اسْمَهُ** : **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : या'नी आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है इस लिये चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे ।

(جمع الجوامع، ३/ २८०، حدیث: ८८७०)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी के हां बच्चा पैदा हो तो मुबारक बाद देने के बा'द वालिदैन् से उमूमन येही सुवाल होता है कि **नाम क्या रखा ?** बसा अवक़ात बच्चे का वालिद अपने दोस्त अहबाब और रिश्तेदारों से पूछता दिखाई देता है कि **नाम क्या रखें ?**

नाम कैसा होना चाहिये ? नाम कौन रखे ? कौन सा नाम रखना अफ़ज़ल है ? कौन से नाम रखना नाजाइज़ है ? किसी का नाम बिगाड़ना कैसा ? कुन्यत किसे कहते हैं ? कुन्यत रखने की क्या अहम्मियत है ? लक़ब क्या होता है ? ज़ेरे नज़र किताब **“नाम रखने के अहक़ाम”** (जिस का नाम शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने अ़ता फ़रमाया है) इस किताब में इसी नौइय्यत की मा'लूमात फ़राहम करने की कोशिश की गई है, बच्चों और बच्चियों के नाम रखने के लिये **538** अच्छे नामों की फ़ेहरिस भी शामिले किताब है । इस किताब को ख़ूब समझ कर कम अज़ कम तीन मरतबा पढ़िये और दूसरों को भी पढ़ने की तरगीब दीजिये । (शो'बए इस्लाही कुतुब अल मदीनतुल इल्मिय्या)

क़ियामत के दिन नाम से पुकारा जाएगा

नाम का तअल्लुक सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी तक नहीं बल्कि जब मैदाने ह़शर का़िम होगा तो इन्सान को इसी नाम से मालिके काइनात **عَزَّوَجَلَّ** के हुज़ूर बुलाया जाएगा जिस नाम से उसे दुनिया में पुकारा जाता है, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो । (अबु दाउद, کتاب الادب، باب في تغيير الاسماء، ۳۷۴/۴، حدیث: ۴۹۴۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّيْ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखें

बच्चों का नाम रखना इतना अहम है कि जो बच्चे मां के पेट में ज़ाएअ़ हो जाएं उन का भी नाम रखने की ताकीद की गई है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखो कि येह कच्चे बच्चे तुम्हारे पेशरव (आगे आगे चलने वाले या आगे गुज़रने वाले) हैं । (क़ुत्बुल मुक़द्दस, کتاب النکاح، الباب السابع، الجزء ۱۶/۸، حدیث: ۴०२०६)

एक हृदीषे पाक में तो यहां तक इरशाद हुवा कि कच्चा बच्चा नाम न रखने की सूरत में बारगाहे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में वालिदैन की शिकायत करेगा कि इन्हों ने मेरा नाम न रख कर मुझे ज़ाएअ़ कर दिया । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अनस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मैं ने **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

को फ़रमाते हुवे सुना : कच्चे बच्चे का भी नाम रखो कि इन के सबब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हारे मीज़ान के पलड़े को भारी करेगा, बेशक कच्चा बच्चा क़ियामत के दिन अर्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! इन्हों ने मेरा नाम न रख कर मुझे ज़ाएअ कर दिया ।

(کنز العمال، کتاب النکاح، الباب السابع، جزء ۱۶، ص ۱۷۵، حدیث: ۴۵۲۰۷)

“सिक्त्त” या’नी कच्चे बच्चे की वज़ाहत करते हुवे मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : अरबी में “सिक्त्त” वोह बच्चा कहलाता है जो छे माह पूरे होने से पहले शिकमे मादर (या’नी मां के पेट) से ख़ारिज हो जाए । (मिरआतुल मनाजीह, 2/519)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बच्चा फ़ौत हो जाए तो ?

दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **1250** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत (जिल्द 1) सफ़हा **841** पर है : बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या मुर्दा उस की ख़िल्क़त (या’नी पैदाइश) तमाम (या’नी मुकम्मल) हो या ना तमाम (ना मुकम्मल) बहर हाल उस का नाम रखा जाए और क़ियामत के दिन उस का हशर होगा (या’नी उठाया जाएगा) (बहारे शरीअत, **3/659**, ۱۰۳/۳، لَدْرُ مُخْتَار) लड़का हो तो लड़कों का सा और लड़की हो तो लड़कियों का सा नाम रखा जाए और मा’लूम न हो सका कि लड़की है या लड़का तो ऐसा नाम रखा जाए जो मर्द व औरत दोनों के लिये हो सकता हो । (मषलन : राहत, नुस्त, तस्लीम वगैरा) (बहारे शरीअत, **3/603**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम कब रखें ?

अफ़ज़ल यह है कि सातवें दिन बच्चे का अ़कीका किया जाए और नाम रखा जाए, अ़कीका करने से पहले भी नाम रखना जाइज़ है । (नुज़हतुल क़ारी, 5/430), हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शो'ऐब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन उस का नाम रखने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।

(ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی تعجیل اسم المولود، ۳۸۰/۴، حدیث: ۲۸۴۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नाम कौन रखेगा ?

नाम रखने की ज़िम्मेदारी बुन्यादी तौर पर बच्चे के वालिद की बनती है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अवलाद का वालिद पर यह हक़ है कि उस का अच्छा नाम रखे और अच्छा अदब सिखाए ।

(شعب الايمان، باب في حقوق الاولاد و الاهلين، ۴۰۰/۶، حدیث: ۸۶۵۸)

हज़रते अल्लामा अब्दुररुफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي इस हदीष के तहत नक़ल करते हैं : उम्मत को अच्छा नाम रखने का हुक्म देने में इस बात पर तम्बीह है कि आदमी के काम उस के नाम के मुताबिक़ होने चाहियें क्यूंकि नाम इन्सान की शख़्सियत के लिये जिस्म की तरह होता और उस की शख़्सियत की अक्कासी करता है । **اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ की हिक्मत इस बात का

तकाजा करती है कि नाम और काम में मुनासबत और तअल्लुक हो। नाम का अषर शख़िसय्यत पर और शख़िसय्यत का अषर नाम पर ज़ाहिर होता है। (فیض القدیر، ۳/۵۲۲، تحت الحدیث: ۳۷۴۰)

मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ النَّحَّان** इस हदीषे पाक के तहूत लिखते हैं : अच्छे नाम का अषर नाम वाले पर पड़ता है, अच्छा नाम वोह है जो बे मा'ना न हो जैसे बुधवा, तलवा वगैरा और फ़ख़्र व तकब्बुर न पाया जाए जैसे बादशाह, शहनशाह वगैरा और न बुरे मा'ना हों जैसे अ़ासी वगैरा। बेहतर येह है कि अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) या हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सहाबए इज़्ज़ाम, अहले बैते अतहार (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) के नामों पर नाम रखे जैसे इब्राहीम व इस्माईल, उषमान, अली, हुसैन व हसन वगैरा, औरतों के नाम आसिया, फ़ातिमा, अ़ाइशा वगैरा और जो अपने बेटे का नाम मुहम्मद रखे वोह **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** बख़्शा जाएगा और दुन्या में उस की बरकात देखेगा। (मिरआतुल मनाजीह, 5/30)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

हमारे मुआशरे में नाम रखने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

बच्चे या बच्ची (बिलखुसूस पहली अवलाद) की पैदाइश के बा'द उमूमन क़रीबी रिश्तेदारों मषलन दादी, नानी, फूफी, ख़ाला, ताया चचा वगैरा का इस्सार होता है कि इस का नाम मैं रखूंगा और हर एक अपनी पसन्द का नाम भी चुन कर ले आता है। अगर वालिद राज़ी हो तो इस में हरज नहीं लेकिन अहम बात येह है कि नाम रखने वाले बा'ज़ अवकात दीनी मा'लूमात की कमी की वजह से बच्चों के ऐसे नाम भी रख देते हैं जो शरअन

ना जाइज़ होते हैं या जिन के मअ़ानी अच्छे नहीं होते, ऐसे नाम रखने से बहर ह़ाल बचा जाए। वालिदैन् की ख़्वाहिश होती है कि इन के बेटे या बेटी का नाम निहायत ही ख़ूब सूरत हो, मगर नाम के ह़तमी इन्तिखाब के वक़्त अल्फ़ाज़ की ज़ाहिरी ख़ूब सूरती का ख़याल तो होता है लेकिन दीगर पहलूओं पर तवज्जोह नहीं होती चुनान्चे, बा'ज़ अवक़ात लोग अहले इल्म से ऐसे ऐसे नामों के मअ़ानी पूछते हैं जो उर्दू, अरबी या फ़ारसी किसी लुग़त में नहीं मिलते, ज़ाहिर है इस तरह के बे मा'ना नाम रखना भी मुनासिब नहीं।

नाम कैसा होना चाहिये ?

इस ह़वाले से मदनी फूल अता करते हुवे सदरुशशरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ बहारे शरीअ़त में लिखते हैं : ऐसा नाम रखना जिस का ज़िक्र न कुरआने मजीद में आया हो, न हदीषों में हो, न मुसलमानों में ऐसा नाम मुस्ता'मल हो, इस में उ-लमा को इख़िलाफ़ है, बेहतर येह है कि न रखे। (बहारे शरीअ़त, 3/603) मदनी मश्वरा है कि वालिद या रिश्तेदार बच्चे का जो भी नाम मुन्तख़ब करें पहले इस के बारे में मुफ़ितयाने किराम या उ-लमाए अहले सुन्नत دَامَتْ فَيُوضِهِمْ से रहनुमाई लें और इस पर अमल भी करें। (अपने शरई मसाइल के हल के लिये दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के इन नम्बर्ज़ पर भी राबिता किया जा सकता है : **03000220112-5** (वक़्त सुबह 10 से 4 बजे तक, 1 से 2 बजे तक वक़फ़ा बराए नमाज़ व तअ़ाम और जुमुअ़ा के दिन ता'तील है।)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कहीं हुब्बे जाह तो नहीं ?

बा'ज अवकात ऐसा नाम भी तलाश किया जाता है जो घर, खानदान, महल्ले में दूर दूर तक किसी का न हो, जो भी सुने फौरन कह उठे कि येह नाम तो पहली बार सुना है, कैसा ज़बरदस्त नाम रखा है ! येह अल्फ़ाज़ सुन कर नाम रखने वाला फूले नहीं समाता, लेकिन ऐसों को एक लम्हे के लिये सोच लेना चाहिये कि कहीं येह खुशी हुब्बे जाह (या'नी ता'रीफ़ की ख़्वाहिश) के मरज़ का नतीजा तो नहीं ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नाम रखते वक्त अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है : رِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ

मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है। (معجم كبير، १/ ८०१، حديث: २६९०)

दो मदनी फूल :

❶ बिगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले खैर का षवाब नहीं मिलता ।

❷ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई भी जाइज़ काम अच्छी निय्यत से किया जाए तो उस का भी षवाब मिलता है, लिहाज़ा एक दम नाम रख देने के बजाए पहले हस्बे ह़ाल निय्यतें कर लेनी चाहियें मषलन ❀ शरीअत के मुताबिक़ जाइज़ नाम रखूंगा ❀ जिन नामों की अह़दीषे मुबारका में तरगीब आई है वोह नाम रखूंगा ❀ निस्बत की बरकतें लेने के लिये अम्बियाए किराम, सहाबए किराम और दीगर बुजुर्गाने दीन के नाम पर नाम रखूंगा । ❀ नाम के हतमी इन्तिखाब के लिये उ-लमाए किराम से मश्वरा कर लूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम

अगर किसी बच्चे का नाम “अब्द” से शुरू करना हो तो सब से अफ़ज़ल नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हारे नामों में से **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं।”

(مسلم، کتاب الآداب، باب النهی عن التكنی بآبی القاسم... الخ، ص ۱۱۷۸، حدیث: ۲۰ (۲۱۳۲))

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي लिखते हैं : इन दोनों में ज़ियादा अफ़ज़ल अब्दुल्लाह है कि अबूदिय्यत (या'नी अब्द होने) की इज़ाफ़त (या'नी निस्बत) इल्मे ज़ात (या'नी **अब्बाह**) की तरफ़ है। इन्हीं (या'नी अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान) के हुक्म में वोह अस्मा (या'नी नाम) हैं जिन में अबूदिय्यत की इज़ाफ़त (या'नी निस्बत) दीगर अस्माए सिफ़ातिय्या की तरफ़ हो, मषलन अब्दुर्रहीम, अब्दुल मलिक, अब्दुल ख़ालिक वगैरहा। हदीष में जो इन दोनों नामों को तमाम नामों में खुदा तआला के नज़दीक प्यारा फ़रमाया गया इस का मतलब येह है कि जो शख्स अपना नाम अब्द के साथ रखना चाहता हो तो सब से बेहतर अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान हैं, वोह नाम न रखे जाएं जो जाहिलिय्यत में रखे जाते थे कि किसी का नाम अब्दे शम्स (सूरज का बन्दा) और किसी का अब्दुद्धार (घर का बन्दा) होता। (बहारे शरीअत, 3:601)

“अब्दुर्रहमान” और “अब्दुल्लाह”

नाम मुकम्मल बोलने की आदत बनाएं

सदरुशरीआ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मज़ीद लिखते हैं :

अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान बहुत अच्छे नाम हैं मगर इस ज़माने में येह अक़्बर देखा जाता है कि बजाए अब्दुर्रहमान उस शख्स को बहुत से लोग **रहमान** कहते हैं और ग़ैरे खुदा को **रहमान** कहना हराम है। इसी तरह अब्दुल ख़ालिक् को **ख़ालिक्** और अब्दुल मा'बूद को **मा'बूद** कहते हैं, इस किस्म के नामों में ऐसी नाजाइज़ तरमीम (तब्दीली) हरगिज़ न की जाए। इसी तरह बहुत क़षरत से नामों में तसगीर का रवाज है या'नी नाम को इस तरह बिगाड़ते हैं जिस से हक़ारत निकलती है और ऐसे नामों में तसगीर हरगिज़ न की जाए लिहाज़ा जहां येह गुमान हो कि नामों में तसगीर की जाएगी (वहां) येह नाम न रखे जाएं दूसरे नाम रखे जाएं। (बहारे शरीअत, 2/426) (एक और मक़ाम पर सदरुशशरीआ लिखते हैं :) **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नाम की तसगीर करना कुफ़्र है, जैसे किसी का नाम अब्दुल्लाह या अब्दुल ख़ालिक् या अब्दुर्रहमान हो उसे पुकारने में आख़िर में अलिफ़ वग़ैरा ऐसे हुरूफ़ मिला दें जिस से तसगीर समझी जाती है। (बहारे शरीअत, 2/426)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“अब्दुल्लाह” नाम रखा

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने 19 से जाइद खुश नसीब बच्चों का नाम “अब्दुल्लाह” रखा, ऐसी ही एक रिवायत मुलाहज़ा कीजिये, : चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुतीअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि उन के वालिद ने ख़्वाब में देखा कि उन्हें खजूरों की थैली दी गई, उन्होंने ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अपना ख़्वाब बयान किया,

आप ﷺ ने फ़रमाया : क्या तुम्हारी कोई ज़ौजा उम्मीद से है ? उन्होंने ने अर्ज की : जी हां ! बनू लैष (कबीले) से तअल्लुक रखने वाली ज़ौजा । हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने फ़रमाया : अ़नक़रीब उस के हां तुम्हारा बेटा पैदा होगा । जब बच्चा पैदा हुवा तो वोह उसे नबिय्ये अकरम ﷺ की ख़िदमत में लाए, आप ﷺ ने उसे खज़ूर की घुट्टी दी, उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा और उस के लिये बरकत की दुआ फ़रमाई । (الاصابة، २/१०، رقم: ६२०७)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

एक “जिन्न” का नाम “अब्दुल्लाह” रखा

हज़रते सय्यिदुना अ़मिर बिन रबीअ रज़ी अल्लैहू त़ैअल एन्हेमा फ़रमाते हैं कि इब्तिदाए इस्लाम में हम मक्कए मुकर्रमा ﷺ में **رَأَاهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** मुल्ताने इन्सो जान, रहमते अ़लमिय्यान ﷺ के साथ थे, हम ने मक्के के एक पहाड़ से एक ग़ैबी आवाज़ सुनी जो मुशरिकीन को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभार रही थी । नबिय्ये करीम ﷺ ने फ़रमाया : येह शैतान है और जिस शैतान ने किसी नबी **عَلَيْهِ السَّلَام** के ख़िलाफ़ ऐसा ए’लान किया है **عَزَّوَجَلَّ** ने उसे हलाक कर दिया । बा’द में आप ﷺ ने हम से फ़रमाया : “**عَزَّوَجَلَّ** ने उसे एक ताक़तवर जिन्न के ज़रीए हलाक कर दिया जिस का नाम **समूज** है, मैं ने उस का नाम अ़ब्दुल्लाह रख दिया है ।” शाम को हम ने उस जगह से ग़ैबी आवाज़ में येह अशआर सुने :

نَحْنُ قَتَلْنَا مُسْعَرًا لَّمَّا طَغَىٰ وَاسْتَكْبَرَ
وَصَغَرَ الْحَقُّ وَسَنَّ الْمُنْكَرَ بِشْتُمِهِ نَبِينَا الْمُظْفَرَ

या 'नी : हम ने मिस्अर (ख़बीष ज़िन्न) को क़त्ल कर दिया वोह सरकश और मुतकब्बिर था, वोह हमारे कामयाब व कामरान नबी की बदगोई करता था और हक़ का मुन्किर था ।

(الاصابة، १/४८/३، رقم: ३६८०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अब्दुर्रहमान नाम रखा

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कई सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का नाम अब्दुर्रहमान भी रखा, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : ज़मानए जाहिलिय्यत में मेरा नाम अब्दे शम्स (सूरज का बन्दा) था, फिर दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरा नाम अब्दुर्रहमान रखा ।

(اسد الغابة، १/३३७/६، رقم: ६३१९)

तुम “अबू राशिद अब्दुर्रहमान” हो

हज़रते सय्यिदुना अबू राशिद अब्दुर्रहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में अपनी क़ौम के 100 अफ़राद का वफ़द ले कर हाज़िर हुवे और दौलते ईमान से नवाज़े गए । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी हाज़िरी का अहवाल सुनाते हैं कि मेरे साथ आने वाले लोगों ने मुझ से कहा : पहले तुम जा कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से मुलाक़ात करो, अगर तुम्हें उन में पसन्दीदा बात नज़र आए तो हमें आ कर बताना हम

भी हाज़िरी देंगे वरना तुम वापस आ जाना हम लौट जाएंगे। मैं ने हाज़िर हो कर कहा : **أَنْعَمُ صَبَاحًا يَا مُحَمَّدُ** या'नी सुब्ह बख़ैर ऐ मुहम्मद ! आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : येह अहले ईमान का सलाम नहीं। मैं ने अर्ज़ किया : तो फिर किस तरह सलाम करूं ? आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जब तुम अहले ईमान के हां आओ तो कहो : **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ** मैं ने कहा : **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ** आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : **وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** फिर आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने मेरा नाम दरयाफ़्त फ़रमाया : मैं ने कहा : अबू मुअविyyा अब्दुल्लाति वल उज्ज़ा। नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : बल्कि तुम “अबू राशिद अब्दुरहमान” हो। नबिय्ये मुअज्ज़म, रसूले मोहतरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने मेरी इज्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाई, मुझे बिठाया, मुझे अपनी चादर और असा अता फ़रमाया।

(جمع الجوامع، १०/५०१، حديث: १०१०२ ملخصاً)

अपने बेटे का नाम अब्दुरहमान रखो

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन अबू सबरह **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** सहाबी इब्ने सहाबी हैं। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का शुमार कूफ़ा में रिहाइश पज़ीर सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** में होता है। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के साहिबज़ादे हज़रते सय्यिदुना ख़ैषमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि मेरे वालिद अब्दुरहमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** मेरे दादा के साथ राहते क़ल्बे नाशाद, महबूबे रब्बुल इबाद **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हां गए, हुजूरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने मेरे दादा से पूछा :

तुम्हारे इस बेटे का नाम क्या है? उन्होंने ने अर्ज की : अर्जीज। आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया इस का नाम अर्जीज नहीं "अब्दुर्रहमान" रखो, सब से अच्छे नाम अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान और हारिष हैं।

(असदुलगाब, ६१६/३, ६१६/३, ३३१३)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ** फ़रमाते हैं : अर्जीज अस्माए इलाहिय्या में से हैं इज़्ज़त से बना है, मुसलमान में फ़िरोतनी (या'नी इन्किसारी), इज़्ज़ो नियाज़ चाहिये।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/420)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ज२०री वजाहत

सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُورِ** लिखते हैं : येह न समझना चाहिये कि येह दोनों नाम (या'नी अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान) **मुहम्मद व अहमद** से भी अफ़ज़ल हैं, क्यूंकि हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के इस्मे पाक **मुहम्मद व अहमद** हैं और ज़ाहिर येही है कि येह दोनों नाम खुद **अब्लाह** तआला ने अपने महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के लिये मुन्तख़ब फ़रमाए, अगर येह दोनों नाम खुदा (**عَزَّوَجَلَّ**) के नज़दीक बहुत प्यारे न होते तो अपने महबूब के लिये पसन्द न फ़रमाया होता। अहादीष में **मुहम्मद** नाम रखने के बहुत फ़ज़ाइल मज़कूर हैं।

(बहारे शरीअत, 3/601)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अस्माए इलाहिय्या के साथ नाम रखने के मदनी फूल

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के नामों की दो किस्में हैं : ज़ाती और सिफ़ाती, ज़ाती नाम सिर्फ़ “**अल्लाह**” है। इस ज़ाती नाम को किसी इन्सान के लिये रखना जाइज़ नहीं है अगर अब्द की इजाफ़त के साथ “अब्दुल्लाह” रखा जाए तो जाइज़ बल्कि बाइषे फ़ज़ीलत है। फिर सिफ़ाती नामों की दो किस्में हैं :

(1) जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के साथ खास हैं, मषलन : रहमान (हमेशा रहम फ़रमाने वाला), कुद्दूस (बड़ा पाक), क़य्यूम (अज़ खुद हमेशा काइम रहने वाली ज़ात) वग़ैरा, अगर येह नाम अब्द की इजाफ़त के साथ रखे जाएं मषलन अब्दुल कुद्दूस, अब्दुल क़य्यूम तो जाइज़ है।

(2) जो नाम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के साथ खास नहीं हैं मषलन : अली, रशीद, कबीर, बदीअ वग़ैरा, येह नाम अब्द की इजाफ़त और इस के बिग़ैर रखना भी जाइज़ है, अलबत्ता इस किस्म के नामों के रखने की सूरत में येह ज़रूरी है कि इन नामों के वोह मा'ना मुराद न लिये जाएं जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की शान के ही लाइक़ हैं, मषलन : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का “रशीद, कबीर” होना ज़ाती है और मख़लूक के अन्दर येह मा'ना अताई हैं। सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** मक्तबतुल मदीना की मतबूआ बहारे शरीअत जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़्हा 602 में फ़रमाते हैं : बा'ज़ अस्माए इलाहिय्या जिन का इतलाक़ (बोला जाना) ग़ैरुल्लाह पर जाइज़ है इन के साथ नाम रखना जाइज़ है,

जैसे अली, रशीद, कबीर, बदीअ, क्यूंकि बन्दों के नामों में

वोह मा'ना मुराद नहीं हैं जिन का इरादा **अब्बाह** तअ़ाला पर इतलाफ़ करने (बोलने) में होता है और इन नामों में अलिफ़ व लाम मिला कर भी नाम रखना जाइज़ है, मषलन **अल अली**, **अरशीद** । हां इस ज़माने में चूँकि अ़वाम में नामों की तसगीर करने का बक़रत रवाज हो गया है, लिहाज़ा जहां ऐसा गुमान हो ऐसे नाम से बचना ही मुनासिब है । खुसूसन जब कि अस्माए इलाहिय्या के साथ **अब्द** का लफ़ज़ मिला कर नाम रखा गया, मषलन **अब्दुरहीम**, **अब्दुल करीम**, **अब्दुल अज़ीज़** कि यहां मुज़ाफ़ इलैह से मुराद **अब्बाह** तअ़ाला है और ऐसी सूरत में तसगीर (छोटा करना) अगर क़स्दन होती तो **مَعَادُ اللَّهِ** क़ुफ़़ होती, क्यूँकि येह उस शख़्स की तसगीर नहीं बल्कि मा'बूदे बरहक़ की तसगीर है मगर अ़वाम और नावाक़िफ़ों का येह मक़्सद यकीनन नहीं है, इसी लिये वोह हुक्म नहीं दिया जाएगा बल्कि उन को समझाया और बताया जाए और ऐसे मौक़अ पर ऐसे नाम ही न रखे जाएं जहां येह एहतिमाल (गुमान) हो । (१८८/९, **رَدُّ الْمُحْتَلَرِ**)

“जब्बार” नाम तब्दील कर के “अब्दुल जब्बार” रखा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल जब्बार बिन हारिष **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का पहला नाम “जब्बार बिन हारिष ।” था, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : तुम “अब्दुल जब्बार” (ज़बरदस्त कुदरत वाले के बन्दे) हो ।

(असदुलगाय़ा, ३८७/१, रूम: ११७)

अर्ज़ : “अब्द” से रखे जाने वाले नामों की फ़ेहरिस इसी किताब के सफ़हा **122** पर मुलाहज़ा कीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नामे मुहम्मद की बरकतों पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने मुश्तफ़ा

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नामे अक़दस “मुहम्मद” पर नाम रखना बहुत बड़ी सआदत है। एक सर्वे के मुताबिक़ दुनिया में सब से ज़ियादा रखा जाने वाला नाम “मुहम्मद” है। नामे “मुहम्मद” की फ़ज़ीलत खुद हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी ज़बाने मुबारक से बयान फ़रमाई है, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

❁ जिस के हां बेटा पैदा हुवा और मेरी महबूबत और हुसूले बरकत के लिये उस का नाम मुहम्मद रखे तो वोह और उस का बेटा दोनों जन्नत में जाएंगे।

(क़ज़रुलعمال, क़ताब النّकाह, الفصل الاول في الاسماء, १६/ १७०, حديث ४०२१०)

❁ जिस ने मेरे नाम से बरकत की उम्मीद करते हुवे मेरे नाम पर नाम रखा, क़ियामत तक सुब्हो शाम उस पर बरकत नाज़िल होती रहेगी।

(क़ज़रुलعمال, क़ताब النّकाह, الفصل الاول في الاسماء, १६/ १७०, حديث ४०२१३)

❁ रोज़े क़ियामत दो शख्स रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे, हुक्म होगा : इन्हें जन्नत में ले जाओ। अज़्र करेंगे : इलाही हम किस अमल पर जन्नत के क़ाबिल हुवे, हम ने तो जन्नत का कोई काम किया नहीं ? फ़रमाएगा : जन्नत में जाओ ! मैं ने हलफ़ किया है कि जिस का नाम अहमद या मुहम्मद हो, दोज़ख़ में न जाएगा।

(مسند الفردوس, २/ ५०३, حديث: ८०१०)

❁ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस का नाम तुम्हारे नाम पर होगा, उसे अज़ाब न दूंगा।

(كشف الخفاء, حرف الخاء, १/ ३४०, حديث: १२६३)

❁ जब कोई कौम किसी मश्वरे के लिये जम्अ हो और उन में कोई शख्स “मुहम्मद” नाम का हो और वोह उसे मश्वरे में शरीक न करें तो उन के लिये मुशावरत में बरकत न होगी ।

(الكامل فى ضعفاء الرجال ١٠/ ٢٧٥)

❁ जिस के तीन बेटे हों और वोह उन में से किसी का नाम मुहम्मद न रखे, वोह जरूर जाहिल है । (معجم كبير، ١١/ ٥٩، حديث: ١١٠٧٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

रिज़क में बरकत हो जाती

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِقِ फ़रमाते हैं : अहले मक्का आपस में येह गुफ्तगू किया करते थे कि जिस घर में भी मुहम्मद नाम का कोई फ़र्द होता है तो उस घर में ख़ैरो बरकत होती है और उन के रिज़क में क़षरत होती है ।

(المنتقى شرح مؤطا امام مالك، ٩/ ٤٥٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

लफ़्जे “मुहम्मद” के बारे में ईमान अफ़रोज़ मदनी फूल

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنّانِ तफ़्सीरे नईमी में लिखते हैं : लफ़्जे मुहम्मद के मा'ना हैं : हर तरह ता'रीफ़ किया हुवा, हर वक़्त, हर ज़माना, हर ज़बान में हम्दो षना किये हुवे, हकीकत येह है कि जैसे हुजूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम ख़लक़त से अफ़ज़ल, तमाम रसूलों के सरदार हैं इसी तरह हुजूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नाम शरीफ़ भी तमाम नबियों के नामों का सरदार है, इस नामे पाक के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, जिन में से चन्द येह हैं :

(1) इस नामे पाक को **अल्लाह** तआला के नाम या'नी लफ्जे "**अल्लाह**" से बहुत मुनासबत है, **अल्लाह** में हर्फ चार, चारों हर्फ नुक्तों से खाली हैं, इन में एक "शद् (و)" , दो "हरकतें", एक "सुकून (ـ)" है, इसी तरह लफ्ज "मुहम्मद" चार हुरूफ़, चारों हुरूफ़ नुक्तों से खाली, एक "शद् (و)", दो "हरकतें" एक "सुकून" ।

(2) लफ्जे "**अल्लाह**" बोलने से दोनों होंट जुदा हो जाते हैं, लफ्जे "मुहम्मद" कहते हैं तो दोनों लब मिल जाते हैं, कि वोह मख़्लूक़ को ख़ालिक़ से मिलाने ही तो आए हैं, अगर उन का वासिता न हो तो मख़्लूक़ ख़ालिक़ से बहुत दूर है ।

(3) लफ्जे "**अल्लाह**" अपनी दलालत में हर्फों का मोहताज नहीं, अगर अव्वल (या'नी शुरूअ) का अलिफ़ न रहे, तो "الله" बन जाता है, अगर अव्वल (या'नी शुरूअ) का लाम भी न रहे तो "ل" है, अगर दरमियान का अलिफ़ भी न हो तो "ا" है यूंही लफ्जे "मुहम्मद" दलालत में हर्फों का हाजत मन्द नहीं, अगर अव्वल (या'नी शुरूअ) की मीम अलग हो जाए तो "م" रहता है अगर "ح" भी उड़ जाए तो "م" है या'नी खींचना, मख़्लूक़ को खींच कर ख़ालिक़ तक पहुंचाना, अगर बीच की मीम भी न रहे तो "दाल" ब मा'ना रहबर ।

(4) सब के नाम इन के मां-बाप रखते हैं, लक़ब क़ौम देती है, ख़िताब हुकूमत से मिलता है, मगर हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के नाम, लक़ब व ख़िताब सब रब तआला की तरफ़ से हैं कि अब्दुल मुत्तलिब (**رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**) ने फिरिश्ते की बिशारत से येह नाम रखा ।

(5) दूसरों के नाम पैदाइश के सातवें दिन रखे जाते हैं, मगर हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नाम आलम की पैदाइश से पहले अर्शे आ'जम पर लिखा गया था और हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की विलादत से करीबन 600 बरस पहले अपनी कौम को फ़रमाया : إِسْمُهُ أَحْمَدُ उन का नामे पाक अहमद है, पिछली कौमें आप के नाम की बरकत से दुआएं मांगती थीं ।

(6) कोई शख्स आप को “मुहम्मद” कह कर बुरा नहीं कह सकता, अगर कहेगा तो खुद अपने मुंह से झूटा होगा कि उन्हें कहता तो है “मुहम्मद ” या’नी लाइके हम्द और करता है बुराइयां, इसी लिये कुफ़ारे मक्का ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नाम “मुजम्मम (مُذَمَّم)” रख कर आप की शाने अक़दस में बकवास बकी, हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : कि देखो हम को हमारे रब तआला ने इन कुफ़ार की गालियों से बचाया, ये लोग “मुजम्मम” को बुरा कहते हैं, होगा कोई “मुजम्मम” हम तो “मुहम्मद” हैं ।

(بخاری، کتاب المناقب، باب ماجاء فی اسماء رسول الله ﷺ، ٤٨٤/٤، حدیث: ٣٥٣٣)

(7) हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नाम “मुहम्मद” बहुत जामेअ हैं, जिस में हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान हो गए हैं, आदम के मा’ना हैं मिट्टी से पैदा होने वाले, इब्राहीम के मा’ना हैं “मेहरबान बाप, अबुरहीम”, नूह के मा’ना हैं “ख़ौफ़े खुदा से गिर्या व ज़ारी व नौहा करने वाले”, ईसा के मा’ना हैं “बहुत शरीफ़ुन्नफ़्स, करीमुत्तबअ”

इन तमाम नामों में एक एक वस्फ़ की तरफ़ इशारा है, मगर “मुहम्मद” के मा’ना हैं हर तरह हर वस्फ़ में बेहद ता’रीफ़ किये हुवे, इस में हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ला ता’दाद कमालात व खूबियों की तरफ़ इशारा हो गया ।

(8) लफ़ज़ “मुहम्मद” में ग़ैबी ख़बर भी है कि हमेशा या’नी दुन्या व आख़िरत में इन की हर जगह हर तरह हम्दो षना हुवा करेगी, इसी ख़बर की सदाक़त हम अपनी आंखों से देख रहे हैं कि आज भी हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बराबर किसी की ता’रीफ़ नहीं होती, बल्कि जो हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से वाबस्ता हो गए उन की भी ता’रीफ़ हो गई, फ़र्श पर इन की धूम, अर्श पर इन के चर्चे, आ’ला हज़रत (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ने क्या ख़ूब फ़रमाया :

अर्श पे ताज़ा छेड़ छड़ फ़र्श में तुरफ़ा धूम धाम

कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है

(9) जो अपने बेटे का नाम महब्बत में “मुहम्मद” रखे, **अल्लाह** तआला उस पर रहूम फ़रमाएगा कि मुझे ऐसे शख़्स को अज़ाब देते हुवे हया आती है जिस ने मेरे महबूब की महब्बत में अपने बेटे का नाम “मुहम्मद” रखा है ।

(तफ़्सीरे नईमी, 5/220 मुलख़ब़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“मुहम्मद” नाम रखा

कई सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ऐसे हैं जिन का नाम खुद सरकारे अबद करार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने “मुहम्मद” रखा, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन तलहा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ, उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह्श رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की बहन हज़रते सय्यिदतुना हम्ना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के साहिबज़ादे हैं। जब आप की विलादत हुई आप के वालिद हज़रते सय्यिदुना तलहा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आप को सरकारे अबद करार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास ले गए ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बच्चे को घुट्टी दें और इस का नाम रखें, प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने आप के सर पर हाथ फेरा और इन का नाम “मुहम्मद” रखा और अपनी कुन्यत “अबुल कासिम” अता फ़रमाई।

(اسد الغابة، १/१०، رقم: ४७३८، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
لडका पैदा होगा إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

हज़रते सय्यिदुना अबू शोएब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इमाम अता से रिवायत फ़रमाते हैं कि जो येह चाहे कि उस की औरत के हम्मल में लडका हो तो उसे चाहिये कि अपना हाथ औरत के पेट पर रख कर कहे إِنْ كَانَ ذَكَرًا فَقَدْ سَمِيَتْهُ مُحَمَّدًا या'नी अगर येह लडका हुवा तो मैं ने इस का नाम मुहम्मद रखा। إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ लडका होगा।

(फ़तावा रज़विय्या, 24/690)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बे अदबी न होने पाए

सदरुशरीआ, बदरुतरीका मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى लिखते हैं : मुहम्मद बहुत प्यारा नाम है, इस नाम की बड़ी ता'रीफ़ हदीषों में आई है। अगर तसगीर (या'नी नाम बिगड़ने) का अन्देशा न हो तो येह नाम रखा जाए और एक सूरत येह है कि अक़ीक़े का नाम येह हो और पुकारने के लिये कोई दूसरा नाम तजवीज़ कर लिया जाए ⁽¹⁾ और हिन्दुस्तान (पाक व हिन्द) में ऐसा बहुत होता है कि एक शख्स के कई नाम होते हैं इस सूरत में नाम की बरकत भी होगी और तसगीर से भी बच जाएंगे। (बहारे शरीअत, 3/356)

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का तरीक़ा का

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : फ़कीर غفر الله تعالى ने अपने सब बेटों भतीजों का अक़ीक़े में सिर्फ़ मुहम्मद नाम रखा फिर नामे अक़दस के हिफ़्ज़े आदाब और बाहम तमीज़ (या'नी पहचान) के लिये उर्फ़ जुदा मुक़र्रर किये। (फ़तावा रज़विय्या, 24/689)

आशिक़े आ'ला हज़रत की अदब

जब शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किसी का नाम रखने की दरख़्वास्त की जाती है तो उमूमन आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस बच्चे

لَدِينِهِ

①.....मषलन : बिलाल रज़ा, हिलाल रज़ा वगैरा

का नाम मुहम्मद और पुकारने के लिये उर्फ़ मषलन रजब रज़ा रखते हैं। नाम के साथ रज़ा का इज़ाफ़ा, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की निस्बत से करते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1000 डोलर इब्दा़ाम

एक अख़बारी इत्तिलाअ के मुताबिक़ नामे “मुहम्मद” के क़द्रदान एक मुसलमान हुक्मरान ने ए’लान किया है कि जो लोग अपने नौ मौलूद बच्चों के नाम नबिय्ये आखिरुज़्ज़मान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नामे नामी “मुहम्मद” के नाम पर रखेंगे उन्हें एक हजार डोलर का हदिय्या पेश किया जाएगा। जश्ने विलादते नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मौक़अ पर किये जाने वाले ए’लान में मुसलमान हुक्मरान ने कहा है कि एक हजार डोलर का हदिय्या वालिदा की तरफ़ से पेश किया जाएगा क्यूंकि येह ख़याल बुन्यादी तौर पर वालिदा ने ही पेश किया है। ए’लान में येह भी कहा गया है कि जो वालिदैन् अपनी बेटियों के नाम उम्महातुल मोअमिनीन् رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ के नामों पर रखेंगे उन को भी एक हजार डोलर हदिय्या पेश किया जाएगा। इस ए’लान पर उस मुल्क में रहने वाले मुसलमान ख़ानदानों में खुशगवार रद्दे अमल सामने आया है।

(जंग उर्दू ओन लाइन 16 जन्वरी 2014 बित्तसर्फ़ क़लील)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पुकारा जाने वाला नाम रखने की एक अहम उहतियात

ख़याल रहे कि पुकारने के लिये नाम ऐसा रखा जाए जिसे मुहम्मद के साथ मिला कर बोलने में बे अदबी वगैरा न हो, आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : फ़कीर कभी जाइज़ नहीं रखता कि कल्बे अली (अली का कुत्ता), कल्बे हुसैन, कल्बे हसन गुलाम अली, गुलामे हुसैन, गुलामे हसन, निषार हुसैन (हुसैन पर निषार होने वाला), फ़िदा हुसैन (हुसैन पर फ़िदा होने वाला) क़ुरबान हुसैन, गुलामे जीलानी (जीलानी का गुलाम) **وَأَمْثَالُ ذَلِكَ** के अस्मा (या'नी इसी तरह के दूसरे नामों) के साथ नामे पाक (या'नी मुहम्मद) मिला कर कहा जाए, **اللَّهُمَّ ارْزُقْنَا حَسَنَ الْأَدَبِ وَتَجَنَّبْنَا مِنْ مَوَرِثَاتِ الْغَضَبِ آمِينَ** (ऐ **अल्लाह !** हमें हुस्ने अदब से नवाज़ और अस्बाबे ग़ज़ब से बचा । आमीन । **ت**) (फ़तावा रज़विय्या, 24/683)

मुफ़्तिये आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ने इस्लाह फ़रमाई

सिराजुल अरिफ़ीन हज़रते अल्लामा मौलाना गुलामे आसी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** फ़रमाते हैं : मैं ने अपने नाम के शुरूअ में बरकत के लिये लफ़्ज़ “मुहम्मद” शामिल कर लिया था । इस पर शहज़ादए आ'ला हज़रत मुफ़्तिये आ'ज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ने तम्बीह फ़रमाई कि यहां इस्मे रिसालत (या'नी मुहम्मद) नहीं होना चाहिये । मैं ने फ़ौरन अर्ज़ किया कि, हुज़ूर फिर “मुहम्मद अब्दुल हय्य” का क्या हुक़म होगा ? इस के जवाब में हज़रत ने फ़रमाया : कुजा अब्दुल हय्य व कुजा गुलामे आसी

(या'नी कहां अब्दुल हय्य और कहां गुलामे आसी) ? अल्लामा फरमाते हैं : “येह जवाब सुन कर मैं हैरत ज़दा रह गया और हज़रत के तफ़क्कोह फ़िद्दीन की अज़मत दिल में ख़ूब ख़ूब रच बस गई।”

हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيم ने अपने इरशад से येह रहनुमाई फ़रमाई है कि जिस नाम के शुरूअ में लफ़्ज़ “मुहम्मद” लाया जाए, अगर उस नाम का इतलाक़ लफ़्ज़ “मुहम्मद” पर दुरुस्त हो तो वहां लफ़्ज़ “मुहम्मद” लाना दुरुस्त होगा (जैसे मुहम्मद सादिक) और अगर नाम का इतलाक़ लफ़्ज़ “मुहम्मद” पर दुरुस्त न हो तो वहां लफ़्ज़ “मुहम्मद” शुरूअ में लाना दुरुस्त न होगा (जैसे मुहम्मद गुलाम हुसैन)। हुज़ूर सय्यिदे अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अब्दुल हय्य⁽¹⁾ हैं लिहाज़ा मुहम्मद अब्दुल हय्य कहना दुरुस्त है लेकिन गुलामे आसी नहीं है, इस लिये “मुहम्मद गुलामे आसी (या'नी “आसी” का गुलाम)” कहना नामुनासिब है। (जहाने मुफ़्तिये आ'ज़म, स 451)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बेटे का नाम मुहम्मद रखो तो उस की इज़्ज़त करो

जब कोई शख्स अपने बेटे का नाम मुहम्मद रखे तो उसे चाहिये इस नामे पाक की निस्बत के सबब उस के साथ हुस्ने सुलूक करे और उस की इज़्ज़त करे। मौला मुशिकल कुशा हज़रते عليه

1या'नी **अल्लाह** के बन्दे हैं क्यूंकि “हय्य” **अल्लाह** तआला का सिफ़ाती नाम है

सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** से मरवी है कि नबिय्ये करीम रऊफुर्रहीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम बेटे का नाम **मुहम्मद** रखो तो उस की इज्जत करो और मजलिस में उस के लिये जगह कुशादा करो और उस की निस्बत बुराई की तरफ़ न करो । (الجامع الصغير، ص ९९، حديث: १०६) एक और हदीषे पाक में है कि रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जब लड़के का नाम **मुहम्मद** रखो तो उसे न मारो और न महरूम करो । (مسند البزار، ९/३२७، حديث: ३८८३)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नाम बदल दिया

एक शख्स का नाम **मुहम्मद** था हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने देखा कि एक आदमी उस को गाली दे रहा है, बुला कर कहा कि देखो तुम्हारी वजह से **मुहम्मद** को गाली दी जा रही है, अब ता दमे मर्ग (या'नी अपनी मौत तक) तुम इस नाम से पुकारे नहीं जा सकते, चुनान्चे, उसी वक़्त उस का नाम अब्दुर्रहमान रख दिया गया । फिर बनू तल्हा के पास पैग़ाम भेजा जो लोग इस नाम के हों उन के नाम बदल दिये जाएं । इत्तिफ़ाक़ से वोह लोग सात आदमी थे और उन के सरदार का नाम भी **मुहम्मद** था । उस ने कहा : खुद रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ही ने मेरा नाम **मुहम्मद** रखा है । बोले : अब मेरा इस पर कोई ज़ोर नहीं चल सकता । (المسند للإمام أحمد بن حنبل، ६/२६७، حديث: १७९१، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मैं बे वुजू था

सुल्तान महमूद गज़नवी ने एक बार अय्याज के बेटे को पुकारा : ऐ अय्याज के बेटे ! इस्तिन्जे के लिये पानी ला । अय्याज ने थोड़े दिनों बा'द अर्ज की, कि हुजूर ! मुझ से या उस से (या'नी मेरे बेटे से) क्या कुसूर हुवा कि आप ने उस का नाम न लिया ? फ़रमाया : तेरे बेटे का नाम मुहम्मद है, मैं उस दिन बे वुजू था, मैं ने कभी बिगैर वुजू नामे मुहम्मद को अपनी ज़बान से अदा न किया ।

هزار بار بشویم دهن بَمَشك و گلاب !

هُنوز نام تو گُفتن کمالِ بے ادبی اُسْت

(या'नी : मैं अपने मुंह को हजार बार मुश्को गुलाब से धोऊं तब भी आप का नाम लेना बे अदबी है)

(तफ़सीरे नईमी, 4/221)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐसी शूरत में “मुहम्मद” पर दुश्दे पाक नहीं लिखा जाएगा

अगर किसी शख्स का नाम मुहम्मद हो तो बा'ज कम इल्म लोग उस का नाम लिखते हुवे नाम के साथ दुरूद **“صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم”** लिखते हैं या फिर “وَم” या “صَلَّم” वगैरा लिख देते हैं, यहां पर चूंकि रसूले करीम **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ज़ात मुराद नहीं होती इस लिये दुरूदे पाक न लिखा जाए और न ही कोई अ़लामत “وَم” या “صَلَّم” वगैरा लिखें बल्कि जहां सरकारे मदीना **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का नामे अक्दस लिखें तो मुकम्मल

दुरुद (मषलन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**) लिखिये “**م**” या “**ص**”
 वगैरा की अ़लामत नामे मुबारक के साथ लिखना भी नाजाइज़ व
 ह़राम है। दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना
 की मतबूअा **1554** सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “**बहारे शरीअत**
 (जिल्द **1**)” के सफ़्हा **77** पर है : नामे पाक लिखे तो उस के
 बा’द **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** लिखे, बा’ज़ लोग बराहे इख़्तिसार “**ص**”
 या “**م**” लिखते हैं, येह महूज़ नाजाइज़ व ह़राम है।

(बहारे शरीअत, **1/77**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد
“मुहम्मद नबी, अहमद नबी” नाम न रखा जाए

मुहम्मद नबी, अहमद नबी, मुहम्मद रसूल, अहमद रसूल,
 नबिय्युज्ज़मान नाम रखना भी नाजाइज़ है, बल्कि बा’ज़ का नाम
 नबिय्युल्लाह भी सुना गया है, ग़ैरे नबी को नबी कहना हरगिज़
 हरगिज़ जाइज़ नहीं हो सकता।

तम्बीह : अगर कोई येह कहे कि नामों में अस्ली मा’ना का
 लिहाज़ नहीं होता, बल्कि यहां तो येह शख़्स मुराद है उस का
 जवाब येह है कि अगर ऐसा होता तो शैतान इब्लीस वगैरा इस
 क़िस्म के नामों से लोग गु़रैज़ न करते और नामों में अच्छे और बुरे
 नामों की दो क़िस्में न होतीं और ह़दीष में न फ़रमाया जाता कि अच्छे
 नाम रखो, नीज़ हुज़ूरे अक़्दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने बुरे नामों को
 बदला न होता कि जब इस अस्ली मा’ना का बिल्कुल लिहाज़ नहीं
 तो बदलने की क्या वजह?

(बहारे शरीअत, **3/605**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

“मुहम्मद बख़्श, अहमद बख़्श” नाम रखना जाइज़ है

मुहम्मद बख़्श, अहमद बख़्श, नबी बख़्श, पीर बख़्श, अली बख़्श, हुसैन बख़्श और इसी किस्म के दूसरे नाम जिन में किसी नबी या वली के नाम के साथ बख़्श का लफ़्ज़ मिला कर नाम रखा गया हो जाइज़ है। (बहारे शरीअत, 3/604)

“गुलामे मुहम्मद, गुलामे सिद्दीक़” नाम रखना जाइज़ है

गुलामे मुहम्मद, गुलामे सिद्दीक़, गुलामे फ़ारूक़, गुलामे अली, गुलामे हसन, गुलामे हुसैन वगैरा अस्मा जिन में अम्बिया व सहाबा व औलिया के नामों की तरफ़ गुलाम की इजाफ़त कर के नाम रखा जाए येह जाइज़ है इस के अदमे जवाज़ की कोई वजह नहीं। (बहारे शरीअत, 3/604)

“अब्दुल मुस्तफ़ा, अब्दुन्नबी” नाम रखना जाइज़ है

अब्दुल मुस्तफ़ा, अब्दुन्नबी, अब्दुरसूल नाम रखना जाइज़ है कि इस निस्बत की शराफ़त मक़सूद है और अबूदिय्यत के हकीकी मा'ना यहां मक़सूद नहीं है। रही अब्द की इजाफ़त ग़ैरुल्लाह की तरफ़ येह कुरआनो हदीष से षाबित है।⁽¹⁾ (बहारे शरीअत, 3/604) इसी तरह अब्दुल जमाल और अब्दुरफ़ीक़ नाम रखना भी जाइज़ है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سَلَامٌ

①.....इस हवाले से तफ़सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज्विय्या जिल्द 24 सफ़हा 666 ता 669 और 671 का मुतालआ कीजिये।

“यासीन, ताहा” नाम रखना मन्झ है

ताहा, यासीन नाम भी न रखे जाएं कि येह मुक़त्तआते कुरआनिय्या से हैं जिन के मा'ना मा'लूम नहीं ज़ाहिर येह है कि येह अस्माए नबी **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से हैं और बा'ज़ उ-लमा ने अस्माए इलाहिय्या से कहा। बहर हाल जब मा'ना मा'लूम नहीं तो हो सकता है कि इस के ऐसे मा'ना हों जो हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** या **अब्बाह** तआला के साथ खास हों और इन नामों के साथ मुहम्मद मिला कर “मुहम्मद ताहा”, “मुहम्मद यासीन” कहना भी मुमानअत को दफ़अ (या'नी दूर) न करेगा।

(बहारे शरीअत, 3/605)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“ग़फ़रुद्दीन” नाम रखना मन्झ है

ग़फ़रुद्दीन (नाम) भी सख़्त क़बीह व शनीअ है, ग़फ़ूर के मा'ना मिटाने वाला, छुपाने वाला, **عَزَّوَجَلَّ** ग़फ़ूरे जुनूब है या'नी अपनी रहमत से अपने बन्दों के जुनूब (या'नी गुनाह) मिटाता उयूब छुपाता है, तो ग़फ़ूरुद्दीन के मा'ना हुवे दीन का मिटाने वाला।

(फ़तावा रज़विय्या, 24/681)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

किसी बुजुर्ग को कय्यूमे ज़मां कहना कैसा ?

सुवाल : किसी का नाम अब्दुल कय्यूम हो उस को कय्यूम कह कर पुकारना कैसा ? इसी तरह किसी बुजुर्ग को “कय्यूमे जहां या कय्यूमे ज़मां” कह सकते हैं या नहीं ?

जवाब : ऐसा कहना सख्त हुराम है। बा'ज फुकहाए किराम

رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام के नजदीक बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मख्सूस नामों

जैसे कय्यूम, कुद्दूस या रहमान कह कर पुकारना कुफ़्र है। “कय्यूमे

जहां” या “कय्यूमे ज़मां” कहने का एक ही हुक्म है। चुनान्वे, मेरे

आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़तावा रज़विय्या जिल्द 15

सफ़हा 280 पर फ़रमाते हैं : फुकहाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام ने

“कय्यूमे जहां” ग़ैरे खुदा को कहने पर तकफ़ीर फ़रमाई। मजमउल

अन्हुर में है : “अगर कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अस्माए मुख़तस्सा

(या'नी मख्सूस नामों) में से किसी नाम का इतलाक़ मख़्लूक़ पर करे

जैसे इसे (या'नी मख़्लूक़ के किसी फ़र्द को) कुद्दूस, कय्यूम या

रहमान कहे तो यह कुफ़्र हो जाएगा।” (مجمع الأنهر، ٢٠ / ٥٠٤) وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

आदमी को कय्यूम, कुद्दूस और रहमान कह कर न पुकारिये

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते

इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास

अतार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ अपनी किताब “कुफ़रिय्या

कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” के सफ़हा 591 पर

मज़कूरए बाला सुवाल जवाब के बा'द लिखते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त ताकीद है कि

किसी भी शख्स को रहमान, कय्यूम और कुद्दूस वगैरा मत

कहिये बल्कि आदत बनाइये कि जिस का नाम **अल्लाह** के

किसी नाम में “अब्द” की इज़ाफ़त के साथ हो मषलन जिन

का नाम अब्दुल मजीद या अब्दुल करीम वगैरा हो उन को मजीद

या करीम कह कर ना पुकारें, इस में से “अब्द” ख़ारिज न करें, हां ! ग़ैरे खुदा को “मजीद” या “करीम” कहना **कुफ़्र** नहीं ।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 591)

अब्दुल क़ादिर को क़ादिर कहना कैसा ?

सुवाल : अब्दुल क़ादिर, अब्दुल क़दीर, अब्दुर्रज़ाक़ वग़ैरा नाम वाले अफ़राद को क़ादिर, क़दीर और रज़ाक़ कह कर पुकारना कैसा है ?

जवाब : इस तरह के एक सुवाल का जवाब देते हुवे शहज़ादए आ'ला हज़रत **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'जमे हिन्द** मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ऐसे नामों से लफ़्ज़े अब्द का हज़फ़ (या'नी अलग कर देना) बहुत बुरा है और कभी नाजाइज़ व गुनाह होता है और कभी सरहदे कुफ़्र तक भी पहुंचता है । **क़ादिर** का इतलाक़ तो ग़ैर पर जाइज़ है, इस सूरत में अब्दुल क़ादिर को **क़ादिर** कह कर पुकारना बुरा है मगर **क़दीर** का इतलाक़ ग़ैरे खुदा पर नाजाइज़ । **كَمَافِي الْبَيِّنَاتِ** (जैसा कि बैज़ावी में है) और अगर किसी का नाम अब्दुल कुहुस, अब्दुर्रहमान, अब्दुल क़य्यूम है तो उसे **कुहुस**, **रहमान**, **क़य्यूम** कहना ऐसा ही है जैसे उसे (कि) जिस का नाम अब्दुल्लाह हो (उस को) **“अब्बाह”** कहना बहुत सख़्त बात है । **وَالْعِيَادُ بِاللَّهِ تَعَالَى** जिस का नाम अब्दुल क़ादिर हो उसे भी अब्दुल क़ादिर ही कहा जाए, जिस का अब्दुल क़दीर उसे अब्दुल क़दीर ही कहना ज़रूर है । अब्दुर्रज़ाक़ को अब्दुर्रज़ाक़, अब्दुल मुक्तादिर को अब्दुल मुक्तादिर । ग़ैर पर इतलाके क़दीर व मुक्तादिर (या'नी **عَزَّوَجَلَّ** **अब्बाह** के इलावा किसी ग़ैर

को कदीर और मुक्तदिर कह सकते हैं या नहीं इस मस्अले) में

उ-लमा का इख़िलाफ़ है। كَمَا فِي غَايَةِ الْقَاضِي حَاشِيَةِ شَرْحِ الْبَيْضَاوَى

(फ़तावा मुस्त्फ़विय्या, स. 89-90)

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 593)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“अब्दुल कय्यूम” नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा अब्दुल कय्यूम अज़दी
 رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने आका अबू राशिद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ बनू
 अज़्द के वफ़्द के हमराह नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की
 खिदमत में आए, बेचैन दिलों के चैन, रहमते दारैन
 رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अबू राशिद से पूछा : तुम्हारा नाम क्या है ?
 बोले : अब्दुल उज़्ज़ा अबू मुग़विय्या। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने
 फ़रमाया : तुम “अब्दुरहमान अबू राशिद” हो। फिर इरशाद
 फ़रमाया : येह तुम्हारे साथ कौन है ? अर्ज की : मेरा गुलाम।
 फ़रमाया : इस का नाम क्या है ? अर्ज किया : कय्यूम (हमेशा
 काइम रहने वाला)। इरशाद फ़रमाया : “येह अब्दुल कय्यूम
 (हमेशा काइम रहने वाले का बन्दा) है।” (اسد الغابة، ३/५०२، رقم: ३६२१)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बुजुर्गाने दीन से नाम रखवाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुजुर्गाने दीन से बच्चों का
 नाम रखवाना बाइषे खैरो बरकत होता है, दौरे रिसालत सरापा
 बरकत में सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ का मा'मूल था कि जब उन
 के घर कोई बच्चा पैदा होता तो येह उसे रहमते आलम, नूरे

मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में लाते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उस के लिये दुआ करते, नाम रखते और बसा अवकात उसे घुट्टी भी देते, चुनान्चे, उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि लोग अपने बच्चों को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे अक्दस में लाया करते थे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उन के लिये खैरो बरकत की दुआ फ़रमाते और तहनीक फ़रमाया (या'नी घुट्टी दिया) करते थे ।

(مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تحنيك، ص ۱۸۴، حدیث: ۲۱۴۷)

ऐसी ही चन्द रिवायात मुलाहज़ा हों :

﴿1﴾ बच्चे का नाम “अब्दुल्लाह” रखा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि जब हज़रते अबू तलहा अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बेटे अब्दुल्लाह (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) पैदा हुवे तो मैं उसे ले कर खातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुवा, उस वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ चादर ओढ़े हुवे अपने ऊंट को रोगन मल रहे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास खजूरें हैं ? मैं ने अर्ज़ की : जी हां । फिर मैं ने कुछ खजूरें निकाल कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में पेश कीं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने वोह खजूरें अपने मुबारक मुंह में डाल कर चबाई और बच्चे का मुंह खोल कर उस के मुंह में डाल दीं, वोह बच्चा उसे चूसने लगा ।

फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : “अन्सार को खजूरों के साथ महबूबत है।” और उस बच्चे का नाम अब्दुल्लाह रखा। (مسلم: کتاب الادب، باب استحباب تحنیک المولود.... الخ، ص ۱۱۸۳، حدیث: ۲۱۴۴)

﴿2﴾ “इब्राहीम” नाम रखा

हजरते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मेरे हां लड़का पैदा हुवा, मैं उस को ले कर अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब ﷺ की बारगाह में हाजिर हुवा, आप ﷺ ने उस का नाम “इब्राहीम” रखा और उसे खजूर से घुट्टी दी।

(مسلم: کتاب الادب، باب استحباب تحنیک المولود.... الخ، ص ۱۱۸۴، حدیث: ۲۱۴۵)

﴿3﴾ “अब्दुल मलिक” नाम रखा

हजरते सय्यिदुना नुबैत बिन जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हां बच्चा पैदा हुवा। वोह उसे ले कर नबिय्ये करीम ﷺ के पास आए और अर्ज की : “या रसूलुल्लाह ﷺ आप इस का नाम रखें।” तो आप ﷺ ने उस का नाम अब्दुल मलिक रखा और उस के लिये बरकत की दुआ की।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، ۸/۳۲۵، رقم: ۴۵۸۵)

﴿4﴾ “सिनान” नाम रखा

हजरते सय्यिदुना अबू अब्दुर्रहमान सिनान बिन सलमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं : मैं ग़ज़वए हुनैन के दिन पैदा हुवा, मेरे वालिद को मेरी विलादत की खुश ख़बरी सुनाई गई तो उन्हों

ने कहा : महबूबे रब्बुल इज्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के दफ़ाअ में तीर चलाना मुझे बेटे की खुश ख़बरी से ज़ियादा महबूब है। (مسند امام احمد بن حنبل، ٢٤٦/٧، حديث: ٢٠٠٩٣)।
फिर मेरे वालिद मुझे जनाबे रहूमतुल्लिल आलमीन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के पास लाए, आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने मुझे घुट्टी दी, मेरे मुंह में लुआबे दहन डाला, मेरे लिये दुआ की और मेरा नाम “सिनान (या’नी नेजे की नोक)” रखा।

(الاستيعاب، ٢١٧/٢، رقم: ١٠٧٦)

﴿5﴾ “मुसरिअ” नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना मुसरिअ बिन यासिर जुहनी **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** के वालिद हज़रते सय्यिदुना यासिर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** को किसी सरिय्या (1) में भेजा गया, उसी दौरान हज़रते सय्यिदुना मुसरिअ की विलादत हुई, उन की वालिदा बच्चे को नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ख़िदमत में लाई और अर्ज की :
या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे हां बच्चा पैदा हुवा है और इस के वालिद लश्कर के साथ हैं, आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** इस का नाम रखें, हुज़ूरे अक्दस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने बच्चे को लिया,
لَدَيْنَا

① ... वोह जंगी लश्कर जिस में हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ब नफ़से नफ़ीस शामिल हुवे उसे “ग़ज़वा” और जिस में लश्कर रवाना फ़रमाया मगर खुद शामिल न हुवे उसे “सरिय्या” कहते हैं।

(सीरते रसूले अरबी, स. 127 मुख़ब़सन)

उस पर हाथ फेरा और दुआ दी : ऐ **अल्लाह** ! इन के मर्दों को कषरत अता फ़रमा, इन के गुनाहों को कमतर फ़रमा, इन को किसी का मोहताज न कर, फिर इरशाद फ़रमाया : मैं ने इस का नाम मुसरिअ (जल्दी करने वाला) रखा है इस ने इस्लाम में जल्दी की है ।

(اسد الغابة ٥/١٦٤، رقم: ٤٨٦١، والاصابة ٦/٥٠١، رقم: ٩٢٣١)

«6» “यहूया” नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन खल्लाद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की विलादत हुजुरे अक़दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के अहद में हुई, नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में लाए गए, आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने खजूर चबा कर घुट्टी दी और फ़रमाया : मैं इस का वोह नाम रखूंगा जो हज़रते यहूया बिन ज़करिय्या (**عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام**) के बा'द किसी का नहीं रखा गया, फिर आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन का नाम यहूया रखा ।

(اسد الغابة ٥/٤٨٦، رقم: ٥٥٠०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते सय्यिदुना यहूया **عَلَيْهِ السَّلَام का नाम किस ने रखा ?**

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने फ़िब्लए अव्वल में दुआ करने वाले अजीमुल क़द्र उम्र रसीदा पैग़म्बर हज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या **عَلَيْهِ السَّلَام** की दुआ को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शते हुवे न सिर्फ़ इन को बेटे की बिशारत दी बल्कि इन का नाम यहूया **عَلَيْهِ السَّلَام** भी खुद अता फ़रमाया और इरशाद हुवा :

يُزَكِّرِيَا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِعِلْمِ اسْمِهِ
يَحْيَى لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ
سَيِّئًا ﴿٧﴾ (پ ۶۱ مريم: ۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ
ज़करिय्या हम तुझे खुशी सुनाते हैं
एक लड़के की जिन का नाम यह्या
है इस के पहले हम ने इस नाम का
कोई न किया ।

अल्लाह ﷻ की इन पर रहमत हो और इन के सद्के हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ
﴿7﴾ “मरयम” नाम अता फ़रमाया

हज़रते सय्यिदुना अबू मरयम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं
ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर
अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज रात मेरे हां
बच्ची की विलादत हुई है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :
आज रात मुझ पर सूरए मरयम नाज़िल हुई है, फिर आप
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी बेटी का नाम मरयम रख दिया और
मेरी कुन्यत “अबू मरयम” रखी । (اسد الغابة ۶/۳۰۰، رقم: ۶۲۴۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ
पीर ख़ाने से नाम अता हुवा

आ’ला हज़रत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن
के घर जब आप के छोटे शहज़ादे मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान (मुफ़्तिये
आ’ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ) की विलादत हुई तो आप उस वक़्त
अपने मुर्शिद ख़ाने में थे । हज़रते अबुल हुसैन नूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی
ने आप को पैदाइशे फ़रज़न्द की मुबारक बाद दी और फ़रमाया :
आप बरेली तशरीफ़ ले जाएं । और “अबू बरकात मुह्युद्दीन

जीलानी” नाम तजवीज़ फ़रमाया। कुछ दिन बा’द हज़रते नूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي बरेली तशरीफ़ लाए तो शहज़ादए आ’ला हज़रत को आग़ोशे नूरी में डाल दिया गया। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी अंगुशते मुबारक मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुंह में रख कर क़ादिरि व बरकाती बरकात से ऐसा माला माल कर दिया कि येही शहज़ादे बड़े हो कर मुफ़्तये आ’ज़मे हिन्द बने। (तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, 2/447, मुलख़ब़सन) हज़रते मुफ़्तये आ’ज़मे हिन्द का पैदाइशी और असली नाम **मुहम्मद** है, वालिदे माजिद आ’ला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने उर्फ़ी नाम मुस्तफ़ा रज़ा रखा, येह उर्फ़ी नाम इस क़दर मशहूर हुवा कि ख़ासो आ़म में आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को इसी नाम से याद किया जाता है।

(जहाने मुफ़्तये आ’ज़म, स. 102)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

लोगों के बुरे नाम रखना

मेरे आक़ा आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़तावा रज़विyyा जिल्द 23 सफ़्हा 204 पर लिखते हैं : किसी मुसलमान बल्कि काफ़िरे ज़िम्मी⁽¹⁾ को भी बिला हाज़ते शरइय्या ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारना या ता’बीर करना जिस से उस की दिल शिकनी हो उसे ईज़ा पहुंचे, शरअन नाजाइज़ व ह़राम है। अगर्चे बात फ़ी नफ़्सिही सच्ची हो, **فَإِنَّ كُلَّ حَقٍّ صِدْقٌ وَلَيْسَ كُلُّ صِدْقٍ حَقًّا** (हर हक़ सच है मगर हर सच हक़ नहीं) (फ़तावा रज़विyyा, 23/204)

لَدِينِهِ

①अब दुन्या में तमाम काफ़िर हर्बी हैं।

(गीबत की तबाहकारिया, स. 242)

लिहाजा जिस का जो नाम हो उस को उसी नाम से पुकारना चाहिये, अपनी तरफ से किसी का उल्टा सीधा नाम मषलन लम्बू, ठिंगू, कालू वगैरा न रखा जाए, उमूमन इस तरह के नामों से दिल आज़ारी होती है और वोह इस से चिड़ता भी है लेकिन पुकारने वाला जान बूझ कर बार बार मज़ा लेने के लिये उसे इसी नाम से पुकारता है, ऐसा करने वालों को संभल जाना चाहिये क्यूंकि रब तअ़ला फ़रमाता है :

وَلَا تَتَّخِذُوا بِأِلَاقَابٍ ط
بُئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ
الْإِيمَانِ ع (پ ۲۶، المجرات: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक कहलाना ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** इस आयत के तहत लिखते हैं : (या'नी वोह नाम) जो उन्हें नागवार मा'लूम हों । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो उस को बा'दे तौबा इस बुराई से आर दिलाना भी इस नहय (या'नी मुमानअत के हुक्म) में दाख़िल और ममनूअ है । बा'ज उ-लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुवर कहना भी इसी में दाख़िल है । बा'ज उ-लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्काब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उस को नागवार

हो लेकिन ता'रीफ़ के अल्काब जो सच्चे हों ममनूअ नहीं जैसे कि हज़रते अबू बक्र का लक़ब अतीक़ (जहन्नम से आज़ाद) और

हज़रते उमर का फ़रूक़ (हक़ और बातिल में फ़र्क़ करने वाला) और हज़रते उषमाने ग़नी का जुन्नूरैन (दो नूरों वाला) और हज़रते अली का अबू तुराब (मिट्टी वाला) और हज़रते ख़ालिद का सैफुल्लाह (अल्लाह की तलवार) और जो अल्काब ब मन्ज़िलए अलम (या'नी नाम के मरतबे में) हो गए और साहिबे अल्काब को नागवार नहीं वोह अल्काब भी ममनूअ नहीं जैसे कि आ'मश (कमज़ोर निगाह वाला), आ'रज (लंगड़ा) । ("क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना" के तहत सदरुल अफ़ज़िल लिखते हैं) तो ऐ मुसलमानो ! किसी मुसलमान की हंसी बना कर या उस को ऐब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 950)

फ़िरिशते ला'नत करते हैं

हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिस ने किसी शख़्स को उस के नाम के इलावा नाम से बुलाया उस पर फ़िरिशते ला'नत करते हैं । (२०११२: २३/७, جمع الجوامع) या'नी किसी बुरे लक़ब से जो उसे बुरा लगे, न कि ऐ बन्दए खुदा ! वग़ैरा से ।

(التيسير شرح الجامع الصغير، حرف الميم، تحت الحديث: २०११२, २३/७)

किसी को बे तुकूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ से

सुवाल हुवा : जो शख्स किसी अ़लम की निस्बत या किसी दूसरे की लफ़्ज़ मरदूद कहे या यूं कहे कि वोह “बे वुकूफ़” है, कुछ नहीं जानता और “उल्लू” है, तो उस शख्स की निस्बत शरअ़ शरीफ़ क्या हुक्म देगी ? आ’ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने **जवाब** दिया : बिला वजहे शरई किसी मुसलमान को ऐसे अल्फ़ाज़ से याद करना मुसलमान को नाहक़ ईज़ा देना है और मुसलमान की नाहक़ ईज़ा शरअ़न हराम । **रसूलुल्लाह**

مَنْ أَذَى مُسْلِمًا فَقَدْ أَذَى أَدَايَ وَمَنْ أَذَى فَقَدْ أَذَى اللَّهِ : **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** (**رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ فِي الْأَوْسَطِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ بِسَنَدٍ حَسَنٍ**)

जिस ने बिला वजहे शरई किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे इज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** को ईज़ा दी । (**المعجم الاوسط، ३८७/२، حديث: ३६०७**) फिर उ-लमाए दीने मतीन की शान तो निहायत अरफ़ओ आ’ला है उन की जनाब में गुस्ताख़ी करने वाले को हदीष में मुनाफ़िक़ फ़रमाया :

ثَلَاثَةٌ لَا يَسْتَحِفُّ بِحَقِّهِمُ الْأَمَانَةُ ذُو الشَّيْبَةِ فِي الْإِسْلَامِ وَذُو الْعِلْمِ وَإِمَامٌ مُقْسِطٌ رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ فِي الْكَبِيرِ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ وَأَبِي الشَّيْخِ فِي التَّوْبِيخِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या’नी सय्यिदे अ़लम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** फ़रमाते हैं : तीन शख्स हैं जिन का हक़ हलका न जानेगा मगर मुनाफ़िक़, (एक) इस्लाम में बुढ़ापे वाला (दूसरा) अ़लम (तीसरा) बादशाहे इस्लाम अ़दिल । (**المعجم الكبير، २०२/८، حديث: ७८१**) ऐसा शख्स शरअ़न लाइके ता’जीर है ।

وَاللَّهُ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى أَعْلَمُ وَعِلْمُهُ جَلٌّ مَجْدُهُ أَمْرٌ وَاحِدٌ (**फ़तावा रज़विय्या, 13/644**)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

महब्बत भरे नाम से पुकारना

बसा अवकात हमारे मीठे मीठे मदनी आका

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان या अज़वाजे मुतहहरात
رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ के नामों को मुख़्तसर या तसगीर (छोटे) कर के
महब्बत भरे अन्दाज़ से पुकारते, इस की चन्द मिषालें मुलाहज़ा
फ़रमाएं :

❀ हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को या उषैम
(مسند احمد، १०/१०، حديث: २६१९) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ
को या उनैस (مسلم، ص १२६६، حديث: २३०९) और या ज़ल उजुनैन (ऐ दो
कानों वाले) (ترمذی، ३/३९९، حديث: १९९८) ❀ हज़रते सय्यिदुना जाबिर
رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को या जुवैबर (جمع الجوامع، १४/२०८، حديث: १०१८९) और या
जुबैर (جمع الجوامع، १४/२०९، حديث: १०२००) ❀ हज़रते सय्यिदुना मिक्दाम
رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को या कुदैम (ابی داؤد، ३/१८३، حديث: २९३३) ❀ हज़रते
सय्यिदुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को या आइश
(بخاری، २/५०१، حديث: ३७६८) और शुक़्ैरा (गहरे भूरे रंग वाली)
(جمع الجوامع، ३/१३०، حديث: ७८२३) और हुमैरा (सुख़ रंग वाली)
(جمع الجوامع، ५/४४०، حديث: १६३८) ! और या उवैश (الطبقات ابن سعد، ८/६३-६४، رقم: ४१२८)
❀ हज़रते सय्यिदुना ज़ैनब बन्ते उम्मे सलमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को
या जुवैनब (جمع الجوامع، ५/४८९، حديث: १६८३०) कह कर पुकारा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेहन में रहे कि हमें
इस सिलसिले में बहुत एहतियात की ज़रूरत है कि कहीं वोह
नाम जिसे हम महब्बत भरा समझ रहे हों सामने वाले को
पसन्द न हो मगर वोह अदब व मरुव्वत की वजह से कुछ कहने

की हिम्मत न रखता हो और बसा अवकात हमारा अन्दाज़ दिल आज़ारी का भी सबब बन सकता है लिहाज़ा एहतिyात का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَیْ مُحَمَّدٍ

तुम “सफ़ीना” हो

हज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं : मैं एक सफ़र में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ था । सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ में से जब कोई थकता अपनी तल्वार, ढाल और तीर मुझ पर डाल देता यहां तक कि मुझ पर बहुत सा सामान जम्अ हो गया, राहते क़ल्बे नाशाद, महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे देखा तो इरशाद फ़रमाया : तुम सफ़ीना (जहाज़) हो । उस रोज़ अगर मैं एक, दो, तीन, चार, पांच, छे, सात ऊंटों का बोझ भी उठा लेता तो मुझ पर भारी न होता । जब आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से आप का नाम पूछा जाता तो कहते : मैं बिल्कुल नहीं बताऊंगा, मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरा लक़ब सफ़ीना रखा है ।

(مسند امام احمد، مسند الانصار حديث ابى عبدالرحمن سفينة ٢١٥/٨٠، حديث: ٢١٩٨٤، ٢١٩٨٧، ٢١٩٨٧ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَیْ مُحَمَّدٍ

लक़ब किसे कहते हैं ?

नाम के इलावा ऐसे लफ़ज़ से किसी को पुकारना लक़ब कहलाता है जिस में ता'रीफ़ व बुराई का कोई ख़ास मा'ना हो ।

(التعريفات للجرجاني، ص ١٣٦) येह उमूमन अहले महब्बत या दुश्मनों की तरफ़ से दिया जाता है, खुद नहीं रखा जाता ।

मुख्तलिफ बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ تَعَالَى के अल्काबात इसी किताब के सफ़हा 166 पर मौजूद हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

तख़ल्लुस की ता'रीफ़

शाइर का वोह मुख़्तसर नाम तख़ल्लुस कहलाता है जो अश्शर में इस्ति'माल होता है, येह उमूमन कलाम के आखिरी शे'र में आता है।

12 अक्काबिरीने अहले सुन्नत के तख़ल्लुस

इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	रज़ा
उस्ताजे ज़मन हज़रते मौलाना हसन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	हसन
हज़रते मौलाना किफ़ायतुल्लाह काफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	काफ़ी
आ'ला हज़रत के ज़दे अमजद के शागिर्द मौलाना मुहम्मद हसन इल्मी बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	इल्मी
मुफ़्तये आ'ज़मे हिन्द हज़रते मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	नूरी
हुज्जतुल इस्लाम हज़रते मौलाना हामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	हामिद
मद्दाहुल हबीब हज़रते मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	जमील
सदरुल अफ़ज़िल हज़रते मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی	नईम
हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	सालिक
वालदे सदरुल अफ़ज़िल हज़रते मौलाना सय्यिद मुईनुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَمِیْن	नुज्हत
अमीरे अहले सुन्नत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ	अत्तार
शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی	आ'ज़मी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

महब्बत बढ़ाने का सबब

हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन त़लहा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि नबिय्ये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : तीन चीज़ें तुम्हारे भाई के दिल में तुम्हारी सच्ची महब्बत का बाइष बनेंगी : **﴿1﴾** जब तुम उसे मिलो तो सलाम करो **﴿2﴾** मजलिस में उस के लिये फ़राख़ी और वुस्अत पैदा करो, और **﴿3﴾** उसे उस के पसन्दीदा नाम से बुलाओ ।

(جمع الجوامع، १/४१، १/४१، १/४१، १/४१)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अच्छे नाम और कुन्यत से पुकारो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम में जिस तरह एक मुसलमान के लिये नाम की अहम्मिय्यत है और अच्छे नाम रखने का हुक्म दिया गया है इसी तरह कुन्यत भी अहम्मिय्यत की हामिल है और मुसलमान को कुन्यत से पुकारने की तरगीब दिलाई गई है, चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला बिन हिज़यम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं : महबूबे रब्बे जुल जलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस बात को पसन्द फ़रमाते थे कि किसी शख्स को उस के महबूब नाम और कुन्यत से बुलाया जाए ।

(جمع الجوامع، १/४१-४२-४३-४४-४५-४६-४७-४८-४९-५०-५१-५२-५३-५४-५५-५६-५७-५८-५९-६०-६१-६२-६३-६४-६५-६६-६७-६८-६९-७०-७१-७२-७३-७४-७५-७६-७७-७८-७९-८०-८१-८२-८३-८४-८५-८६-८७-८८-८९-९०-९१-९२-९३-९४-९५-९६-९७-९८-९९-१००)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुन्यत किसे कहते हैं ?

الْكُنْيَةُ مَا صَدَرَ بِأَبٍ أَوْ بِأُمٍّ أَوْ بِإِنٍّ أَوْ بِأَيْمٍ

“अब, उम, इब्ने या इब्नत” से शुरू हो । (التعريفات، ص १३२)

मषलन अबुल कासिम, अबू बिलाल, अबू रजब और इब्ने अहमद वगैरा

कुन्यत में “अबू” के मा’ना

मर्द की कुन्यत में “अबू” का लफ़्ज़ आता है, अगर्चे “अब” का लुग़वी मा’ना बाप है लेकिन कुन्यत में हर जगह “अबू” से मुराद बाप नहीं होता, चुनान्वे, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : कुन्यत में “अबू” आता है इस के मा’ना हर जगह वालिद नहीं होते हैं बल्कि अकषर जगह इस के मा’ना होते हैं : “वाला” । जैसे “अबू जहल” या’नी जहालत वाला, “अबू हुरैरा” या’नी बिल्लियों वाले, ऐसे ही “अबुल हक़म” या’नी फैसला करने वाला, “अबू बक्र” के मा’ना हैं अव्वलिय्यत वाले । (मिरआतुल मनाजीह, 6/510)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अबू हुरैरा (छोटी बिल्ली वाले)

एक बार सरकारे नामदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आस्तीन में छोटी सी बिल्ली मुलाहज़ा फ़रमाई तो फ़रमाया : या अबा हुरैरा या’नी ऐ छोटी सी बिल्ली वाले ।

(عمدة القارى، کتاب المغازی، قصة دوس والطفيل، ۳۵۴/۱۲، تحت الحديث: ۴۳۹۳)

तब से इस कुन्यत (या'नी अबू हरैरा) को इतनी शोहरत मिल गई कि आप का नाम अब्दुर्रहमान लोगों की ग़ालिब अक़षरिय्यत को याद ही नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अबू तुराब (मिट्टी वाले)

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर तशरीफ़ लाए तो आप ने हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को घर में न पाया, खातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से इस्तिफ़सार फ़रमाया : तुम्हारे चचाज़ाद कहां हैं ? इन्हों ने जवाब दिया : मेरे और उन के दरमियान कुछ इख़िलाफ़ हो गया था इस लिये वोह मुझ से नाराज़ हो कर घर से चले गए और मेरे पास कैलूला (या'नी दोपहर का आराम) नहीं किया। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शख़्स से फ़रमाया : जाओ ! देखो वोह कहां हैं ? उस शख़्स ने आ कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! वोह मस्जिद में लैटे हुवे हैं। सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام मस्जिदे नबवी शरीफ़ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ लाए तो हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم आराम फ़रमा रहे थे, चादर इन के पहलू से हट गई थी और पहलूए मुबारक पर मिट्टी लग गई थी। सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्काए मुकर्रमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मिट्टी

साफ करते हुवे फ़रमाने लगे : **قُمْ يَا اِبَا تُرَابٍ اَقْمِ يَا اِبَا تُرَابٍ !** उठ ऐ खाक वाले ! उठ ऐ खाक वाले ।

(بخاری، کتاب الصلاة، باب نوم الرجال فی المسجد، ۱/۶۹، حدیث: ۴۴۱)

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** को तमाम नामों में सब से ज़ियादा महबूब अबू तुराब था और जब इन्हें अबू तुराब कह कर पुकारा जाता तो बहुत खुश होते थे ।

(بخاری، کتاب الادب، باب التكنی بابی تراب وان كانت له كنية اخرى، ۴/۵۵، حدیث: ۶۲۰۴)


صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



अबू ज़र (च्यूंटियों वाला)

शारेहे बुख़ारी शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन उमर बिन अहमद शफ़ीरी शाफ़ेई (अल मुतवफ़्फ़ा 956 हि.) नक़ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की कुन्यत अबू ज़र इस लिये हुई कि आप के पास रोटी रखी थी कि अचानक उस पर च्यूंटियां नुमूदार हो गई, आप ने च्यूंटियों समेत रोटी का वज़्न किया तो उस से रोटी के वज़्न में कोई इज़ाफ़ा नहीं हुवा, आप ने इरशाद फ़रमाया : “इन च्यूंटियों को देखो ! दुनिया के तराजू में इन का कोई अषर ज़ाहिर नहीं हुवा और पलड़ा भारी नहीं हुवा लेकिन आख़िरत का मीज़ान बड़ा होने के बा वुजूद हलका है और एक च्यूंटी की वजह से भी वज़्न बढ़ जाता है,” उस दिन से आप की कुन्यत अबू ज़र रख दी गई । (شرح البخاری للسفیری، ۲/۴۴)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुन्यत की अहमियत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम में कुन्यत की अहमियत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि  सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** समेत मुतअद्दिद अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** कषीर सहाबा व सहाबिय्यात **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ला ता'दाद उ-लमा, फुकहा, मुहद्दिषीन और बुजुर्गाने दीन **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى** ने कुन्यत को इख्तियार फरमाया ।

 मज़क़ूरा शख़िस्सियात में से कषीर ता'दाद ने न सिर्फ़ एक बल्कि दो और दो से ज़ियादा कुन्यतें भी रखीं ।  कई सहाबए किराम, सहाबिय्यात और बुजुर्गाने दीन के अस्ल नाम आम मुसलमानों को मा'लूम ही नहीं और येह हज़रात नाम के बजाए अपनी कुन्यतों से मशहूर हैं, मषलन : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र (अब्दुल्लाह बिन उषमान), हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा (अब्दुर्रहमान), हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी (ख़ालिद बिन ज़ैद), हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा (नो'मान बिन षाबित), हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद (सुलैमान बिन अशअ़ष) वगैरा (**رِضْوَانُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ**)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अवलाद न होने की सूरत में भी कुन्यत रखना

अगर्चे मा'रूफ़ येही है कि जिस की अवलाद हो वोही कुन्यत रखता है लेकिन साहिबे अवलाद न होने की सूरत में भी

कुन्यत रखी जा सकती है। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ऐसे सहाबा को भी कुन्यत अता फ़रमाई जिन की उस वक़्त अवलाद न थी, चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा बिन सुहैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया : क्या वजह है कि तुम अपनी कुन्यत “अबू यह्या” रखते हो जब कि अभी तुम्हारे यहां अवलाद नहीं है ? हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जवाब दिया : सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी कुन्यत “अबू यह्या” रखी है।

(सनن ابن ماجه، كتاب الادب، باب الرجل يكنى قبل ان يولد له، ٤/٢٢٠، حديث: ٣٧٣٨)

जब कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन की अवलाद होने से पहले उन की कुन्यत “अबू अब्दिरहमान” रखी।

(عمدة القارى، كتاب البر والصلة، باب الكنية للصبي، ١٥/٣٢٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आपने बच्चों की कुन्यत रखें

अपने छोटे बच्चों की भी कुन्यत रख देनी चाहिये, चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, कहते हैं : **يَا'नी** : अपने बच्चों की कुन्यत रखने में

जल्दी करो, कहीं इन के (बुरे) अल्फ़ाब न पड़ जाएं।

(كنز العمال، كتاب النكاح، الباب السابع، ٨/١٧٦، جزء ١٦، حديث: ٤٥٢٢٢)

इस रिवायत के तहत हज़रते अल्लामा अब्दुर्रुफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي ने जो कुछ इरशाद फ़रमाया उस का खुलासा पेश करता हूँ : इस रिवायत में इस बात की तरगीब दिलाई गई है कि अपने बच्चों के लिये कम उम्र में ही कोई अच्छी कुन्यत रख दी जाए। बा'ज अवकात एक ही नाम कई अफ़राद में मुश्तरक होता है और इस सूरत में लोग ऐसे शख्स को बुलाने के लिये कोई न कोई लक़ब रख देते हैं जो कि अक़षर बुरा होता है। बच्चे की कुन्यत रखने का फ़ाइदा येह है कि जब वोह बड़ा होगा तो येह कुन्यत उसे बुलाने और पुकारने के लिये इस्ति'माल होगी और कोई इस का बुरा लक़ब नहीं रखेगा।

(فیض القدیر، ۲/۳، تحت الحدیث: ۳۱۱۶، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुन्यत याद करने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत “अबुल अब्बास” नाम “बल्या”, वालिद का नाम “मल्कान” जब कि लक़ब “ख़िज़्र” है जिस के मा'ना हैं सब्ज़ चीज़। हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام जहां तशरीफ़ फ़रमा होते वहां आप की बरकत से हरी हरी घास उग जाती थी इस लिये लोग आप को ख़िज़्र कहने लगे।

बा'ज अरिफ़ीन ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام का और उन के वालिद का नाम, आप की कुन्यत और लक़ब (या'नी अबुल अब्बास बल्या बिन मलकान अल ख़िज़्र) याद रखेगा إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा।

(صاوی، ۱/۲۰۷/۴، ۱۵، الکھف: ۶۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुन्यत शरीअत के मुताबिक होनी चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक मुसलमान के लिये जिन्दगी के दीगर मुआमलात की तरह कुन्यत रखने में भी शरीअत का पास रखना जरूरी है क्योंकि बा'ज कुन्यतें ऐसी भी हैं जो शरअन ममनूअ हैं । जिस तरह हमारे मदनी आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने बहुत से नाम तब्दील फरमाए इसी तरह बा'ज कुन्यतों को भी तब्दील किया चुनान्वे, हजरते सय्यिदुना हानी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि जब वोह अपनी कौम के हमराह रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की खिदमत में हाजिर हुवे तो आप ने लोगों को सुना कि वोह उन्हें अबुल हकम कह कर बुलाते हैं । रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उन्हें बुला कर इरशाद फरमाया : बेशक **اَللّٰهُ** ही हकम (या'नी फैसला फरमाने वाला) है और हुक्म का इख्तियार उसी को है, तुम्हारी कुन्यत अबुल हकम क्यूं है ? उन्होंने ने अर्ज किया : जब मेरी कौम के दरमियान किसी मुआमले में इख्तिलाफ हो जाए तो वोह लोग मेरे पास आते हैं और मैं जो फैसला कर दूं वोह उस पर राजी हो जाते हैं । सरकारे अबद करार, शाफ़ेए रोज़े शुमार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फरमाया : येह बहुत अच्छा है, क्या तुम्हारा कोई बेटा है ? अर्ज गुज़ार हुवे, शुरैह, मुस्लिम और अब्दुल्लाह हैं । इरशाद फरमाया : इन में से बड़ा कौन है ? मैं ने अर्ज की : शुरैह । फरमाया : तो फिर तुम्हारी कुन्यत अबू शुरैह है । (अबुदावुद, کتاب الادب، باب فی تغییر الاسم القبیح ۴/۳۷۶، رقم: ६९००)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

बड़े बेटे या बेटी के नाम पर कुन्यत इख्तियार करना बेहतर है

शर्ह सुन्ना में है : बेहतर यह है कि मर्द अपने बड़े बेटे की निस्बत से कुन्यत रखे, अगर बेटा न हो तो बड़ी बेटी की निस्बत से, यूँही औरत को चाहिये कि अपने बड़े बेटे की मुनासबत से कुन्यत इख्तियार करे और अगर बेटा न हो तो बड़ी बेटी की निस्बत से । (شرح السنة، کتاب الاستئذان، باب تغيير الاسماء، ٦/٣٩٤) छोटे बेटे या बेटी के नाम से कुन्यत इख्तियार करने में भी हरज नहीं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत

हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की एक कुन्यत “अबू मुहम्मद” है, इस का सबब बयान करते हुवे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ नक़ल फ़रमाते हैं : इमाम क़स्तलानी मवाहिबे लदुन्निया व मिनहे मुहम्मदिय्या में रिसालए मीलाद व इमाम अल्लामा इब्ने तुग़रुबक से नाक़िल, मरवी हुवा : आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ की : इलाही ! तू ने मेरी कुन्यत अबू मुहम्मद किस लिये रखी ? हुक्म हुवा : ऐ आदम ! अपना सर उठा । आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने सर उठाया सिरा पर्दे अर्श में मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नूर नज़र आया ।

अर्ज़ की : इलाही ! यह नूर क्या है ? फ़रमाया :

هَذَا نُورٌ نَبِيٍّ مِّنْ قَدَرِكَ اِسْمُهُ فِي السَّمَاءِ اَحْمَدُ وَفِي الْاَرْضِ مُحَمَّدٌ لَوْلَا مَا خَلَقْتَكَ وَلَا خَلَقْتَ سَمَاءً وَلَا اَرْضًا

येह नूर एक नबी का है तेरी जुर्रियत या'नी अवलाद से, इस का नाम आस्मान में अहमद है और ज़मीन में मुहम्मद, अगर वोह न होता तो मैं तुझे न बनाता, न आस्मानो ज़मीन को पैदा करता ।

(المواهب اللدنية، १/३०، فتاوى رضويه، ३०/१९६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुन्यत अता फरमाया करते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्काए मुकर्रमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जिस तरह मुतअद्दिद मदनी मुन्नों का नाम रखा यूं ही आप ने कई खुश नसीब अफ़राद को कुन्यत भी अता फ़रमाई, चुनान्वे, हज़रते सय्यिदतुना हबीबा बिनते असअद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि जब मेरे यहां बेटे की विलादत हुई तो उसे सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत अक्दस में ले जा कर अर्ज की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस का नाम रख दीजिये । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने सहल नाम रखा और अबू उमामा कुन्यत अता फ़रमाई ।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، ८/३२६ رقم: ६०८३)

हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को कुन्यत अता फ़रमाई

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अय्याश رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि **अब्बाह** के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शहज़ादी हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के हां बच्चे की विलादत हुई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बच्चे का नाम **अब्दुल्लाह** रखा और बच्चे के वालिद हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह मुक़रर फ़रमाई ।

(اسد الغابة، ३/ ३६१/ رقم: ३०६०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

औरत भी अपनी कुन्यत रखे

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने सरताज, महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अर्ज की, कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरे सिवा अपनी तमाम अज़वाजे मुतहहरात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की कुन्यत रखी है । रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम “उम्मे अब्दुल्लाह” हो ।

(سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب الرجل يكنى قبل ان يولد له، २/ २११، حديث: ३४३९)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मदीने के पहले बच्चे के वालिद की कुन्यत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मशहूर क़दीमुल इस्लाम सहाबी हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अरत رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साहिबज़ादे हैं। मरवी है कि हिजरत के बा'द सब से पहले हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जुबैर और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) पैदा हुवे। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम अब्दुल्लाह रखा और ख़ब्बाब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अबू अब्दुल्लाह कुन्यत अता फ़रमाई।

(الاستيعاب، ८/४९، رقم: १०१९، و الاصابة ४/६४، رقم: ३६६६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

बेटी के नाम पर भी कुन्यत रखी जा सकती है

अगर्चे मा'रूफ़ येही है कि इमूमन बेटे के नाम पर कुन्यत रखी जाती है लेकिन अगर कोई बेटी के नाम पर कुन्यत रखना चाहे तो येह न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि हदीष से षाबित है, चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना अबू मरयम (नुजैर) رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आज रात मेरे हां बच्ची की विलादत हुई है, हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : आज रात मुझ पर सूरए मरयम नाज़िल हुई है, फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी बेटी का नाम मरयम रख दिया और मेरी कुन्यत अबू मरयम रखी।

(اسد الغابة، ६/३००، رقم: ६२६०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत और कुन्यत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस सदी की अज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सियत, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ऐसी बुजुर्ग हस्ती हैं जो लाखों लाख मुसलमानों के लिये मरजए अकीदत हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी कुन्यत देने की अदाए मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अदा करते हुवे दा'वते इस्लामी के जामिआतुल मदीना से फ़ारिगुत्तहसील उन मदनी इस्लामी भाइयों को जिन्होंने 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल कर ली हो, उन को कुन्यतें अता फ़रमाते हैं।

इस के इलावा भी क़षीर इस्लामी भाइयों को अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुन्यतें अता कीं जिन में से 76 दर्ज की जा रही हैं :

- ✽ अबू इख़लास ✽ अबू इस्माईल ✽ अबू उसैद
- ✽ अबू इश्फ़ाक़ ✽ अबू अक्बर ✽ अबू अक्मल ✽ अबुल
- अशराफ़ ✽ अबुल अन्वार ✽ अबुल ईमान ✽ अबुल बिनतैन
- ✽ अबुल हसन ✽ अबुल हसनैन ✽ अबुल ख़ियार
- ✽ अबुल अता ✽ अबुनूर ✽ अबुल वफ़ा ✽ अबू इन्आम
- ✽ अबू अन्वारिल मदीना ✽ अबू अन्वर ✽ अबू बिलाल

✨ अबू शौबान ✨ अबू जमाल ✨ अबू जुनैद ✨ अबू हाशिर
 ✨ अबू हामिद ✨ अबू हम्माद ✨ अबू खलिल ✨ अबू राशिद
 ✨ अबू रिज़ा ✨ अबू रजब ✨ अबू ज़ाहिद ✨ अबू ज़ियाद
 ✨ अबू साइल ✨ अबू सज्जाद ✨ अबू सईद ✨ अबू सलमान
 ✨ अबू शाहिद ✨ अबू शराफ़त ✨ अबू शा'बान ✨ अबू
 शफीक ✨ अबू शहीर ✨ अबू साबिर ✨ अबू सादिक ✨ अबू
 सालेह ✨ अबू सदाक़त ✨ अबू ताहिर ✨ अबू आरिफ़ ✨ अबू
 उबैद ✨ अबू अतीक ✨ अबू उज़ैर ✨ अबू अफीफ़ ✨ अबू
 अकील ✨ अबू अली ✨ अबू उमर ✨ अबू गुफ़ान ✨ अबू
 फ़राज़ ✨ अबू फ़य्याज़ ✨ अबू करम ✨ अबू कलीम ✨ अबू
 कुमैल ✨ अबू माजिद ✨ अबू मुबीन ✨ अबू मुहम्मद ✨ अबू
 मदनी ✨ अबू मसऊद ✨ अबू मन्सूर ✨ अबू मूसा ✨ अबू
 मीलाद ✨ अबू नासिर ✨ अबू नो'मान ✨ अबू नईम ✨ अबू
 वाजिद ✨ अबू वासिफ़ ✨ अबू हिलाल ✨ अबू यासिर
 ✨ अबू यूसुफ़ ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुन्यत की सुन्नत जिन्दा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुन्यत रखना सरकारे

नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुबारक सुन्नत

है लेकिन फी ज़माना दीगर कई सुन्नतों की तरह ये भी तर्क होती जा रही है। आइये ! अदाए सुन्नत की न्ययत से कुन्यत को इख़्तियार कीजिये। अगर आप साहिबे अवलाद हैं और **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने आप को एक से ज़ियादा मदनी मुन्नों या मुन्नियों से नवाज़ा है तो बेहतर है कि अपने बड़े बेटे की निस्बत से कुन्यत इख़्तियार करें अगर बेटा न हो तो बेटी की निस्बत से कुन्यत रखें, अवलाद होते हुवे किसी और नाम से कुन्यत रखना भी दुरुस्त है और अगर आप शादी शुदा या साहिबे अवलाद नहीं तो भी कुन्यत रखी जा सकती है जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है।

अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** और दीगर बुजुर्गाने दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** की कुन्यतें इसी किताब के सफ़्हा **157** पर मौजूद हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जब किसी का नाम याद न हो तो कैसे पुकारते ?

हज़रते सय्यिदुना जारिया अन्सारी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं : सरकारे नामदार, दो अ़लम के मालिको मुख़्तार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** को जब किसी का नाम याद न होता तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** उसे “या इब्ने अब्दिल्लाह या’नी ऐ अब्दुल्लाह के बेटे !” कह कर बुलाते थे।

(جمع الجوامع، ४/५९९، حدیث: १६४१८)

इमाम शरफुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي लिखते हैं : जिस का नाम मा'लूम न हो उस को ऐसे लफ़्ज़ से पुकारना चाहिये जिस से उसे अज़ियत न हो, इस में झूट न हो और न ही खुशामद मषलन : ऐ भाई, ऐ मेरे सरदार, ऐ फुलां, ऐ फुलां कपड़े वाले, ऐ फुलां जूती वाले, ऐ घोड़े वाले, ऐ ऊंट वाले, ऐ तल्वार वाले, नेजे वाले वगैरा ऐसे अल्फ़ाज़ जो पुकारने वाले और पुकारे जाने वाले दोनों के हस्बे हाल हों ।

(الانكار، كتاب الاسماء، باب نداء من لا يعرف اسمه، ص ۲۳۱ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
पुकारने और ज़िक्र करने का अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान चाहे वोह हम से बड़े हों या छोटे, उन को पुकारने, ज़िक्र करने में उन के मक़ाम व मर्तबे का ख़याल रखा जाए और इसी मुनासबत से अल्फ़ाज़ और अलक़ाब का इन्तिखाब किया जाए । सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : **فَلَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرَنَا وَلَمْ يُؤَثِّرْ كَبِيرَنَا** : जो हमारे छोटे पर शफ़क़त न करे और हमारे बड़े की ता'ज़ीम न करे तो वोह हम में से नहीं ।

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی رحمة الصبيان، ۳/۳۶۹، حدیث: ۱۹۲۶)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद
यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : या'नी हमारी जमाअत से या हमारे तरीके वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार

हैं वोह हमारे मक्बूल लोगों में से नहीं, येह मतलब नहीं कि वोह हमारी उम्मत या हमारी मिल्लत से नहीं क्यूंकि गुनाह से इन्सान काफिर नहीं होता । (मिरआतुल मनाजीह, 6/560)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
जन्नत में मद्दीनी आक्व صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रफ़ाक़त पाने का नुस्खा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एहतिराम और ता'ज़ीम व तौकीर करो और छोटों पर शफ़क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे ।

(شعب الإيمان، باب في رحم الصغير، ٧/٤٥٨، حديث: ١٠٩٨١)

एक मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी में जिन शख़्सियात का ज़िक्र करने और पुकारने की ज़रूरत पड़ती है उन को 11 हिस्सों में तक्सीम किया जा सकता है : (1) सरकारे मदीना عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام (2) दीगर अम्बियाए किराम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (3) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان (4) बुजुगाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى (5) उ-लमाए किराम व मुफ़्तियाने उज़्ज़ाम (6) दीनी असातिज़ा (7) सादाते किराम (8) बुढ़े इस्लामी भाई (9) मां-बाप (10) रिश्तेदार (11) हम उम्र इस्लामी भाई ।

इन सब को पुकारने की तफ़सील येह है :

﴿1﴾ सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को पुकारना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को पुकारने, उन का ज़िक्र करने का

अदब हमें कुरआने मजीद से सीखने को मिलता है चुनान्वे,
पारह 18 सूरए नूर की आयत 33 में इरशाद होता है :

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ
كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا
(پ ۱۸، النور: ۶۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : रसूल के
पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा
लो जैसा तुम में एक दूसरे को
पुकारता है ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद
मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي इस आयत के
तहत लिखते हैं : रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को निदा करे तो
अदबो तकरीम और तौकीर व ता'जीम के साथ आप के मुअज़्ज़म
अल्काब से नर्म आवाज़ के साथ मुतवाजेआना व मुन्कसिराना
(या'नी अजीजी भरे) लहजे में “या नबिय्यल्लाह, या
हबीबल्लाह” कह कर । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 667)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का पुकारने का अन्दाज़

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जब रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हम कलाम होते तो यूं अर्ज किया करते :

﴿فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي﴾ (मेरे मां-बाप आप पर कुरबान)

(شعب الإيمان، باب في الزهد وقصر الأمل، ۳۰۳/۷، رقم: ۱۰۳۸۸)

मेरे **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** (या रसूलल्लाह) **يَا بَنِي اَنْتَ وَاُمِّي يَا رَسُولَ اللّٰهِ** मां-बाप आप पर कुरबान हों)

(بخاری، کتاب الصوم باب الريان للصائمين، ۱/۶۲۵، رقم: ۱۸۹۷)

नीज़ आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की पुकार के जवाब में **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** (या रसूलल्लाह) **لَيْتَكَ وَسَعْدُكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ وَاَنَا فِدَاؤُكَ** आप पर कुरबान जाऊं मैं खिदमत में हाज़िर हूं)

(شعب الایمان، باب فی مقاربة واموادة، ۶/۴۵۸، رقم: ۸۸۹۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रसूलल्लाह क्यूं न कहा ?

सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** न सिर्फ़ खुद सरकारे मदीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को निहायत अदब से पुकारा करते थे बल्कि उन्हें ये भी गवारा न था कि कोई उन के सामने सिर्फ़ नाम ले कर हुज़रे अकरम नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को निदा करे, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना षौबान **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** फ़रमाते हैं : उ-लमाए यहूद में से एक शख्स सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की खिदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की :

اَلْسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا مُحَمَّد मैं ने उस को जोर का धक्का दिया जिस से वोह गिरते गिरते बचा, कहने लगा : तुम ने मुझे धक्का क्यूं दिया है ? मैं ने कहा : इस लिये कि तुम ने **या रसूलल्लाह** नहीं कहा ।

(مسلم، کتاب الحيض، باب بيان صفة منی الرجل والمرأة، ص ۱۷۶، رقم: ۳۱۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ'ला हज़रत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का अन्दाज़

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने एक सुवाल का जवाब देते हुवे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अल्काबात यूं लिखे :

حضورِ اقدس قَاسِمُ النِّعَمِ، مَالِكُ الْأَرْضِ وَرِقَابِ الْأُمَمِ، مُعْطَى، مُنْعَمٌ، قُتْمٌ، قِيمٌ، وَلِيٌّ، وَالِيٌّ، عَلِيٌّ، عَلِيٌّ، كَاشِفُ الْكُرْبِ، رَافِعُ الرُّتَبِ، مُعِينٌ كَافِيٌّ، حَفِيطٌ وَافِيٌّ، شَفِيعٌ شَافِيٌّ، غَفُورٌ عَافِيٌّ، غَزِيرٌ جَمِيلٌ، وَهَّابٌ كَرِيمٌ، غَنِيٌّ عَظِيمٌ، خَلِيفَةُ مُطْلَقِ حَضْرَتِ رَبِّ، مَالِكُ النَّاسِ وَدَيَّانُ الْعَرَبِ، وَلِيُّ الْفَضْلِ جَلِي الْأَفْضَالِ، رَفِيعُ الْمِثْلِ، مُتَنَعٌ الْأَمْثَالِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ (फ़तावा रज़विय्या, 14/626)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का मा'मूल

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनील उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का तज़क़िरा करते हैं तो एक एक लफ़्ज़ से अदबो एहतिराम झलकता है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ उमूमन हम काफ़िय्या अल्काबात के साथ प्यारे प्यारे मदनी आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ज़िक़रे मुबारक करते हैं, मषलन : ❀ सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

❀ सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अर्दे वस्समावात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ❀ सरकारे दो आलम, नूरे

ﷺ मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहूतशम

✽ रसूले बे मिषाल, साहिबे जूदो नवाल, हबीबे रब्बे जुल जलाल, बीबी आमिना के लाल ﷺ रसूले नजीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे कदीर ﷺ सरकारे अबद करार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, बिइज़्ने परवर दगार दो आलम के मालिको मुख्तार ﷺ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! ﷺ

﴿2﴾ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को पुकारना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख्लूक में अम्बियाए किराम

عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام सब से अफ़ज़ल हैं हत्ता कि जो किसी ग़ैरे नबी को किसी नबी से अफ़ज़ल या बराबर बताए, काफ़िर है।

(बहारे शरीअत, 1/47) अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का तज़क़िरा करते हुवे भी अदबो एहतिराम का खयाल रखना इन्तिहाई ज़रूरी है, मषलन नाम ज़िक्र करने से पहले “हज़रते सय्यिदुना” जब कि नाम के बा’द عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام (या’नी हमारे नबी पर और इन पर दुरूद और सलाम हों) कहना और लिखना चाहिये।

मुख्तलिफ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जो खास अल्फ़ाबात हैं उन के नामों के साथ वोह अल्फ़ाब ज़िक्र करना भी मुनासिब है,

مषलन हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام,

हज़रते सय्यिदुना नूह नजिय्युल्लाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام,

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام,

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام,

हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام,

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

जब एक नबी का जिक्र हो तो عَلَى نَبِيٍّ وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का जिक्र हो तो और दो से ज़ियादा का जिक्र ख़ैर हो तो عَلَى نَبِيٍّ وَعَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام कहना और लिखना चाहिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿3﴾ सहाबउ किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को पुकारना

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द मलाइकए मुर्सलीन और सादात फ़िरिश्तगाने मुक़र्रबीन और उन के बा'द सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बहुत बुलन्द मर्तबे के हामिल हैं और कोई वली चाहे कितने ही बुलन्द मक़ाम तक क्यूं न पहुंच जाए लेकिन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का हम मर्तबा हरगिज़ नहीं हो सकता ।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/354-357)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है :

لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي قُلُوْا أَنَّهُ كَانَ أَحَدُكُمْ أَتَقَفَ مِثْلَ أَحَدٍ نَهَبًا مَا بَلَغَ مَدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفَهُ

मेरे सहाबा को बुरा न कहो, अगर तुम में से कोई शख्स उहुद पहाड़ जितना सोना ख़र्च करे तो भी उन के ख़र्च किये हुवे एक मुद या निस्फ़ मुद के बराबर नहीं पहुंचेगा ।

(بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی "لو كنت متخذًا خلیلاً"، ۵۲۲/۲، حدیث: ۳۶۷۳)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुबारक नाम से पहले “हज़रते सय्यिदुना” और अगर सहाबिय्या हों तो “हज़रते सय्यिदतुना” जब कि नाम के बा'द ता'दाद और जिन्स की मुनासबत से दुआइय्या कलिमात का इस्ति'माल करना चाहिये, चुनान्वे, मर्द सहाबी एक

हों तो **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**, दो हों तो **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** जब कि दो से ज़ियादा होने की सूरत में **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ**, ख़ातून सहाबिय्या एक हों तो **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** दो हों तो **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** जब कि दो से ज़ियादा के लिये **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** कहना और लिखना चाहिये ।

मुख्तलिफ़ सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** के नामों के साथ मख़्सूस अल्फ़ाबात व ख़िताबात का इस्ति'माल भी ऐन सआदत है मषलन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लिये सिद्दीके अक्बर, हज़रते सय्यिदुना उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लिये फ़ारूके आ'ज़म, हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लिये जुन्नूरैन, हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** के लिये शेरे खुदा, हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लिये सैफुल्लाह वगैरा ।

अगर्चे हमारे मुआशरे में उमूमन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का इस्ति'माल सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** के लिये होता है जब कि अइम्मा व औलिया के लिये **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इस्ति'माल किया जाता है लेकिन याद रखिये कि शरई ए'तिबार से **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का इस्ति'माल सहाबी व ग़ैरे सहाबी दोनों के लिये जाइज़ हैं ।

(मज़ीद तफ़्सील के लिये देखिये : फ़तावा रज़विyy्या, 23/390)

﴿4﴾ बुजुर्गानि दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى** को पुकारना

बजुर्गानि दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى** के ज़िक्र में भी अदबो एहतिराम का लिहाज़ रखना ज़रूरी है चाहे वोह हयाते ज़ाहिरी से मुत्तसिफ़

हों या दुन्या से पर्दा कर चुके हों। नाम से पहले “हज़रते सय्यिदुना” जब कि नाम के बा’द **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** वगैरा दुआइय्या कलिमात का इस्ति’माल करना चाहिये नीज़ मुख़्तलिफ़ बुजुर्गाने दीन के लिये मख़्सूस अल्फ़ाब का लिखना और बोलना भी ऐन सआदत है मषलन : हज़रते सय्यिदुना इमामे आ’ज़म अबू हनीफ़ा नो’मान बिन षाबित **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** कुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी हज़रते सय्यिदुना गौषे आ’ज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी **قُدَسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** वगैरा । जो बुजुर्गाने दीन हयात हों उन के लिये **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** वगैरा दुआइय्या कलिमात का इस्ति’माल करना चाहिये । जब एक बुजुर्ग का ज़िक्र हो तो **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ**, दो हों तो **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا** जब कि दो से ज़ियादा होने की सूरत में **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ**, ख़ातून बुजुर्ग एक हों तो **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا**, दो हों तो **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا** जब कि दो से ज़ियादा के लिये **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِنَ** कहना और लिखना चाहिये । बुजुर्गों के नामों के साथ दुआइय्या कलिमात लिखने में याद आने पर हम क़ाफ़िय्या अल्फ़ाज़ इस्ति’माल करने से तहरीर व तक़रीर में कशिश पैदा होती है मषलन हज़रते सय्यिदुना अल्लामा शामी के साथ **قُدَسَ سِرُّهُ الشَّامِي** और सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिषे दहेल्वी के साथ **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

५ उ-लमाए किशम व मुफ़्तियाने इज़्ज़ाम **كَثَرَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** को पुकारना

उ-लमाए किराम व मुफ़्तियाने इज़्ज़ाम और क़ाबिले

एहतिराम दीनी शख्सिय्यात से हम कलाम होने और उन का तजक़िरा करने में भी अदबो एहतिराम को मल्हूज़ रखना अज़ हद ज़रूरी है मषलन यूं कह कर मुख़ातिब कीजिये : हज़रत ! हुज़ूर ! जनाब वग़ैरा, जिस शख्सिय्यत का लक़ब मशहूर हो उसे उस लक़ब से भी पुकारा और लिखा जा सकता है जैसे मेरे आक़ा हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ का मशहूर लक़बे मुबारक “आ’ला हज़रत” और “इमामे अहले सुन्नत” है, शहज़ादए आ’ला हज़रत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान का लक़ब “मुफ़्तये आ’ज़मे हिन्द” मुफ़्ती अहमद यार ख़ान का लक़ब “हकीमुल उम्मत” इसी तरह बानिये दा’वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का मशहूर लक़ब “अमीरे अहले सुन्नत” है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿6﴾ दीनी असातिज़ा को पुकारना

दीनी उस्ताज़ रूहानी बाप होता है इस लिये उन को भी ता’जीमी अन्दाज़ से उस्ताज़े मोहतरम, उस्ताज़ साहिब, या उस्ताज़ी कह कर पुकारना और लिखना चाहिये। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : इल्म हासिल करो और इल्म के लिये बुर्दबारी व वक़ार सीखो, और जिस से इल्म हासिल कर रहे हो उस के सामने अज़िज़ी व इन्किसारी इख़्तियार करो। (المعجم الاوسط، ٤/ ٣٤٢، حديث: ٦١٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿7﴾ सादाते किराम को पुकारना

हज़रते मौलाना नूर मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد और हज़रते मौलाना सय्यिद क़नाअत अली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي यह दोनों हज़रात, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ जैसे सच्चे आशिके रसूल की सोहबते बा बरकत में रह कर इल्मे दीन की दौलते बे बहा हासिल कर रहे थे। एक मरतबा मौलाना नूर मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد ने सय्यिद साहिब का नाम ले कर इस तरह पुकारा : “क़नाअत अली, क़नाअत अली !” जब सय्यिदुस्सादात عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के आशिके सादिक के कानों में यह आवाज़ पड़ी तो गवारा न किया कि ख़ानदाने रसूल के शहज़ादे को इस तरह नाम ले कर पुकारा जाए। फ़ौरन मौलाना नूर मुहम्मद साहिब को बुलवाया और फ़रमाया : “क्या सय्यिद ज़ादों को इस तरह पुकारते हैं ! कभी मुझे भी इस तरह पुकारते हुवे सुना ?” (या'नी मैं तो उस्ताज़ हूं फिर भी कभी ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार नहीं किया) यह सुन कर मौलाना नूर मुहम्मद साहिब बहुत शर्मिन्दा हुवे और नदामत से निगाहें झुका लीं। आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने फ़रमाया : “जाइये ! आइन्दा ख़याल रखयेगा।”

(हयाते आ'ला हज़रत, स. 1/183)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदीने वाले आका, दो आलम के दाता صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के शहज़ादों को अदब से पुकारना चाहिये, बा'ज़ अलाकों में सय्यिद ज़ादों को “शाह साहिब, शाह जी” जब कि बाबुल मदीना कराची और दीगर बा'ज़ जगहों पर “बापू” कह कर बुलाया और लिखा जाता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

«8» बुढ़े इस्लामी भाइयों को पुकारना

इस्लाम एक कामिल व अकमल दीन है जो हमें बुजुर्गों का एह्तिराम सिखाता है। सरकारे अबद करार, शाफ़े़ रोज़े शुमार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : जो नौजवान किसी बुजुर्ग के सिन रसीदा (या'नी बुढ़े) होने की वजह से उस की इज़्ज़त करे तो **عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये किसी को मुक़र्र कर देता है जो उस नौजवान के बुढ़ापे में उस की इज़्ज़त करेगा। (ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی اجلال الکبیر، ۳/ ۴۱۱، حدیث: ۲۰۲۹)

बुढ़ों को हस्बे रवाज व उर्फ़ इज़्ज़त से पुकारना चाहिये मषलन बा'ज़ अ़लाकों में “बाबा जी”, “बड़े मियां” कह कर पुकारना मु़रव्वज है। अगर दादा, दादी या नाना नानी हयात हों तो उन को दादा हुज़ूर, दादा जान, दादा जी, नाना हुज़ूर, नाना जान, नाना जी वगैरा कह कर पुकारना चाहिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّد

«9» मां-बाप को पुकारना

वालिदैन का एह्तिराम करना, उन्हें इज़्ज़त से पुकारना दोनों जहानों में ढेरों भलाइयां पाने का सबब है। वालिद साहिब को हस्बे मौक़अ और हस्बे रवाज अब्बू जी, अब्बा हुज़ूर, बाबा और वालिदा साहिबा को अम्मी हुज़ूर, अम्मी जान, अम्मी जी वगैरा कह कर पुकारना चाहिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰی مُحَمَّد

«10» रिश्तेदारों को पुकारना

रिश्तेदार दो किस्म के होते हैं, एक वोह जो उम्र में हम से बड़े हैं और दूसरे वोह जिन की उम्र हम से कम होती है।

बड़े रिश्तेदारों को पुकारने के लिये मुख़लिफ़ ज़बानों और अ़लाकों में मुख़लिफ़ अल्फ़ाज़ और अन्दाज़ राइज़ हैं, इन में से जो अदब के ज़ियादा करीब और शरीअत के मुताबिक़ हों अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उन्हें इख़्तियार करना चाहिये। बा'ज़ अ़लाकों में मामूं जान, चचा जान, भाई जान वगैरा बोला जाता है।

कम उम्र रिश्तेदारों मषलन छोटे भाई बहन, भान्जे, भतीजे नीज़ अपनी अवलाद से गुफ़्तगू और इन्हें पुकारने में शफ़क़त से भरपूर और मुहज़ज़ब अन्दाज़ अपनाना और “आप जनाब” से बात करना न सिर्फ़ बात करने वाले की शख़्सियत की अक्कासी करता है बल्कि येह अन्दाज़ बच्चों की तर्बियत में भी मुअविन षाबित होता है क्यूंकि बच्चे उमूमन बड़ों के अक्वाल व अफ़आल से अषर लेते और उन की नक्काली करते हैं। इस बारे में हमारे प्यारे प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का तर्ज़े अमल क्या था इस रिवायत से अन्दाज़ा लगाइये, चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ बेटे ! (مسلم، کتاب الادب، باب جواز قوله لغير ابنه یا بنی، ص ۱۱۸۵، رقم: ۲۱۵۱)

मियां बीवी का एक दूसरे को पुकारना

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **1195** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत (जिल्द **3**) सफ़हा **657** पर है : औरत को येह मकरूह है कि शोहर को नाम ले कर पुकारे। (درمختار، ۹، ۱۹۰) बा'ज़ जाहिलों में येह मशहूर है कि औरत अगर शोहर का नाम ले ले तो निकाह टूट जाता है।

येह ग़लत है शायद इस लिये गढ़ा हो कि इस डर से कि तलाक़ हो जाएगी शोहर का नाम न लेगी। (बहारे शरीअत, 3/657)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पहले की औरतें इस क़दर हयादार होती थीं कि अपने शोहर का नाम लेते हुवे **झिजकती** थीं और मुन्ने के अब्बू वगैरा कहती थीं। मगर अब तो बिला तकल्लुफ़ “मेरे मियां, मेरे शोहर, मेरे हज़बन्द (**Husband**)” कहती हैं। और मर्द भी मेरे बच्चों की अम्मी वगैरा कहने के बजाए “मेरी बीवी, मेरी वाइफ़, मेरी घरवाली” कहते हैं, अपने बच्चों के मामू का तआरुफ़ करवाने का काफ़ी शौक़ देखा गया है। अगर्चे वोह कज़िन हो तब भी बिला ज़रूरत सिर्फ़ “साला” कह कर तआरुफ़ करवाएंगे। ग़ालिबन हज़े नफ़्स के लिये ऐसा किया जाता होगा। कोशिश फ़रमाइये कि मुहज़ज़ब अल्फ़ाज़ ज़बान पर आएँ, हां, ज़रूरतन बीवी या शोहर वगैरा का रिश्ता बताने में हरज भी नहीं। (बा हया नौजवान, स. 39)

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में दीगर मुआशरती और अख़लाकी पहलूओं के साथ साथ इस हवाले से भी तर्बिय्यत का एहतिमाम किया जाता है, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के अता कर्दा नेक बनने के नुस्खे “**72 मदनी इन्आमात**” में से एक मदनी इन्आम इस बारे में भी है, चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ **30** सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “**मदनी इन्आमात**” के सफ़हा **4** पर मदनी इन्आम नम्बर **7** है : आज आप ने (घर में और बाहर भी) हर

छोटे बड़े हत्ता कि वालिदा (और अगर हैं तो अपने बच्चों और इन की अम्मी) को भी तू कह कर मुखातब किया या आप कह कर ? नीज़ हर एक से दौराने गुफ्तगू हैं कह कर बात की या जी कह कर ? (आप कहना, जी कहना दुरुस्त जवाब है) ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿11﴾ हमउम्र इस्लामी भाइयों को पुकारना

खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ** का फ़रमाने आलीशान है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ اِخْوَةٌ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : मुसलमान

(प २६, المحرات: १००) **मुसलमान भाई हैं ।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या के किसी भी कोने में रहने वाला मुसलमान चाहे उस से हमारी कोई वाकिफ़ियत या रिश्तेदारी न हो लेकिन मुसलमान होने के बाइष वोह हमारा इस्लामी भाई है लिहाज़ा उसे पुकारते और उस का तज़क़िरा करते हुवे उस के नाम के साथ “भाई” कहना मुनासिब है जैसा कि अहमद रज़ा भाई, हसन भाई वगैरा । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** दा’वते इस्लामी के मदनी माहोल में येही तरीक़ा कार राइज है । नावाकिफ़ मुसलमान को भाई कहना सिर्फ़ नोके ज़बान तक ही महदूद नहीं होना चाहिये बल्कि कोशिश कर के अपने दिल में भी उस के लिये भाईचारे के जज़्बात उजागर करना और उस के खुशी व ग़म को अपना खुशी व ग़म समझना चाहिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिला ज़रूरत दो तीन नाम मिला कर न रखें

पाक व हिन्द के बा'ज अलाको में वालिद के नाम को बेटे का हिस्सा बनाया जाता है जैसे मुहम्मद अरिफ़ जुनैद, ऐसे उर्फ़ पर अमल करने में हरज तो नहीं लेकिन ग़ैर ज़रूरी तौर पर दो या तीन नामों पर मुश्तमिल एक नाम न रखा जाए, आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** लिखते हैं : दो दो तीन तीन नामों पर मुश्तमिल नाम रखना जैसे मुहम्मद अली हुसैन इस का भी रवाजे सलफ़ (या'नी बुजुर्गों में रवाज) कभी न था सादे एक लफ़्ज़ के नाम होते थे । **والله تعالى اعلم** (फ़तावा रज़विय्या, 24/669)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد

नाम रखने में मुजक्कर और मुअन्नष का भी खयाल रखें

बा'ज अवकात लड़के का नाम लड़कियों वाला और लड़की का नाम लड़कों वाला रख दिया जाता है, नाम ऐसा हो जिसे सुनते ही मा'लूम हो जाए कि येह लड़की का नाम है या लड़के का ! मषलन लड़की के लिये ख़दीजा और लड़के के लिये कासिम नाम रखा जाए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد

और मुस्लिमों के लिये मख़सूस नाम न रखिये

आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** लिखते हैं : मुसलमान को मुमानअत है कि काफ़िरो के नाम रखे **كَمَا صَرَّحُوا بِهِ فِي التَّسْمِيَةِ يُوْحَنَّا** वगैरा (जैसा कि यूहन्ना नाम रखने के मुतअल्लिक़ फ़ुक़हा ने तसरीह़ फ़रमाई है । **ت**) (फ़तावा रज़विय्या, 23/260)

एक और जगह नक़ल करते हैं : नामों की एक किस्म कुफ़ार से मुख़्तस्स है जैसे जिर्जिस, पुतरुस और यूहन्ना वगैरा लिहाज़ा इस नौअ (या'नी किस्म) के नाम मुसलमानों के लिये रखने जाइज़ नहीं क्यूंकि इस में कुफ़ार से मुशाबहत पाई जाती है। (त) واللّٰهُ تَعَالٰی اعْلَم (फ़तावा रज़विय्या, 24/663)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुरे नाम का अषर

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख़्स से उस का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया तो कहने लगा : मेरा नाम जमरह (चिंगारी) है, फ़रमाया : किस का बेटा ? कहा : इब्ने शिहाब (आतश पारा) का, फ़रमाया : किन लोगों में से है ? कहा : हुरक़ह (सोज़िश) में से, फ़रमाया : तेरा वतन कहां है ? कहा : हर्तुन्नार (आग की तपिश) में, फ़रमाया : उस के किस मक़ाम पर ? कहा : ज़ातिलज़ा (शो'लावार) में। फ़रमाया : अपने घर वालों की ख़बर ले सब जल गए, तो वैसा ही हुवा जैसा हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया था (या'नी उस ने सारा कुम्बा जला हुवा पाया)।

(مَوْطَأ امام مالك، كتاب الاستئذان، باب ما يكره من الاسماء، ٢/٤٥٤، حديث: (١٨٧١))

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छे नाम वाले से काम लिया

सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन एक ऊंटनी मंगवाई और फ़रमाया : इसे कौन दोहेगा

(या'नी दूध निकालेगा) ? एक शख्स ने अर्ज़ की : मैं । दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? उस ने कहा : मुर्तुन (या'नी कड़वा) । फ़रमाया : तुम बैठ जाओ । एक और शख्स खड़ा हुवा । नाम पूछा तो उस ने अपना नाम जमरतुन (या'नी अंगारा) बताया । उसे भी बैठने का इरशाद फ़रमाया । अब हज़रते सय्यिदुना यईश गिफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ खड़े हुवे और दरयाफ़्त करने पर अपना नाम यईश (या'नी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला) बताया तो इरशाद हुवा : तुम ऊंटनी को दोहो (या'नी इस का दूध निकालो) ।

(المعجم الكبير، ٢٢/٢٧٧، حديث: ٧١٠)

काज़ी सुलैमान बिन ख़लफ़ अलबाज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي

फ़रमाते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दो अफ़राद को ऊंटनी का दूध दोहने से रोक दिया और यईश नाम के शख्स को इस की इजाज़त अता फ़रमाई तो येह बद शुगूनी के बाब से नहीं है येह तो सिर्फ़ नाम को अच्छा या बुरा जानने के मा'ना में है । अच्छा नाम पसन्द करना ऐसे ही है जैसे बद सूरत औरत पर ख़ूब सूरत को पसन्द करना, मैले कपड़ों के मुक़ाबले में साफ़ सुथरे कपड़ों को इख़्तियार करना और जुमुआ और ईदों में अच्छी हैअत और उम्दा खुशबू पसन्द करना तो मा'लूम हुवा कि इस्लाम ख़ूब सूरती के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि येह तो ज़ीनत इख़्तियार करने को जाइज़ क़रार देता है और नामों वगैरा में उम्दगी को पसन्द करता है ।

(المنتقى شرح مؤطا امام مالك، ٩٠/٤٥٧، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नाम तब्दील फ़रमा दिया करते

कधीर अहदायिष से षाबित है कि हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने बहुत से नाम तब्दील फ़रमा दिये, चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना उतबा बिन अब्द **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं : नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के पास जब कोई ऐसा शख्स आता जिस का नाम आप को नापसन्द होता, आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** उस का नाम तब्दील फ़रमा देते थे । (جمع الجوامع، ४२१/०، حديث: १६१०१)

अज़ीम मुहद्दिष हज़रते इमाम अबू दावूद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं : सरकारे मदीनए मुनव्वरा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने आस (गुनहगार), अज़ीज (ग़ालिब, ताक़तवर), अतलत (शिद्दत और सख़्ती), शैतान (हलाक होने वाला, भलाई से दूर), हक़म (दाइमी हुकूमत वाला), गुराब (कच्चा, दूर निकल जाने वाला) और हुबाब (शैतान का नाम, सांप की एक किस्म) के नाम तब्दील फ़रमा दिये, शिहाब (आग का शो'ला) का नाम हिशाम (सखावत), हर्ब (जंग) का नाम स्लम (सुल्ह) और मुज़तजिअ (लैटने वाला) का नाम मुन्बइष (उठने वाला) रखा ।

(ابو داؤد، كتاب الادب، باب في تغيير الاسم القبيح، ३७६/४، تحت الحديث: ४९०६)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان** इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : क्यूंकि आस मुख़फ़फ़ (short cut) है आसी का, जिस के मा'ना हैं गुनहगार, इताअते इलाही से अलाहिदा, येह मोमिन की शान नहीं, मोमिन इताअत शिआर होता है । अतलह बना है अतलुन से ब मा'ना सख़्ती, शिद्दत, रब तआला **عَزَّوَجَلَّ** फ़रमाता हैं : (پ २९، القلم: १३) **عُتِّلَ بَعْدَ ذَلِكَ رَنِيمٌ** (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : दरश्त खू इस सब पर तुरा येह कि इस

की अस्ल में ख़ता), अब एक मज़बूत औज़ार को अतलह कहते हैं जिस से दीवार वगैरा खोदी जावे (या'नी कुदाल) मुसलमान सख़्त नहीं होता, नीज़ अज़ीज़ अस्माए इलाहिय्या में से हैं, इज़्ज़त से बना है, मुसलमान में फ़िरोतनी इज़्ज़ो नियाज़ चाहिये । शैतान लक़ब है इब्लीस का, बना है शैतुन से ब मा'ना जलना, हलाक होना या शतनुन से ब मा'ना भलाई से दूरी । हक़म सिफ़ते मुशब्बा हुकूमत या हुकुम का ब मा'ना दाइमी हुकूमत वाला, येह रब तअ़ाला **عَزَّوَجَلَّ** की सिफ़त है । गुराब बना है गुर्बुन से ब मा'ना दूरी, येह नाम है कव्वे का कि वोह बहुत दूर निकल जाता है । हुबाब शैतान का नाम भी है और एक किस्म के सांप को भी कहते हैं लिहाज़ा येह नाम भी मन्हूस है और शिहाब आग के शो'ले को भी कहते हैं और टूटे हुवे तारे को भी जिस से शयातीन को भी मारा जाता है मगर यहां “मिरकात” ने फ़रमाया कि अगर शिहाब को दीन की तरफ़ मुज़ाफ़ कर दिया जाए और नाम हो शिहाबुद्दीन तो कराहत क़तअन नहीं बिला कराहत जाइज़ है । (मिरकात, **8/530**), कि अब येह फ़ासिद मा'ना निकल गए (और मा'ना हो गए) चमकदार, लिहाज़ा कराहत न रही । (मिरआतुल मनाज़ीह, **6/421**)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बुरे नाम को बदल देते

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से रिवायत है कि रहमते आलमिय्यान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

बुरे नाम को बदल देते थे ।

(ترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء في تغيير الاسماء، ۳۸۲/۴، حدیث: ۲۸۴۸)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَان** इस हदीषे पाक के तहत लिखते हैं : या'नी हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इन्सानों के, जानवरों के बल्कि शहरों बस्तियों के बुरे नाम बदल कर अच्छे नाम रख देते थे, चुनान्चे, एक शख़्स का नाम था “अस्वद (या'नी काला)” हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उस का नाम अब्यज़ (या'नी सफ़ेद) रखा, मदीनए मुनव्वरा का नाम यषरब (वीराना, ख़ारज़ार) था हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उस का नाम मदीना (जम्अ होने की जगह), तय्यिबह (बेहतर मिट्टी वाला शहर, आफ़ात से महफूज़ शहर) अब्तह (कुशादा जगह जहां से सैलाब का पानी गुज़रता हो), बतहा (कुशादा ज़मीन) वग़ैरा रखे। कुफ़फ़ार के लिये बर अक्स अमल था चुनान्चे “अबुल हक़म” (दानाई वाला) नाम था हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने “अबू जहल” (जहालत वाला) रखा।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/420)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

वोह बा'ज नाम जो शरक़ारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तब्दील फ़रमा दिये**
﴿1﴾ एक सहाबी बरगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे जिन के चेहरे पर ज़ख़्म का निशान था, रसूले षक़लैन, सुल्ताने कौनैन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने उन से नाम पूछा। उन्होंने ने अर्ज़ की : **मुन्ज़िर** (डराने वाला)। फ़रमाया : तुम **अशज** (ज़ख़्मी पेशानी वाला) हो।

(असदुलगाबे, २/४९, ८९, १२९, १३९)

﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना बशीर बिन ख़सासिय्या **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का नाम “जहम” (रुकावट डालने वाला) था, **बशीर** (खुश ख़बरी देने वाला) नाम रखा।

(असदुलगाबे, १/२८९, २९९, ३०९)

﴿3﴾ हज़रते सय्यिदुना सिराज رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम **फ़तह** (कामयाबी)

था, बदल कर **सिराज** (चराग़) रखा। (الاستيعاب، २/२६२، رقم: ११३६)

﴿4﴾ एक सहाबी का नाम पहले “**अस्वद** (काले रंग वाला)”

था, बदल कर **अब्बज** (गोरे रंग वाला रखा।)

(جمع الجوامع، مسند سهل بن سعد، १/३९، حديث: ११३६)

﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना अबुल यमान बिशर या बशीर बिन अक़रबह

जुहन्नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا अपने वालिद के साथ नबिय्ये करीम

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हज़िर हुवे, नाम पूछा तो अर्ज़ की :

बह्रीर (इल्म, माल में ज़ियादती वाला)। फ़रमाया : नहीं बल्कि

तुम्हारा नाम **बशीर** (खुश ख़बरी देने वाला) है। (الاصابة، १/३६१، رقم: ६११)

﴿6﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू इंसाम बशीर हारिषी का'बी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

का नाम **अक्बर** (सब से बड़ा) था। आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने

इरशाद फ़रमाया : तुम **बशीर** (खुश ख़बरी देने वाला) हो।

(اسد الغابة، १/२८८، رقم: ६०६)

﴿7﴾ हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन जबलह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम

पहले **अब्दे अम्र** (अम्र का बन्दा) था, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम **बक्र** रखा।

(جمع الجوامع، مسند بكر بن جيلة الكلبي، १/१००)

﴿8﴾ हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन हबीब हनफ़ी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का

पहला नाम **बरबर** (फुज़ूल बातें करने वाला) था, नबिय्ये

करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम बरबर से बदल कर

बक्र रखा।

(جمع الجوامع، مسند بكر بن جيلة الكلبي، १/१००)

﴿9﴾ हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन हबीब बिन मरवान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

बतौरै वफ़द नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हुए, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन का नाम दरयाफ़्त फ़रमाया, उन्होंने ने बताया : **बगीज़** (क़ाबिले नफ़रत) । हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम **हबीब** (क़ाबिले महब्बत, दोस्त) हो । इस के बा'द उन को हबीब कहा जाता था ।

(اسد الغابة، ۱/۳۰۰، رقم: ۴۸۱)

﴿10﴾ हज़रते सय्यिदुना जुऐब बिन शा'षन/शा'षम तमीमी अम्बरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हुवे तो आप ने उन का नाम पूछा : उन्होंने ने अर्ज़ की : **अलकुलाह** (तुर्श रू) । नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम “जुऐब” (बालों वाला) है । उन के लम्बे लम्बे गैसू थे । (اسد الغابة، ۲/۲۱۸، رقم: ۱۰۶۶)

﴿11﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू अषीलह राशिद बिन हफ़्स رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम **ज़ालिम** (ज़ुल्म करने वाला) था, नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने राशिद (हिदायत याफ़्ता) नाम रखा ।

(اسد الغابة، ۲/۲۲۱، رقم: ۱۰۶۹)

﴿12﴾ हज़रते सय्यिदुना राशिद बिन शिहाब बिन अम्र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम **क़िरज़ाब** (खाने में हरीस) था, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम राशिद (हिदायत याफ़्ता)

रखा ।

(اسد الغابة، ۲/۲۲۱، رقم: ۱۰۷۰)

﴿13﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू मुकनिफ़ जैदुल ख़ैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम “जैदुल ख़ील” (बड़ाई, खुद पसन्दी में बढ़ने वाला) से बदल कर “जैदुल ख़ैर” (भलाई और नेकी में बढ़ने वाला) रखा।
(الاستيعاب، १/२७१، رقم: ८६६)

﴿14﴾ हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन कैस अन्नजी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सरकारे अबद करार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हुवे, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? अर्ज की : सा'दुल ख़ील (घोड़ों में बरकत वाला) फ़रमाया : बल्कि तुम सा'दुल ख़ैर (नेकी में बरकत वाला) हो।
(الاصابة، ३/६०، رقم: ३१९९)

﴿15﴾ अबू दावूद शरीफ़ में है एक साहिब का नाम हर्ब (जंग) था, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन का नाम सल्म (अमन) रखा।

(ابو داؤد، كتاب الادب، باب في تغيير الاسم القبيح، ४/३७६، حديث: ६९०६)

﴿16﴾ ग़ज़वए ख़न्दक़ के मौक़अ पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ख़न्दक़ की खुदाई लोगों में बांट दी, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ भी उन के साथ मसरूफ़े कार रहे, उन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में जुएल (बद शक़ल और सियाह आदमी) नामी एक साहिब भी थे, जनाबे रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन का नाम “अम्र” रखा।

(اسد الغابة، १/४२५، رقم: ७६६)

﴿17﴾ हज़रते सय्यिदुना शरीद बिन सुवैद षकफ़ी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम **मालिक** (मिल्कियत वाला) था, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मोह़तशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बदल कर **शरीद** (दौड़ कर आने वाला) रखा, यह बैअते रिज़वान के शुरका में से हैं। (اسد الغابة، २/५९९، رقم: २६३०)

﴿18﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह कषीर बिन सलत बिन मा'दी करिब किन्दी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अहदे मुबारक में पैदा हुवे, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम **क़लील** था, नबिय्ये मुअज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम **कषीर** रखा।

(اسد الغابة، ४/४८०، رقم: ६६२६)

﴿19﴾ हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बहन उम्मे अ़सिम का नाम **अ़सिया** (नाफ़रमान औरत, गन्जान दरख़्त) था, नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन का नाम **जमीला** (फ़ज़ले खुदा से नेकियां करने वाली, ख़ूब सूरत) रखा था। (اسد الغابة، ४/४८०، رقم: ६६२६)

﴿20﴾ हज़रते सय्यिदुना कषीर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम **क़लील** (कोताह दुबले जिस्म का आदमी) था, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्फ़ बज़मे हिदायत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन का नाम **कषीर** (वाफ़िर, ज़ियादा) रखा। (اسد الغابة، ४/४८३، رقم: ६६१९)

﴿21﴾ हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नाम दरयाफ़्त फ़रमाया तो अर्ज की : **शिहाब** (आग का शो'ला) बिन ख़रुफ़ा।

आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (उन का और उन के वालिद का नाम

तब्दील कर दिया और) इरशाद फ़रमाया : तुम **मुस्लिम** (सलामती वाले) बिन अब्दुल्लाह हो ।
(असदुलगाबा, १/२, ६१०, २, ५०३: २५)

﴿22﴾ हज़रते सय्यिदुना **मुतीअ** बिन असद बिन हारिषा **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का नाम **अ़स** (नाफ़रमान) था, शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने आप का नाम **मुतीअ** (फ़रमां बरदार) रखा ।
(मसन्दामा अहमद, حديث مطيع بن اسود، २०३/५، ५०३: १०५)

﴿23﴾ हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से रिवायत है कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के पास एक साहिब आए, आप ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? वोह बोले : **नकिरह** (अजनबी) । आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : बल्कि तुम **मा'रूफ़** (मशहूर) हो ।
(الاصابة، १/६२६, १०५: ८१)

﴿24﴾ हज़रते सय्यिदुना मुहाजिर बिन अबू उमय्या बिन मुगीरा **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** सहाबी हैं, उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उम्मे सलमा **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** के सगे भाई थे, आप का नाम **वलीद** (अभी अभी पैदा शुदा, नौकर) था । सरकारे अ़ली व़कार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने येह नाम नापसन्द फ़रमाया और उन का नाम **मुहाजिर** (हिजरत करने वाला) रखा ।
(असदुलगाबा, २/५, २९२, ५०३: २७)

﴿25﴾ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन बद्र बिन ज़ैद **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** सहाबी हैं, नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में अपनी क़ौम के क़ासिद बन कर आए, आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? अ़र्ज़ की :

अब्दुल उज्ज़ा (उज्ज़ा “कुफ़ार के बुत का नाम” का बन्दा) । सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम बदल कर “अब्दुल अजीज़” (ग़ालिब व ताक़तवर का बन्दा) रख दिया । (الاستيعاب، १२७/३، رقم: १७१९)

﴿26﴾ हज़रते सय्यिदुना अबुल मुत्तरिफ़ सुलैमान बिन सरद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम क़ब्ल अज़ इस्लाम यसार (खुशहाली, फ़राख़ी) था, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम सुलैमान रखा । (الاستيعاب، २१०/२، رقم: १०६१)

﴿27﴾ हज़रते सय्यिदतुना हस्साना मुज़निय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम ज़षामा (सुस्त व काहिल) था, आप उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की सहेली थीं, साहिबे मे’राज صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हस्साना (बहुत हसीनो जमील) नाम अता फ़रमाया । (اسد الغابة، ७३/७، رقم: ६८४२)

﴿28﴾ हज़रते सय्यिदतुना उनकुदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम इनबा (अंगूर) था, मालिके कौषरो जन्नत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन का नाम “इनक़ूदा” (ख़ोशए अंगूर) रखा । (اسد الغابة، २२६/७، رقم: ७१६७)

﴿29﴾ हज़रते सय्यिदतुना मुतीअ़ा बिनते नो’मान बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम आसिया (नाफ़रमान) था, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम “मुतीअ़” (फ़रमां बरदार) रखा । (الطبقات الكبرى لابن سعد، २६४/८، رقم: ४३८६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अब तक सख्ती पाई जाती है

नाम शरिख़ियत पर अषर अन्दाज़ होता है। हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि मेरे दादा **रसूले अकरम** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हुवे। सरकारे आली वकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पूछा : तुम्हारा क्या नाम है ? उन्होंने ने कहा : **हज़्न**। फ़रमाया : “तुम सहल हो।” उन्होंने ने जवाब दिया : जो नाम मेरे बाप ने रखा है, इसे नहीं बदलूंगा। हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا कहते हैं : इस का नतीजा येह हुवा कि हम में अब तक सख्ती पाई जाती है।

(بخاری، کتاب الادب، باب تحویل الاسم... الخ، ۱۰۳/۴، حدیث: ۶۱۹۳)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان ने इस हदीषे पाक के तहत जो बज़ाहत फ़रमाई है, इस से हासिल होने वाले मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :
 ❀ “हज़्न” के “ح” के फ़तहा से सख़्त ज़मीन और सख़्त दिल इन्सान। हुज़्न के “ح” के पेश से रन्जो ग़म। “सहल” के “س” के फ़तहा, “ه” के सुकून से, नर्म ज़मीन और नर्म दिल इन्सान। आसानी व नर्मी को भी “सहल” कहते हैं, चूँकि हज़्न के मा’ना अच्छे नहीं इस लिये आप (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने तब्दीलिये नाम का मश्वरा दिया। ❀ ख़याल रहे कि येह हुज़ूर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) का मश्वरा था अम्र (या’नी हुक्म) न था।
 इस लिये हुज़ूर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) ने कुछ इरशाद न फ़रमाया।

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मश्वरा क़बूल करना मुस्तहब है वाजिब नहीं, लिहाज़ा इस अर्ज़ पर ए'तिराज़ नहीं। رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़्म के बेटे मुसय्यब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हैं और मुसय्यब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बेटे सईद बिन मुसय्यब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हैं, सईद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं कि दादा का अषर हम पोतों तक बाकी रहा। इस से मा'लूम हुवा कि बुरे नामों का बुरा अषर होता है और कभी एक शख्स की ग़लती से पूरे ख़ानदान पर बुरा अषर होता है।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/424,425)

मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अम्जदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मुन्दरिजए बाला हदीष की शर्ह में लिखते हैं : “हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येह नाम बदलना इस्तिहबाबन (या'नी बतौरे मुस्तहब) था और तफ़ावुल (नेक फ़ाल) के तौर पर था। किसी का नाम रखने में लुग़वी मा'ना के साथ मुनासबत का लिहाज़ नहीं होता और इस वाक़िए में हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बात न मानने का अषर पड़ा।” (नुज़हतुल क़ारी, 5/593)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जिन नामों से अपनी ता'रीफ़ निकलती हो वोह न रखे जाएं

ऐसे नाम जिन में तज़कियए नफ़्स और खुद सताई (या'नी अपनी ता'रीफ़) निकलती है, उन को भी हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बदल डाला, बर्रा (नेक, सालेहा) का नाम ज़ैनब (एक हसीन खुशबूदार पौदा) रखा और फ़रमाया कि “अपने नफ़्स का तज़किय्या न करो।”

(مسلم، کتاب الاداب، باب استحباب تغيير الاسم القبيح، ص ١١٨٢، حديث: ٢١٤٢ ملخصاً)

शम्सुद्दीन (दीन का सूरज), जैनुद्दीन (दीन की जीनत), मुहय्युद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाला) फ़ख़रुद्दीन (दीन का फ़ख़र), नसीरुद्दीन (दीन का मददगार), सिराजुद्दीन (दीन का चराग़), निज़ामुद्दीन (दीन का निज़ाम), कुल्बुद्दीन (दीन का महवर व मर्कज़) वगैरहा अस्मा जिन के अन्दर खुद सताई और बड़ी ज़बरदस्त ता'रीफ़ पाई जाती है नहीं रखने चाहिये। रहा ये कि बुजुर्गाने दीन व अइम्मा साबिकीन को इन नामों से याद किया जाता है ! तो येह जानना चाहिये के उन हज़रात के नाम येह न थे बल्कि येह उन के अल्फ़ाब हैं कि जब वोह हज़रात मरातिबे इल्लिया (बुलन्द मर्तबे) और मनासिबे जलीला पर फ़ाइज़ हुवे तो मुसलमानों ने उन को इस तरह कहा और यहां एक जाहिल और अनपढ़ जो अभी पैदा हुवा और उस ने दीन की अभी कोई ख़िदमत नहीं की इतने बड़े बड़े अल्फ़ाजे **फ़ख़ीमा** (वज़नी अल्फ़ाज़) से याद किया जाने लगा ! इमाम मुहय्युद्दीन नववी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** बा वुजूद इस जलालते शान के इन को अगर मुहय्युद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाला) कहा जाता तो इन्कार फ़रमाते और कहते कि जो मुझे मुहय्युद्दीन नाम से बुलाए उस को मेरी तरफ़ से इजाज़त नहीं। (बहारे शरीअत, 3/604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अमीरे अहले सुन्नत का खुद को फ़कीरे अहले सुन्नत कहना

बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** को लोग

“अमीरे अहले सुन्नत” कहते हैं लेकिन आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** बतौर अजिजी खुद को “फ़कीरे अहले सुन्नत” कहते हैं और इस की वज़ाहत यूं फ़रमाते हैं कि “मैं अहले सुन्नत में नेकियों के मुआमले में सब से ज़ियादा मुफ़िलस हूँ।” हालांकि हकीकत यह है कि आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** की हिक्मत व तर्बियत ने लाखों बदकारों को नेकूकार बना दिया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बुरा नाम तब्दील कर के जुवैरिया रखा

हज़रते सय्यिदतुना जुवैरिया **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** का नाम पहले बुरा (नेकी करने वाली) था सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उन का नाम बदल कर जुवैरिया रख दिया, आप नापसन्द करते थे कि यूं कहा जाए : **خَرَجَ مِنْ عِنْدِ بَرَّةَ** या'नी फुलां बुरा के पास से चला गया।

(مسلم، كتاب الآداب، باب استحباب تغيير الاسم القبيح الى حسن، ص ۱۱۸۲، حديث: ۲۱۴۰)

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي काजी सुलैमान बिन ख़लफ़ अल बाजी

फ़रमाते हैं : किसी नाम के ममनूअ होने की दो वुजूहात होती हैं या तो उस में तज़कियए नफ़्स होगा या उस के लफ़ज़ में कोई ख़राबी पाई जाती होगी जैसा कि **خَرَجَ مِنْ عِنْدِ بَرَّةَ** या'नी फुलां बुरा के पास से चला गया में है।

(المنتقى شرح مؤطا امام مالك، كتاب الجامع، باب مايكره من الاسماء ۹۰/ ۴۵۵، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जिन नामों में कम तज़किया हो वोह रख सकते हैं

रुहुल मअानी में है : ज़ाहिर येह है कि जिन नामों में तज़किया होता है वोह मकरूह इस सूरत में होंगे जब कि इन में तज़किया बहुत ज़ियादा महसूस हो मषलन जब नाम की हदीष में मुमानअत आई इस से पहले भी तज़किया पर इस की दलालत वाजेह हो और वोह तज़किया के मा'ना में इस्ति'माल होता हो लिहाज़ा जिन नामों में ता'रीफ़ बहुत ज़ियादा महसूस न हो जैसा कि सईद (बरकत वाला, सआदत मन्द, येह एक सहाबी का नाम भी है) और हसन (अच्छा, जो नवासए रसूल का नाम है) तो ऐसे नाम रखना मकरूह नहीं । (تفسير روح المعاني، جزء ٢٧، ص ٩١)

इस तरह के कई नाम हैं जो हुज़ुरे अन्वर ﷺ ने रखे हालांकि इन में तज़किया का पहलू पाया जाता है, चुनान्वे, हुज़ुरे अक्दस ﷺ ने हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को घुट्टी दी, उन का नाम उन के नाना हज़रते असअद बिन जुरारा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के नाम पर असअद रखा, उन की कुन्यत भी नाना की कुन्यत पर रखी और उन्हें बरकत की दुआ दी । हज़रते अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ 100 हि. में 92 साल से ज़ियादा उम्र पा कर फ़ौत हुवे ।

(الاستيعاب، ١/٧٦، رقم: ٣٣، الاصابة، ١/٣٢٦، رقم: ٤١٤)

﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना ज़ाहिद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का शुमार यमनी सहाबा में होता है आप फ़ारसी थे, आप का नाम यज़ीद (ज़ालिम, सख़्त दिल) था, हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम ज़ाहिद (इबादत गुज़ार, दुन्या से बे रग़बत और आख़िरत की तरफ़ रग़बत करने वाला) रखा।

(الاصابة، ५२१/६، رقم: १३३६)

﴿3﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू हूद सईद बिन यबूअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम “सुर्म” (बे बरकत) था, सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम “सईद” (बरकत वाला) रखा।

(اسد الغابة، ४७०/२، رقم: २१०२)

﴿4﴾ हज़रते सय्यिदुना उफ़ैफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम अज़िब (ग़ैर शादी शुदा) था, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप का नाम “उफ़ैफ़” (उफ़ैफ़ (पाक दामन) की तसगीर) रखा।

(الاصابة، ४२७/६، رقم: ५६०६)

﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना अक़िल बिन अल बुक़ैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ क़दीमुल इस्लाम मुहाजिर सहाबी हैं, दारे अरक़म में सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले और मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से शरफ़े बैअत रखने वाले हैं, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम ग़ाफ़िल (ग़फ़लत वाला) था, जब इस्लाम क़बूल किया तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन का नाम “अक़िल” (अक़लमन्द) रखा।

(الاصابة، ४६६/३، رقم: ६३७९)

«6» मुतीअ बिन अस्वद का नाम असी (नाफरमान) था, रसूले अकरम ﷺ ने इन का नाम मुतीअ (फरमां बरदार) रखा ।
(असद الغابة، ४/६८०، رقم: ६६२६)

«7» बनू गिफार के एक शख्स नबिये अकरम ﷺ के पास आए, आप ﷺ ने दरयाफ्त फरमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? उन्होंने ने अर्ज की : मुहान (मा'मूली इन्सान) । रहमते आलमिय्यान, सरवरे जीशान ﷺ ने फरमाया : बल्कि तुम मुकर्म (इज्जत वाला) हो ।
(असद الغابة، ५/२७१، رقم: ५०७५)

«8» हजरते सय्यिदुना हिशाम बिन अमिर बिन उमय्या رضي الله تعالى عنهما का नाम दौरे जाहिलियत में शिहाब (आग का शो'ला) था, नबिये अकरम ﷺ ने बदल कर "हिशाम" (सखावत) रख दिया ।
(असद الغابة، ५/६१९، رقم: ५३७२)

«9» हजरते सय्यिदतुना मैमूना رضي الله تعالى عنها का नाम बुरा (नेकी) था, सरकारे अबद करार, शाफ़ेए रोजे शुमार ﷺ ने आप का नाम मैमूना (मुबारक, नेक बख़्त) रखा ।
(الاستيعاب، ४/६१८، رقم: ३०३३)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तीन किस्म के नाम न रखें

शारेहे बुखारी अल्लामा इब्ने हजर **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़तहुल बारी में इमाम तबरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** के हवाले से नक़ल करते हैं :

ऐसा नाम नहीं रखना चाहिये (1) जिस के मा'ना बुरे हों या (2) उस में तज़कियए नफ़्स हो (3) उस में सब्ब (गाली, इहानत, ऐब) का मा'ना हो (अल्लामा इब्ने हजर फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं : तीसरी बात पहली से अख़स (या'नी ज़ियादा ख़ास) है) अगर्चे नाम लोगों के लिये अलामत (पहचान) होते हैं इन के ज़रीए सिफ़त की हकीक़त मक्सूद नहीं होती लेकिन कराहत की वजह यह है कि कोई शख़्स उस का नाम सुनेगा तो गुमान करेगा कि उस शख़्स के अन्दर यह सिफ़त मौजूद है।

येही वजह है कि **सरकारे मदीनए मुनव्वरा**, सरदारे मक्काए मुकर्रमा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** किसी शख़्स के नाम को ऐसे नाम से तब्दील फ़रमा देते कि जब उसे उस नाम से बुलाया जाए तो वोह नाम उस पर सादिक् आए, सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुतअद्दिद नाम तब्दील फ़रमाए और जो भी तब्दील फ़रमाए वोह इस तौर पर तब्दील नहीं फ़रमाए कि इन नामों को रखना मन्ज़ है बल्कि इस तौर पर कि इन्हें बदल देना बेहतर है, नाम इस लिये नहीं रखा जाता कि मज़कूरा शख़्स में येह वस्फ़ भी मौजूद है बल्कि इसे दूसरों से अलग पहचान देने के लिये नाम रखा जाता है इसी वजह से मुसलमान बुरे शख़्स का नाम “हसन (या'नी अच्छा)” और

गुनहगार शख्स का नाम “सालेह (या’नी नेक)” रखने को जाइज़ करार देते हैं और इस पर येह बात भी दलालत करती है कि जब हज़रते हज़न ⁽¹⁾ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपना नाम “सहल” से नहीं बदला तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन पर “सहल” नाम रखना लाज़िम नहीं किया, अगर येह नाम रखना उन पर लाज़िम होता तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन की येह बात कि “मैं अपने वालिद का रखा हुवा नाम नहीं बदलूंगा” हरगिज़ क़बूल न फ़रमाते। (فتح الباری لابن حجر، کتاب الادب، باب تحویل الاسم الی اسم، ۴۸۶/۱۱، تحت الحديث: ۶۱۹۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

येह नाम रखना बेहतर नहीं है

हज़रते सय्यिदुना समुरा बिन जुन्दुब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : अपने गुलाम का नाम न यसार रखो, न रबाह, न नजीह और न अफ़लह, क्यूंकि तुम पूछेंगे कि क्या वोह यहां है ? नहीं होगा तो जवाब आएगा : नहीं।

(مسلم، کتاب الآداب، باب كراهة التسمية بالاسماء القبيحة، ص ۱۱۸، حديث: ۲۱۳۷)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الْحَنّانِ इस हदीषे पाक के तहत लिखते हैं : गुलाम से मुराद मुतलक़न लड़का है, ख़्वाह बेटा हो या गुलाम या कोई और वोह जिस का नाम रखना हमारे क़ब्जे में हो, नही तन्ज़ीहा की

دینہ

①हज़रते सय्यिदुना हज़न رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का मुकम्मल वाकिआ इसी किताब के सफ़हा 95 पर मुलाहज़ा कीजिये।

है या'नी येह नाम बेहतर नहीं। **यसार** के मा'ना हैं : फ़राखी, उ़स् (तंगदस्ती) का मुक़ाबिल। **रबाह** के मा'ना हैं : नफ़अ, ख़सारा का मुक़ाबिल। **नजीह** के मा'ना हैं : कामयाब, ज़फ़रयाब। **अफ़्लह** के मा'ना हैं : नजात वाला। येह मुमानअत सिर्फ़ इन नामों में महदूद नहीं बल्कि इन जैसे और नाम जिन के मा'ना में ख़ूबी व उ़मदगी हो, जैसे : **ज़फ़र**, **बरकत** वग़ैरा (अशआ) येह नाम न रखना बेहतर है इस की वजह खुद बयान फ़रमा रहे हैं।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/407)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मन्अ करने की ख़्वाहिश थी लेकिन मन्अ नहीं किया

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : अगर मैं ज़िन्दा रहा तो अपनी उम्मत को इस बात से मन्अ कर दूंगा कि कोई अपना नाम बरकत, नाफ़ेअ (नफ़अ देने वाला) या अफ़्लह (ज़ियादा फ़लाह व कामयाबी पाने वाला) रखे। (रावी का बयान है : मैं नहीं जानता कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन नामों के साथ नाफ़ेअ नाम का ज़िक्र फ़रमाया या नहीं!) पूछा जाएगा कि बरकत यहां मौजूद है? तो इस के जवाब में कहा जाएगा : नहीं। सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पर्दे ज़ाहिरी फ़रमाने तक इन नामों की मुमानअत नहीं फ़रमाई। (الادب المفرد، باب افلح، ص २१६، حديث: ८३३)

इमाम अबू जा'फ़र तह़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي हदीषे पाक के इस हिस्से “अगर मैं आइन्दा साल तक ज़िन्दा रहा तो ज़रूर इन

नामों (या'नी अफ़लह, नाफ़ेअ, बरकत, यसार) को रखने से मन्अ कर दूंगा” के तहत फ़रमाते हैं : इस में इस बात पर दलालत है कि इन नामों का रखना हराम नहीं है क्योंकि अगर हराम होता तो रसूलुल्लाह ﷺ ज़रूर इन के रखने से मन्अ फ़रमा देते और मन्अ करने को दूसरे वक्त तक मुअख़्ख़र न फ़रमाते और एक रिवायत में है कि “आप मन्अ करने से ख़ामोश रहे हत्ता कि आप का विसाल हो गया” इस में इस बात पर दलालत है कि नबिय्ये करीम ﷺ की जानिब से मुमानअत इन नामों को शामिल नहीं है, जब मुआमला ऐसा है तो इन नामों का रखना मुबाह रहेगा ।

(مشکل الآثار، ج ١، جزء ٢، ص ٢٠٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बस्ती का नाम पसन्द आता तो खुश होते

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्काए मुकर्रमा ﷺ जब किसी बस्ती में जाते तो उस का नाम पूछते, अगर उस का नाम पसन्द फ़रमाते तो खुश होते और उस की खुशी आप ﷺ के चेहरए अन्वर में देखी जाती, अगर उस का नाम नापसन्द फ़रमाते तो आप ﷺ के चेहरए अक्दस में उस की नापसन्दीदगी महसूस होती ।

(ابو داؤد، کتاب الطب، باب فی الطیرة، ٢٥/٤، حدیث: ٣٩٢٠)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद

यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنّان लिखते हैं : हमारे हां पंजाब में बा'ज देहात के नाम हैं : नूर पूर, मदीना, जमालपूर ऐसे नाम बड़े मुबारक हैं

बा'ज बस्तियों के नाम हैं : शैतानिया, खूनी चोक वगैरा येह नाम अच्छे नहीं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बस्तियों के बुरे नाम भी नापसन्द फ़रमाते थे। (मिरआतुल मनाज़िह, 6/264)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

बस्तियों और अ़लाक़ों के नाम भी तब्दील फ़रमा देते

जनाबे रहमते आलमिय्यान्, मक्की मदनी सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ज़मीनों, वादियों और क़बाइल के बुरे नाम भी तब्दील फ़रमा दिया करते थे, चुनान्चे, इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं : आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अफ़िरह ज़मीन (बन्जर ज़मीन) का नाम ख़ज़िरह (सर सब्ज़ ज़मीन) रखा, शा'बुज़्ज़लालह (गुमराही की वादी) नामी वादी का नाम शा'बुल हुदा (हिदायत की वादी) रखा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बनू ज़न्यह (हराम की अवलाद) का नाम तब्दील फ़रमा कर बनुर्रशदह (हलाल ज़ादे) रखा और बनू मुग़वियह (गुमराह कुन जगह) को बनू रिशदह (हिदायत वाली जगह) का नाम अ़ता फ़रमाया।

(अबु दाउद, کتاب الادب, باب فی تغییر الاسم القبیح ۳۷۶/۴, حدیث: ۴۹۰۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

नाम के साथ अ़लाक़े का नाम भी बदल दिया

हज़रते वहब बिन अ़म्र बिन सा'द बिन वहब अल जुहनी बयान करते हैं कि उन के वालिद ने अपने दादा से रिवायत की,

कि दौरे जाहिलिय्यत में उन को ग़य्यान कहा जाता था, जब वोह नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हुवे आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है ? अर्ज़ की : ग़य्यान (नामुराद) । पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन का नाम “रशदान” (कामयाब) रखा, और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने दरयाफ़्त फ़रमाया तुम्हारे अहलो इयाल कहां रहते हैं ? अर्ज़ की : वादिये ग़वा (नामुराद वादी) में । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : वोह “रशाद” (कामयाब वादी) में रहते हैं । (आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन के बुरे नाम के साथ उन की वादी का बुरा नाम भी बदल दिया) वोह शहर आज तक “रशाद” के नाम से पहचाना जाता है ।⁽¹⁾

(الاصابة، ४०३/२، رقم: २६६०، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

لَدِينِهِ

①.....सरकारे मदीना, सुरुरे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुबारक अदा को अदा करते हुवे शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने भी बा'ज़ शहरों के नाम (तन्ज़ीमी तौर पर) तब्दील किये हैं मषलन सियालकोट का नाम अपने पीरो मुर्शिद सय्यिदी कुब्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنَى की निस्बत से “ज़ियाकोट”, फैसलाबाद का नाम मुह़दिषे आ'ज़म पाकिस्तान हज़रते अल्लामा मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد की निस्बत से “सरदाराबाद”, लाड़काना का नाम मुफ़्तये दा'वते इस्लामी मौलाना मुहम्मद फ़रूक़ अत्तारी मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنَى की निस्बत से “फ़रूक़ नगर” और हैदराबाद का नाम महबूबे अत्तार मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी व रुक़ने शूरा हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِ की निस्बत से “ज़म ज़म नगर” रखा ।

चश्मे का नाम तब्दील फरमा दिया

एक ग़ज़वे में रसूले षक़लैन, सुल्ताने कौनैन, रहमते दारैन
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ “बैसान” नामी खारी पानी के चश्मे से गुज़रे।
 आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : येह नो’मान मीठे पानी का
 चश्मा है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उस का नाम बदल दिया
 फिर हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने वोह चश्मा ख़रीद
 कर सदका कर दिया, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : त़लह़ा ! तुम तो फ़य्याज़ हो, इसी
 लिये हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को “त़लह़तुल फ़य्याज़”
 कहा जाता था। (الاصابة، ३/४३०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुंवें का नाम तब्दील फरमा दिया

हज़रते सय्यिदुना अबू उमय्या मख़जूमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का
 मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में एक कुंवां था जिस का नाम
 “असीर (मुश्किल) था, सरकारे आली वकार, मदीने के ताजदार
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस का नाम “यसीरह (आसान)” रखा।

(النهاية فى غريب الحديث والأثر للجزرى، باب العين مع السين ३/२१३)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात के पेशे
 नज़र हमें चाहिये कि हम न सिर्फ़ अपने बच्चों का नाम शरीअत
 के मुताबिक़ रखें बल्कि खुद अपने नाम पर भी ग़ौर कर लें,
 अगर मा’नवी तौर पर नाम ग़लत और ख़िलाफ़े शरीअत हो तो
 उ-लमाए अहले सुन्नत से मश्वरे के बा’द शरअन जाइज़ और

अच्छा नाम रख लें, इस के साथ साथ अपनी दुकान, घर, महल्ले, गाऊं, कारखाने, कारखाने में बनने वाली चीजों (Products) का नाम भी शरीअत के मुताबिक कर लेना चाहिये।

“कादिरी अगरबत्ती” से “कौमी अगरबत्ती”

दा'वते इस्लामी के बनने से बहुत पहले की बात है कि शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने रिज़्के हलाल के हुसूल के लिये अगरबत्ती तय्यार कर के फ़रोख़्त करने का काम शुरूअ किया और उस का नाम “कादिरी अगरबत्ती” रखा। अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** कुछ इस तरह फ़रमाते हैं कि एक बार मैं ने कादिरी अगरबत्ती के पेकेट को ज़मीन पर पड़ा पाया जो बुरी तरह कुचला हुवा था, मैं डर गया कि कहीं ग़ौषे पाक **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने मुझ से पूछ लिया कि कारोबार चमकाने के लिये तुम्हें मेरा ही नाम मिला था ! मेरा नाम चन्द सिक्कों की खातिर ज़मीन पर रौंदने के लिये छोड़ दिया ! उसी वक़्त मैं ने दिल में ठान ली कि मैं अपनी अगरबत्ती का नाम “कौमी अगरबत्ती” रखूंगा, यूं “कादिरी अगरबत्ती” कौमी अगरबत्ती हो गई।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुनिया की हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (ALPHABETS) का अदब करना चाहिये क्यूं कि साहिबे तफ़्सीरे सावी शरीफ़ के क़ौल के मुताबिक़ दुनिया में बोली जाने वाली तमाम ज़बानें इल्हामी हैं। (तफ़्सीर सावी, १/३०) अगरबत्ती का पेकेट ज़मीन पर फेंकने में अगर्वे अमीरे अहले सुन्नत का अमल दख़ल नहीं था लेकिन आप की अक़ीदत ने

गवारा न किया कि मेरे ग़ौषे पाक की प्यारी प्यारी निस्बत “क़ादिरी” यूँ क़दमों तले रौंदी जाए, चुनान्वे आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने अगरबत्ती का नाम ही तब्दील कर लिया। अमीरे अहले सुनत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के इस अन्दाज़ में ऐसे इस्लामी भाइयों के सीखने के लिये बहुत कुछ है जो मदीना स्टोर, क़ादिरी होटल, ग़ौषिय्या जनरल स्टोल, अत्तारी सुपर स्टोर वग़ैरा के नाम से दुकानें खोलते हैं इसी नाम के लिफ़ाफ़े छपवाते हैं फिर येह लिफ़ाफ़े ज़मीन पर गिरे पड़े भी दिखाई देते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

लिबास का भी नाम रखते

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** नया कपड़ा चाहे इमामा हो या क़मीस पहनते तो उस का नाम रखते।⁽¹⁾ हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के एक इमामा शरीफ़ का नाम “सहाब (बादल)” था। (شرح الزرقانی علی المواهب، فی تکمیل، ۹۷/۵)

चश्मे का नाम रखा

हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने ख़ैबर के मक़ाम पर वाकेअ़ एक चश्मे का नाम **قِسْمَةُ الْمَلَائِكَةِ** (फ़िरिश्तों का हिस्सा / फ़िरिश्तों की तक्सीम)” रखा।

(خلاصة الوفا بأخبار دار المصطفى، الفصل الثامن، ۲/ ۱۱۷۹)

مدینہ

①: ابو داؤد، کتاب اللباس، باب ما یقول إذا لبس ثوباً جدیداً، ۵۹/۴، حدیث: ۴۰۲۰

रहमते कौनैन ﷺ की मुबारक सुवारियों के नाम

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल **ﷺ** की सुवारी के घोड़ों के नाम “लहीफ़ (लम्बी दुम वाला)” ⁽¹⁾ “ज़रिब (मज़बूत व ताक़तवर)”, “लिज़ाज़ (तेज़ रफ़्तार)” ⁽²⁾ और सियाह घोड़ा था जिसे “सक्ब (तेज़ रफ़्तार)” कहा जाता था और ज़ीन का नाम “दाज (कुशादा)” था, एक सियाही माइल सफ़ेद ख़च्चर था जिसे “दुलदुल” कहा जाता था, एक ऊंटनी जिसे “कस्वा (तेज़ चलने वाली)” के नाम से मौसूम किया जाता था जब कि दराज़ गोश का नाम “या'फ़ूर (तेज़ रफ़्तार)” था।

(المعجم الكبير للطبرانی، باب العين، ۹۲/۱۱، حدیث: ۱۱۲۰۸)

मुबारक बकरियों के नाम

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा **ﷺ** की दस दूध देने वाली बकरियां थीं :
(1) अज्वह (2) ज़म ज़म (3) सुक़्या (4) बरकत (5) वर्सत (6) इतलाल (7) इतराफ़ (8) कुमरह (9) गौषह या गौषिय्यह (10) और एक बकरी का नाम युम्न था।

(سبل الہدی والرشاد، الباب السادس فی شياہہ ، ومنائحه ﷺ، ۷/ ۴۱۲)

हुज़ूरे अनवर ﷺ की मुख़्तलिफ़ अश्या के नाम

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक **ﷺ** की तल्वार जिस का दस्ता और दस्ते का

مدینہ

①: الجامع الصغير، جزء ۲: ص ۴۲۵، حدیث: ۶۸۵۵

②: فیض القدیر، حرف الکاف، باب کان وہی شمائل شریفہ ۵۰/ ۲۲۵، حدیث: ۶۸۵۶

किनारा दोनों चांदी के थे उस का नाम “जुलफिकार” था, कमान का नाम “सदाद”, तरकश (तीर रखने के खोल) का नाम “जुमअ”, जिरह जो तांबे से मुजय्यन थी उस का नाम “जातुल फुजूल”, “नब्आ” नामी नेजा, एक ढाल का नाम “जकन” और एक सफेद रंग की ढाल जिस का नाम “मूजिज” था, चटार्ड का नाम “कज” छड़ी का नाम “नमिर” मशकीजे का नाम “सादिर” और आईने को “मुदिल्ला” कहा जाता था, कैंची का नाम “जामेअ” और तल्वार का नाम “ममशूक” था।

(معجم كبير، ٩٢/١١، حديث: ١١٢٠٨ و مجمع الزوائد ٤٩٥/٥، حديث: ٩٤٠٨)

हुजूर ﷺ के मुबारक बरतनों के नाम

एक बड़ा सा पियाला जिस का नाम “सअह (कुशादा)” था, दूसरा पियाला जो बहुत बड़ा था जिसे चार आदमी उठाते थे उस का नाम “गुरा (चमकदार)” था।

(الجامع الصغير، جزء ٢، ص ٤٢٥، حديث: ٦٨٥٩)

तीसरे पियाले का नाम “रय्यान (भरा हुवा)”, चौथे का नाम “मुगीष (मददगार)” और पांचवें का नाम “मुजब्बब (चांदी चढ़ा हुवा)” था जिस पर चांदी के तार लगे हुवे थे।

(فيض القدير، حرف الكاف، باب كان وهي شمائل شريفة ٢٢٦/٥٠، حديث: ٦٨٥٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बढ़ शुगुनी की वजह से नाम न बदलें

अगर कोई शख्स ज़ियादा बीमार रहता हो, तंग दस्त हो, मुसलसल नाकामियों ने उसे घेर रखा हो तो शैतान उसे वस्वसा

दिलाता है कि येह सारी मुसीबतें तुम्हारे नाम की वजह से हैं लिहाज़ा तुम अपना नाम तब्दील कर लो हालांकि उस का नाम बड़ी अच्छी निस्बत वाला होता है, बा'ज अवकात येह बात अमलिय्यात करने वाले भी कह देते हैं चुनान्चे, वोह शख्स अपना शरअन जाइज और अच्छे मा'ना वाला बल्कि अच्छी निस्बत वाला नाम भी तब्दील कर देता है। ऐसा करना नाम से बद शुगूनी लेने के मुतरादिफ़ है और बद शुगूनी लेना शैतानी काम है जैसा कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **يَا'نِي اَلْبَيَاقَةُ وَالطَّيْرَةُ وَالطَّرْفُ مِنَ الْجِبْتِ** या'नी अच्छा या बुरा शुगून लेने के लिये परन्दा उड़ाना, बद शुगूनी लेना और तर्क (या'नी कंकर फेंक कर या रैत में लकीर खींच कर फ़ाल निकालना) शैतानी कामों में से है। (अबु दाउद ४०६०/२२, हदीथ: ३९०७)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तारीख़ी नाम रखना

कई लोग तारीख़ के हिसाब से नाम रखने पर बहुत जोर देते हैं या'नी बच्चा जिस तारीख़ व सिन में पैदा हुवा उस का हिसाब लगा कर नाम रखा जाता है। अगर्चे इल्मुल आ'दाद के लिहाज़ से नाम रखना बुजुर्गों से षाबित है लेकिन बुजुर्गाने दीन अपना तारीख़ी नाम अस्ल नाम से अलग रखते थे। बहर हाल अगर कोई तारीख़ के हिसाब से नाम रखना चाहे ताकि सिने विलादत भी महफूज़ हो जाए तो रख सकता है लेकिन इस की कोई फ़ज़ीलत नहीं है, बेहतर येही है कि किसी नबी **عَلَيْهِ السَّلَام**,

किसी सहाबी या किसी वली के बा बरकत नाम पर नाम रखें।

आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से किसी ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! मेरे

भतीजा पैदा हुवा है, इस का कोई तारीखी नाम तजवीज़ फ़रमा दें।

इरशाद फ़रमाया : तारीखी नाम से क्या फ़ाइदा ? नाम वोह हों जिन के अहादीष में फ़ज़ाइल आए हैं। मेरे और भाइयों के जितने लड़के पैदा हुवे मैं ने सब का नाम “**मुहम्मद**” रखा, येह और बात है कि येही नाम **तारीखी** भी हो जाए। हामिद रज़ा ख़ां का नाम मुहम्मद है और इन की विलादत सि. **1292** हि. में हुई और इस नाम मुबारक के अ़दद भी बानवे हैं। एक दिक्क़त (या’नी दुश्वारी) तारीखी नाम में येह है कि अस्माए हुस्ना से एक या दो जिन के आ’दाद मुवाफ़िक़े अ़ददे नामे क़ारी (या’नी पढ़ने वाले के नाम के आ’दाद के मुताबिक़) हों। अ़ददे नाम दो चन्द (या’नी दुगने) कर के पढ़े जाते हैं। वोह क़ारी को इस्मे आ’ज़म का फ़ाइदा देते हैं, तारीखी नाम से मिक्क़दार बहुत ज़ियादा हो जाएगी मषलन अगर किसी की विलादत इस सि. **1329** हि. में हुई तो इस के मुताबिक़ अ़दद के अस्माए हुस्ना **2658** बार पढ़े जाएंगे और मुहम्मद नाम होता तो एक सो चौरासी (**184**) बार, दोनों में किस क़दर फ़र्क़ हुवा ! (मल्फूज़ाते आ’ला हज़रत, स. **73**)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

क़ुरआन से नाम निकालना

बा’ज़ लोग क़ुरआने मजीद से बच्चों का नाम निकालते हैं, अगर वोह नाम क़ुरआने पाक में किसी नबी या नेक व सालेह आदमी का है तब तो कोई हरज नहीं लेकिन बा’ज़ अवकात वोह क़ुरआने पाक से कोई ऐसा लफ़्ज़ नाम के लिये मुन्तख़ब कर लेते हैं जिसे मा’नवी ख़राबी की वजह से नाम के तौर पर इस्ति’माल

नहीं किया जा सकता। मषलन पाकिस्तान के एक देहात में एक औरत जो ज़रा कुरआने करीम पढ़ना जानती थी उस के यहां यके बा'द दीगरे तीन बेटियां पैदा हुई उस ने खुद को पढ़ा लिखा समझते हुवे बच्चों के नाम तजवीज़ करने के लिये कुरआने करीम से **सूरए कौषर** का इन्तिखाब किया चुनान्चे, बड़ी बच्ची का नाम **कौषर** रखा, दूसरी का नाम **वनहर** तजवीज़ किया और तीसरी का नाम **अबतर** मुकर्रर किया। कौषर के मा'ना तो ब हैषिय्यते नाम किसी हद तक दुरुस्त भी हैं लेकिन वनहर का मा'ना है "और तुम कुरबानी करो" जब कि आखिरी लफ़्ज़ अब्तर के मा'ना हैं : "खैर से महरूम रहने वाला" जो किसी भी तरह नाम रखने के लिये मुनासिब ही नहीं मगर जहालत का क्या इलाज ? इसी तरह एक बच्ची का नाम रखा गया मुज़बज़बीन। पूछा गया : येह क्या नाम है ? जवाब मिला : कुरआन शरीफ़ में है, हालांकि मुज़बज़बीन का लफ़्ज़ उन लोगों के लिये इस्ति'माल हुवा जो कुफ़्रो ईमान के बीच में डगमगा रहे हैं, न ख़ालिस मोमिन और न खुले काफ़िर हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 196)

दारुल इफ़ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मुझे किसी ने फ़ोन पर बताया कि उस ने अपनी बेटी का नाम कुरआन से निकाल कर रखा है। जब नाम पूछा तो कहा : "**ज़ानिया**" (نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِكَ) इसी तरह एक शख़्स ने अपने बेटे का नाम "**ख़न्नास**" (وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی) रखा।

बहर हाल ऐसे लोगों को बतौरै इस्लाह कुछ कहा जाए तो समझते हैं कि कुरआने करीम से रखे हुवे नामों पर ए'तिराज़

किया जा रहा है ! हालांकि कुरआने करीम से नाम तजवीज़ करने के भी कुछ उसूल हैं वरना तो कुरआन में हिमार (गधा), कल्ब (कुत्ता), खिन्ज़ीर (सुवर), बकरह (गाए), फिरऔन (खुदाई का दा'वा करने वाला मशहूर बादशाह), हामान (मशहूर काफ़िर) वगैरा के अल्फ़ाज़ भी आए हैं तो क्या इन के मा'ना और निस्बत जानने के बा'द भी कोई इन अल्फ़ाज़ को अपने बच्चे या बच्ची का नाम रखने के लिये इस्ति'माल करने पर तय्यार होगा ? यकीनन नहीं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नेक शख्स के नाम पर नाम रखने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है :

مَا مِنْ قَوْمٍ يَكُونُ فِيهِمْ رَجُلٌ صَالِحٌ فَيَمُوتُ فَيُخَلَّفُ فِيهِمْ بَمَوْلُودٍ
فَيَسْمُوْنَهُ بِاسْمِهِ إِلَّا خَلَفَهُمُ اللَّهُ بِالْحُسْنَى

या'नी : जिस क़ौम में कोई नेक शख्स इन्तिक़ाल कर जाए, उस के इन्तिक़ाल के बा'द उस क़ौम में कोई बच्चा पैदा हो, और वोह उसी बुजुर्ग शख्सियत के नाम पर उस बच्चे का नाम रखें, तो **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** इस अच्छे नाम रखने के सबब उन लोगों के लिये उस बच्चे में भी वोही नेक सिफ़ात पैदा फ़रमा देगा । (ابن عساکر، ٤٣/ ٤٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नेक लोगों के नाम पर नाम रखो

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : नेक लोगों के नाम पर नाम रखो और अपनी हाज़तें अच्छे चेहरे वालों (या'नी नेक लोगों) से त़लब करो ।

(المسند الفردوس، ٢٠/ ٥٨، حدیث: ٢٣٢٩)

नबियों के नाम पर नाम रखो

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के अस्माए मुबारका और सहाबए किराम व ताबेईने इज्जाम और औलियाए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के नाम पर नाम रखने चाहिये, जिस का एक फ़ाइदा तो येह होगा कि बच्चे का अपने अस्लाफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ से रूहानी तअल्लुक काइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों से मौसूम होने की बरकत से बच्चे की ज़िन्दगी पर मदनी अषरात मुस्तब होंगे। तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) के नाम पर नाम रखो और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक नामों में ज़ियादा प्यारे नाम अब्दुल्लाह व अब्दुरहमान हैं और सच्चे नाम हारिष और हमाम हैं और “हर्ब” व “मुरा” बुरे नाम हैं।”

(अबु दाउद, किताब़ अलअदब, बाब फ़ी तग़ीयर अलअस्मा, ३७६/६०, हिदीथ: ६९००)

हज़रते अल्लामा अब्दुररुफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي इस हदीष के तहूत लिखते हैं : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के नामों पर नाम रखने की तरगीब इस लिये दिलाई गई क्यूंकि येह हज़रात इन्सानों के सरदार हैं, इन के अख़्लाक़ सब से बेहतर, इन के आ'माल तमाम आ'माल से अच्छे और इन के नाम तमाम नामों से अफ़ज़ल हैं लिहाज़ा इन के नाम पर नाम रखना शरफ़ व सअदत का बाइष है।

(फ़िय़ अल्दीर, ३/३२६)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَقَّان इस हदीषे पाक के तहूत लिखते हैं : हारिष के मा'ना हैं कमाऊ। हर्ष कहते हैं कमाई को। “हमाम” के मा'ना

हैं क़स्द व इरादा करने वाला और हम्म कहते हैं इरादे को । कोई शख्स कमाई या इरादे से ख़ाली नहीं होता लिहाज़ा येह नाम बहुत सच्चे हैं, नाम मुताबिक़ काम के हैं । (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) हर्ब के मा'ना हैं जंग व खूँ रैज़ी, मुर्रा के मा'ना हैं जगड़ालू या कड़वी तबीअत का आदमी । मुर्रा शैतान का नाम भी है ।

(मिरआतुल मनाज़ीह, 6/425)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

महबूबाने खुदा के नामों पर नाम रखना मुस्तहब है

फ़ी ज़माना येह रवाज भी जोर पकड़ चुका है कि अपने बच्चों का नाम रखने के लिये नाविलों, टीवी डिरामों और फ़िल्मों के अदाकारों के नाम भी चुन लिये जाते हैं, हालांकि मुस्तहब येह है कि **अब्बाह** वालों के नाम पर नाम रखा जाए, चुनान्चे, आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** लिखते हैं : हदीष से षाबित कि महबूबाने खुदा अम्बिया व औलिया **وَالشُّنَا عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالشُّنَا** के अस्माए तय्यिबा पर नाम रखना मुस्तहब है जब कि इन के मख़सूसात से न हो । ⁽¹⁾ (फ़तावा रज़विय्या, 24/685) बहारे शरीअत में है : अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के अस्माए तय्यिबा और सहाबा व ताबेईन व बुजुर्गाने दीन के नाम पर नाम रखना बेहतर है । उम्मीद है कि इन की बरकत बच्चे के शामिले हाल हो । (बहारे शरीअत, 3/356)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

لَدِينِهِ

1....मषलन मुहर्रिम : हराम करने वाला

नवाशों का नाम हसन और हुसैन रखा

हदीष में है सय्यिदुना इमामे हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की विलादत पर हुजुरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले गए और इरशाद फ़रमाया : मुझे मेरा बेटा दिखाओ ! तुम ने उस का क्या नाम रखा ? मौला अली (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ) ने अर्ज़ की : हर्ब । फ़रमाया : नहीं बल्कि वोह हसन है । फिर सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की विलादत पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : मुझे मेरा बेटा दिखाओ ! तुम ने उस का क्या नाम रखा ? मौला अली (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ) ने अर्ज़ की : हर्ब । फ़रमाया : नहीं बल्कि वोह हुसैन है, फिर इमामे मोहसिन की विलादत पर वोही फ़रमाया तो मौला अली (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ) ने वोही अर्ज़ की । फ़रमाया : नहीं बल्कि वोह मोहसिन है फिर फ़रमाया : मैं ने अपने बेटों के नाम दावूद (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ) के बेटों पर रखे ।

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند علي ابن ابي طالب، ٢١١/١، ٢١٢، حديث: ٢٧٦٩ واسد الغابة ٥٠/٧٧، رقم: ٤٦٨٨)

शबर, शुबैर, मुशबिर, हसन, हुसैन, मोहसिन इन से हम वज़्न व हम मा'ना हैं, इस से मौला अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ को तम्बीह हुई कि अवलाद के नाम अख़्यार के नामों पर रखने चाहिये लिहाज़ा इन के बा'द अपने साहिबज़ादों के नाम अबू बक्र, उमर, उषमान, अब्बास वैग़रहा रखे । (फ़तावा रज़विय्या, 29/80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अपने शहजादे का नाम हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के नाम पर रखा

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान फ़रमाते हैं कि शहनशाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : रात मेरे हां बेटा हुवा है, मैं ने अपने बाप (या'नी ख़लीलुल्लाह हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام) के नाम पर उस का नाम इब्राहीम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) रखा है ।

(مسلم، کتاب الفضائل، باب رحمته ﷺ الصبيان - الخ ص ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱)

जब कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्शरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मेरे हां बच्चे की विलादत हुई, मैं उसे नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास लाया, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस का नाम इब्राहीम रखा, उसे खजूर चबा कर घुट्टी दी, उस के लिये बरकत की दुआ की और मेरे हवाले कर दिया । हज़रते इब्राहीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सब से बड़े बेटे थे ।

(بخاری، کتاب العقیقة، باب تسمیة المولود غداة یولد لمن لم یعق وتحنیکه ، ۵۴۶/۳، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

खुलाशः किताब

❀ बच्चे का अच्छा नाम रखना चाहिये ❀ मैदाने महशर में दुनिया में रखे गए नाम से पुकारा जाएगा ❀ सातवें दिन नाम रखना बेहतर है पहले भी रखा जा सकता है ❀ नाम रखना वालिद की ज़िम्मेदारी है ❀ बच्चे का नाम मुन्तख़ब करते वक़्त शरई अहकाम

को पेशे नज़र रखना चाहिये ❀ नाम रखने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहियें ❀ कुछ नाम ऐसे हैं जिन का रखना अफ़ज़ल, कुछ का रखना जाइज़, कुछ नाम ना मुनासिब और कुछ नाजाइज़ हैं ❀ अगर किसी मदनी मुन्ने का नाम “अब्द” से शुरू करना हो तो सब से अफ़ज़ल नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान हैं ❀ मुहम्मद नाम बड़ा प्यारा है येह नाम रखने के बड़े फ़वाइद व षमरात हैं ❀ मुहम्मद बख़्श, अहमद बख़्श, गुलामे नबी वगैरा नाम रखना जाइज़ है ❀ मुहम्मद नबी, अहमद नबी, नबिय्युज्मान, मुहम्मद रसूल, अहमद रसूल, नाम रखना जाइज़ नहीं ❀ मुईजुद्दीन के मा’ना हैं “दीन को पनाह देने वाला” और अपना नाम ऐसा रखना सख़्त अज़ीम तज़क़ियाए नफ़्स व खुद सताई है और वोह हराम है (फ़तावा रज़विय्या, 24/671) ❀ ताहा, यासिन नाम भी न रखे जाएं ❀ ग़फ़ुरुद्दीन (नाम) भी सख़्त क़बीह व शनीअ है ❀ नामों की एक किस्म कुफ़्फ़ार से मुख़तस्स है जैसे ज़िज़िस, पुतरुस और यूहन्ना वगैरा इस नौअ (या’नी किस्म) के नाम मुसलमानों के लिये रखने जाइज़ नहीं ❀ बुरे नाम को बदल देना चाहिये ❀ अपने घर, महल्ले, दुकान और फ़ेकटरी वगैरा का नाम भी अच्छा रखना चाहिये ❀ ऐसे नाम नहीं रखने चाहियें जिन में खुद सताई बहुत नुमायां होती हो ❀ नेकों के नाम पर नाम रखना बाइषे बरकत है ❀ हत्तल मक़दूर बुजुर्ग़ाने दीन से नाम रखवाना चाहिये ❀ लोगों के बुरे नाम रखना जाइज़ नहीं है ❀ कुन्यत रखना सुन्नत है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बच्चों और बच्चियों के लिये 538 प्यारे प्यारे नाम

बच्चों के लिये 391 प्यारे प्यारे नाम

“अब्द” की इज़ाफ़त के साथ 59 रहमत भरे नाम

عَبْدُ اللَّهِ	(अब्दुल्लाह = अब्बाह का बन्दा)
عَبْدُ الرَّحْمَنِ	(अब्दुर्रहमान = “बहुत मेहरबान” का बन्दा)
عَبْدُ الْأَحَدِ	(अब्दुल अहद = वाहिद व यक्ता का बन्दा)
عَبْدُ الْبَارِي	(अब्दुल बारी = बनाने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَاسِطِ	(अब्दुल बासित = कुशादगी वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَاقِي	(अब्दुल बाकी = हमेशा रहने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَصِيرِ	(अब्दुल बसीर = देखने वाले का बन्दा)
عَبْدُ التَّوَّابِ	(अब्दुत्तव्वाब = तौबा क़बूल करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْجَبَّارِ	(अब्दुल जब्बार = अज़मत वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْجَلِيلِ	(अब्दुल जलील = बुजुर्गी वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَسِيبِ	(अब्दुल हसीब = काफी होने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَفِیْظِ	(अब्दुल हफ़ीज़ = हिफ़ाज़त करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَقِّ	(अब्दुल हक़ = खुदाई के लाइक़ का बन्दा)
عَبْدُ الْحَكَمِ	(अब्दुल हक़म = फैसला करने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْحَكِيمِ

(अब्दुल हकीम = हिक्मत वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْحَلِيمِ

(अब्दुल हलीम = हिल्म (या'नी ज़ब्त व तहम्मुल) वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْحَمِيدِ

(अब्दुल हमीद = खूबियों वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْحَيِّ

(अब्दुल हय्य = हमेशा ज़िन्दा रहने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْخَالِقِ

(अब्दुल ख़ालिक् = पैदा करने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الرَّافِعِ

(अब्दुर्राफ़ेअ = बुलन्द करने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الرَّحِيمِ

(अब्दुर्रहीम = "रहमत वाले" का बन्दा)

عَبْدُ الرَّزَّاقِ

(अब्दुर्रज़ाक् = रिज़्क देने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الرَّشِيدِ

(अब्दुर्रशीद = सिधी तदबीर वाले का बन्दा)

عَبْدُ الرَّءُوفِ

(अब्दुर्रऊफ़ = निहायत मेहरबान का बन्दा)

عَبْدُ السَّلَامِ

(अब्दुस्सलाम = सलामती देने वाले का बन्दा)

عَبْدُ السَّمِيعِ

(अब्दुस्समीअ = सुनने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الشَّكُورِ

(अब्दुश्शकूर = क़द्र फ़रमाने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الصَّبُورِ

(अब्दुस्सबूर = बुर्दबार (या'नी बा वुजूद कुदरते कामिला के गुनाहों पर जल्दी सज़ा न देने वाले) का बन्दा)

عَبْدُ الصَّمَدِ

(अब्दुस्समद = बे नियाज़ का बन्दा)

عَبْدُ الْعَزِيزِ

(अब्दुल अज़ीज = इज़्ज़त वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْعَظِيمِ

(अब्दुल अज़ीम = अज़मत वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْعَلِيمِ

(अब्दुल अलीम = इल्म वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْغَفَّارِ

(अब्दुल ग़फ़्फ़ार = बहुत बख़्शाने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْغَفُورِ	(अब्दुल ग़फ़ूर = बख़्शाने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْغَنِيِّ	(अब्दुल ग़नी = हर चीज़ से बेपरवा का बन्दा)
عَبْدُ الْفَتَّاحِ	(अब्दुल फ़त्ताह = बेहतरीन फैसला करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْقَادِرِ	(अब्दुल क़ादिर = कुदरत वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْقُدُّوسِ	(अब्दुल कुद्दुस = हर ऐब से पाक का बन्दा)
عَبْدُ الْقَوِيِّ	(अब्दुल क़वी = कुव्वत देने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْكَبِيرِ	(अब्दुल कबीर = सब से बड़े का बन्दा)
عَبْدُ الْكَرِيمِ	(अब्दुल करीम = बहुत करम फ़रमाने वाले का बन्दा)
عَبْدُ اللَّطِيفِ	(अब्दुल लतीफ़ = लुत्फ़ो करम करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْمَاجِدِ	(अब्दुल माजिद = बुजुर्गी वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْمَتِينِ	(अब्दुल मतीन = कुव्वत वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْمُجِيبِ	(अब्दुल मुजीब = दुआएं क़बूल करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْمَجِيدِ	(अब्दुल मजीद = इज़्ज़त वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْمَلِكِ	(अब्दुल मलिक = बादशाह का बन्दा)
عَبْدُ الْمُؤْمِنِ	(अब्दुल मोमिन = अमन देने वाले का बन्दा)
عَبْدُ النَّافِعِ	(अब्दुन्नाफ़ेअ = नफ़अ देने वाले का बन्दा)
عَبْدُ النُّورِ	(अब्दुन्नूर = नूर वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْوَاجِدِ	(अब्दुल वाजिद = कुदरत वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْوَاحِدِ	(अब्दुल वाहिद = ज़ात व सिफ़ात में यक्ता का बन्दा)

عَبْدُ الْوَارِثِ

(अब्दुल वारिष = वारिष (या'नी हमेशा बाकी रहने वाले) का बन्दा)

عَبْدُ الْوَاسِعِ

(अब्दुल वासिअ = वुस्अत देने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْوُدُودِ

(अब्दुल वदूद = बहुत दोस्त रखने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْوَكِيلِ

(अब्दुल वकील = कारसाज (या'नी काम बनाने वाले) का बन्दा)

عَبْدُ الْوَلِيِّ

(अब्दुल वली = हिमायती का बन्दा)

عَبْدُ الْوَهَّابِ

(अब्दुल वहहाब = बहुत देने वाले का बन्दा)

عَبْدُ الْهَادِي

(अब्दुल हादी = हिदायत देने वाले का बन्दा)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे अक्दस

अर्ज : हुजूर अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم का नामे अक्दस क्या है ?

इरशाद : हुजूर के इस्मे ज़ात (ज़ाती नाम) दो हैं : कुतुबे

साबिका में अहमद है और कुरआने करीम में मुहम्मद

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم है और हुजूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के अस्माए

सिफ़ात (या'नी सिफ़ाती नाम) बे गिनती हैं। अल्लामा अहमद

ख़तीब क़स्तलानी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي) ने पांच सो जम्अ फ़रमाए।

(المواهب اللدنیہ، الفصل الاول فی ذکر اسمائہ الشریفہ الخ ، ۱/ ۳۶۶ ملخصاً)

सीरते शामी में तीन सो और इज़ाफ़ा किये और मैं ने छे सो और मिलाए। कुल चौदह सो हुवे और हुजूर के अस्मा हर तबके में मुख़लिफ़ हैं और हर हर जिन्स में जुदागाना हैं, दरया में और नाम हैं पहाड़ों में और।

अर्ज : येह कषरते अस्मा कषरते सिफ़ात पर दलालत करते है ?

इरशाद : हां :

(मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 92)

शाहे खैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के 119 बरक़त वाले नाम

أَحْسَن (अहसन = वो जात जिस में अच्छी सिफ़ात जम्अ हों)

أَحْشَم (अहशम = ज़ियादा वक़ार व इतमीनान वाला)

أَزْهَر (अज़हर = सफ़ेद रंगत वाला)

أَعْظَم (आ 'ज़म = बरतर)

أَكْرَم (अकरम = बहुत मेहरबान, बहुत सख़ी)

أَمَان (अमान = पनाह, हिफ़ाज़त)

أَمْجَد (अमजद = बुजुर्गी और शरफ़ वाला)

أَمِين (अमीन = अमानतदार)

بَدْر (बद्र = मुकम्मल चांद)

بُرْهَان (बुरहान = हुज्जत, दलील जिस में शक़ शुबा न हो)

بَشِير (बशीर = खुश ख़बरी देने वाला)

جَوَاد (जव्वाद = सख़ी) ⁽¹⁾

حَاتِم (हातिम = फैसला करने वाला)

حَامِد (हामिद = हम्द करने वाला)

حَبِيب (हबीब = प्यारा)

حَسِيب (हसीब = काफ़ी, इज़्ज़त व शरफ़ वाली हस्ती)

حَكِيم (हकीम = साहिबे हिक्मत)

حَلِيم (हलीम = बुर्दबार, बरदाश्त वाला)

1सख़ी वोह जो खुद खाए औरों को भी खिलाए, जव्वाद वोह जो खुद न खाए औरों को खिलाए इसी लिये रब عَزَّوَجَلَّ को सख़ी नहीं कहते जव्वाद कहते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह, 2/199)

حَمَاد (हम्माद = कषरत से **اَللّٰهُ** की हम्द करने वाला)

حَنِيف (हनीफ़ = इस्लाम पर षाबित क़दम)

دَامِغ (दामिग़ = बातिल की सरकोबी करने वाला)

رَاغِب (राग़िब = माइल, ख़्वाहिश मन्द)

رَحِيم (रहीम = रहूम वाला)

رَشِيد (रशीद = सीधा, इस्तिक्कामत वाला)

رَفِيق (रफ़ीक़ = बहुत ज़ियादा मेहरबानी फ़रमाने वाला)

رَءُوف (रऊफ़ = नर्म दिल)

زَاهِد (ज़ाहिद = दुन्या से बे रग़बत)

زَاهِر (ज़ाहिर = चमकदार रंगत वाला, रोशन चेहरे वाला)

زَيْن (ज़ैन = सूरतो सीरत दोनों ए'तिबार से कामिल व ख़ूब सूरत)

سَاجِد (साजिद = सजदा करने वाला)

سَخِي (सख़ी = सख़ावत करने वाला)

سَدِيد (सदीद = दुरुस्त करने वाला)

سِرَاج (सिराज = सूरज)

سَعِيد (सईद = सआदत मन्द, खुश नसीब)

سُلْطَان (सुल्तान = बादशाह, हुज्जत, क़वी दलील)

سَيْف (सैफ़ = तल्वार)

شَاكِر (शाकिर = शुक्र अदा करने वाला)

- شَاهِد (शाहिद = गवाही देने वाला)
- شَرِيف (शरीफ़ = बुलन्द मर्तबा)
- شَفِيع (शफीअ = शफ़ाअत करने वाला)
- شَفِيق (शफीक़ = मेहरबान)
- شَهِير (शहीर = शोहरत वाला)
- صَابِر (साबिर = सब्र करने वाला)
- صَادِق (सादिक़् = सच्चा)
- ضِيَاء (ज़िया = रोशनी, चमक)
- طَاهِر (ताहिर = पाक)
- طَبِيب (तबीब = बीमारों का इलाज करने वाला)
- طَيِّب (तय्यिब = पाक)
- ظَاهِر (ज़ाहिर = वाजेह और रोशन)
- عَابِد (आबिद = इबादत गुज़ार)
- عَادِل (आदिल = अदल करने वाला)
- عَارِف (आरिफ़ = पहचानने वाला)
- عَاقِب (आक़िब = सब से आख़िर में आने वाला, जानशीन)
- عَزِيز (अज़ीज़ = ग़ालिब)
- عَظِيم (अज़ीम = बुजुर्गी और अज़मत वाला)
- عِمَاد (इमाद = सुतून, क़ाबिले ए'तिमाद सरदार, सख़्तियों में लोग जिस की तरफ़ भाग कर आएँ)

- غِيَاث (ग़ियाष = कषीर बारिश)
- فَاتِح (फ़ातिह = खोलने वाला, शुरू करने वाला)
- فَاضِل (फ़ाज़िल = कामिल इल्म वाला, कषीर फ़ज़ीलत वाला)
- فَاسِم (फ़ासिम = तक्सीम करने वाला)
- قَمَر (क़मर = चांद)
- قَوِي (क़वी = कुव्वत वाला)
- كَامِل (कामिल = मुकम्मल)
- كَرِيم (करीम = सखी)
- كَفِيل (कफ़ील = कफ़ालत करने वाला)
- كَوْكَب (कौकब = रोशन तारा)
- لَبِيب (लबीब = अक्लमन्द, दाना)
- مَاجِد (माजिद = क़ाबिले एहतिराम, मोअज़्ज़ज़ आदमी)
- مَأمُون (मामून = जिस के पास अमानत रखने पर ए'तिमाद हो)
- مُبَارَك (मुबारक = बाइषे बरकत, नेक, सईद)
- مُبَشِّر (मुबशिशर = खुश ख़बरी सुनाने वाला)
- مُبِين (मुबीन = रोशन, ज़ाहिर)
- مَتِين (मतीन = मज़बूत)
- مُجَاهِد (मुजाहिद = जिहाद करने वाला)
- مُجْتَبَى (मुजतबा = मुन्तख़ब शुदा)

مُجِيب (मुजीब = जवाब देने वाला, हाजत रवाई करने वाला)

مَحْفُوظ (महफूज = वोह शख्सियत जिस की हिफाजत की गई)

مُحَمَّد (मुहम्मद = जिस की ता'रीफ की जाए)

مَحْمُود (महमूद = ता'रीफ के क़ाबिल)

مُخْتَار (मुख्तार = चुना हुवा, मुन्तख़ब)

مُدَّتِر (मुद़्षिर = चादर ओढ़ने वाला)

مُرْتَضَى (मुर्तज़ा = बरगुज़ीदा, बुजुर्गी वाला)

مُزْمَل (मुज़्जम्मिल = कम्बल पोश)

مُسْتَجِيب (मुस्तजीब = इताअत करने वाला)

مُسْتَقِيم (मुस्तक़ीम = सीधे रास्ते पर चलने वाला)

مَسْعُود (मसऊद = सआदत मन्द)

مَشْهُود (मशहूद = ग़वाही दिया गया)

مِصْبَاح (मिस्बाह = चराग़)

مُصَدِّق (मुसद्दिक़ = तस्दीक़ करने वाला)

مُصْطَفَى (मुस्तफ़ा = चुना हुवा)

مُطِيع (मुतीअ = इताअत गुज़ार)

مُظَفَّر (मुज़फ़्फ़र = वोह हस्ती जिसे दुश्मनों पर फ़तह अता की गई हो)

مُعْظَم (मुअज़्ज़म = बुजुर्ग, वाजिबुत्ता'जीम)

مُعَلِّم (मुअल्लिम = सिखाने वाला)

مُعِين (मुईन = मददगार)

مُقْتَصِد (मुक्तसिद = दरमियानी चाल चलने वाला)

مُكْرَم (मुकर्रम = इज्जत वाला)

مُنْصِف (मुन्सिफ़ = इन्साफ़ करने वाला)

مَنْصُور (मन्सूर = मदद याफ़ता, नुस्तर याफ़ता)

مُنِيب (मुनीब = हुक्म मानने वाला)

مُنِير (मुनीर = रोशन करने वाला)

نَاسِك (नासिक = इबादत करने वाला)

نَاشِر (नाशिर = किसी चीज़ के लपेट लेने के बा'द उसे ज़ाहिर करने वाला)

نَاصِب (नासिब = दीन के अहकाम को बयान करने वाला)

نَاصِح (नासेह = नसीहत करने वाला)

نَاصِر (नासिर = मदद करने वाला)

نَجْم (नज्म = सितारा)

نَجِيب (नजीब = अच्छे नसब वाला, पसन्दीदा)

نَجِيد (नजीद = राहनुमा, माहिर)

نَذِير (नज़ीर = डराने वाला)

نَقِيب (नक़ीब = सरदार, कफ़ालत करने वाला)

نُور (नूर = रोशनी)

هُمَام (हुमाम = बा अज़मत बादशाह)

وَاجِد (वाजिद = अलिम, ग़नी)

وَاسِط (वासित = दरमियाना)

وَاسِع (वासिअ = कषरत से देने वाला)

وَاعِد (वाइद = वा'दा करने वाला)

وَسيْم (वसीम = हसीन चेहरे वाला, ख़ूब सूरत)

وَلِي (वली = **अल्लाह** का दोस्त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

25 अम्बियाएु किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अजमत वाले नाम

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** लिखते हैं : हज़रते आदम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से हमारे हुज़ूर सय्यिदे अलम तक **अल्लाह** तअला ने बहुत से नबी भेजे, बा'ज का सरीह जि़क़ कुरआने मजीद में है और बा'ज का नहीं ।

(बहारे शरीअत, 1/48)

مُحَمَّد (मुहम्मद = जिस की बहुत ता'रीफ़ की जाए)

آدَم (आदम = मिट्टी से पैदा होने वाले)

إِبْرَاهِيم (इब्राहीम = मेहरबान बाप)

إِدْرِيس (इदरीस = दर्स देने वाला)

إِسْحَاق (इस्हाक़ = बहुत मुस्कुराने वाला)

إِسْمَاعِيل (इस्माईल = **अल्लाह** तअला की इताअत करने वाला)

إِلْيَاس (इल्यास = न भागने वाला बहादुर शख़्स)

- أَيُّوب (अय्यूब = फ़रमां बरदार)
 دَانِيَال (दानियाल = फैसलाए इलाही)
 دَاوُد (दावूद = महबूबे इलाही)
 ذُو الْكِفْلِ (ज़ुलकिफ़्ल = ज़िम्मा लेने वाला)
 زَكْرِيَّا (ज़करिय्या = **अल्लाह** का ज़िक्र करने वाला)
 سُلَيْمَان (सुलैमान = बे ऐब शख़्स)
 شُعَيْب (शोऐब = छोटी जमाअत)
 صَالِح (सालेह = नेक, बा अमल)
 عَزْزِر (उज़ैर = मददगार)
 عِيسَى (ईसा = शरीफ़ुन्नफ़्स)
 لُوط (लूत = दिली महबूबत, छुपा हुआ)
 مُوسَى (मूसा = वोह बच्चा जिसे दरख़्त और पानी के दरमियान डाला गया हो क्यूंकि क़िबती ज़बान में पानी को “मू” और दरख़्त को “सा” कहते हैं)
 نُوح (नूह = ख़ौफ़े खुदा से बक़षरत रोने वाला)
 هَارُون (हारून = हर दिल अज़ीज़ और महबूब)
 هُود (हूद = तौबा कर के हक़ की तरफ़ रुजूअ करने वाला)
 يَحْيَى (यह्य्या = ज़िन्दगी वाला)
 يَعْقُوب (या'क़ूब = तआकुब करने वाला)
 يُوسُف (यूसुफ़ = निहायत ख़ूब सूरत)
 يُونس (यूनस = उन्स वाले, मछली वाले)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

शाहे अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के 3 शहजादों के मुबारक नाम

قاسم (कासिम = तक्सीम करने वाला)

عبدالله (अब्दुल्लाह = अब्बाह का बन्दा)

إبراهيم (इब्राहीम = मेहरबान बाप)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

शरकरे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के 5 नवाशों के मुक़द्दस नाम

عبدالله (अब्दुल्लाह = अब्बाह का बन्दा)

حسن (हसन = अच्छा)

حسين (हुसैन = खूब सूरत)

مُحْسِن (मोहसिन = भलाई करने वाला)

علي (अली = बुलन्द)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अशरफ़ मुबशशरा

(या 'नी जन्नत की खुसूसी बिशारत पाने वाले दस सहाबए किराम)

के प्यारे प्यारे नाम

ابوبکر (अबू बक्र = अव लविय्यत वाले या'नी अफ़ज़लिय्यत वाले)

عُمر (उमर = जिन्दगी)

عثمان (उषमान = कोशिश करने वाला)

على (अली = बुलन्द)

طَلْحَة (तलहा = खाली पेट)

زُبَيْر (ज़ुबैर = ताक़तवर)

عبد الرحمن (अब्दुर्रहमान = बहुत मेहरबानी करने वाले का बन्दा)

سَعْد (सा'द = खुश नसीब)

سَعِيد (सईद = मुबारक)

ابو عُيَيْدَة (अबू उबैदा = छोटी कनीज़ वाला)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सहाबु क़िशाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के 135 पाकीज़ा नाम

أَخْرَم (अख़्रम = वोह टीला जो किसी नशेब में उतरता हो)

أَزْهَر (अज़हर = चमकदार व साफ़ रंग वाला)

أَسَد (असद = शेर)

أَسْعَد (असअद = बहुत कामयाब)

أَسْلَم (असलम = ज़ियादा सलामती वाला)

أُسَيْد (उसैद = छोटा शेर)

أَشْرَف (अशरफ़ = ज़ियादा शराफ़त वाला)

- أَنَس (अनस = जिस से उन्स हासिल किया जाता हो, उल्फ़त, सुकूने क़ल्ब)
- أَنِيس (अनीस = मानूस, उन्सिय्यत (या'नी महब्बत) देने वाला)
- بَدْر (बद्र = चौदहवीं रात का मुकम्मल चांद)
- بِلَال (बिलाल = पानी, हर वोह चीज़ जिस से हल्क़ को तर किया जाए)
- ثَابِت (थाबित = मुस्तक़िल मिज़ाज)
- ثَمَامَه (थुमामा = भरी शाखों वाला एक पौदा)
- ثَوْبَان (थौबान = तौबा करने वाला)
- جَابِر (जाबिर = जोर वाला)
- جُبَيْر (जुबैर = ज़बरदस्त)
- جَعْفَر (जा 'फ़र = बहुत वसीअ़ नहर)
- حَابِس (हाबिस = रोकने वाला)
- حَاتِم (हातिम = बुलन्द हौसला, सख़ी, फैसला करने वाला)
- حَاجِب (हाजिब = हिफ़ाज़त करने वाला)
- حَارِث (हारिष = कमाने वाला)
- حَازِم (हाज़िम = दूरअन्देश, तेज़ नज़र वाला)
- حَاطِب (हातिब = दरख़्त काट कर लकड़ियां जम्अ़ करने वाला)
- حُبَاب (हुबाब = महबूब, दोस्त)
- حِبَّان (हिब्बान = नूरानी चेहरे वाला)
- حُذَيْفَه (हुज़ैफ़ा = बे ऐब)

حُر (हुर = ख़ालिस, हर किस्म की आमेज़िश से पाक, आज़ाद, शरीफ़)

حَسَّان (हस्सान = बहुत हसीनो जमील)

حَكِيم (हकीम = दाना, तबीब, होशयार)

حَمَاد (हम्माद = बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ करने वाला)

حُمْرَان (हुमरान = सुख़ रंग वाला)

حَمَزَه (हम्ज़ा = शेर)

حُمَيْد (हुमैद = बुजुर्ग)

حَنْظَلَه (हन्ज़ला = एक दरख़्त का नाम)

حَنِيف (हनैफ़ = शर से ख़ैर की तरफ़ माइल होने वाला, सीधा जिस में कोई टेढ़ापन न हो)

خَالِد (ख़ालिद = देरपा)

خَبَّاب (ख़ब्बाब = तेज़ तेज़ चलने वाला)

خَبِيب (ख़ुबैब = गहरा गढ़ा)

خُفَاف (ख़ुफ़ाफ़ = होशयार व ज़हीन)

خَلَاد (ख़ल्लाद = मक़ान में तवील अर्सा इक़ामत इख़्तियार करने वाला)

دَارِم (दारिम = जिस की हड्डी को गोश्त ने ढक दिया हो)

دَيْلَم (दैलम = मुआमला फ़हम और बसीरत रखने वाला शख़्स)

ذَابِل (ज़ाबिल = दुब्ला पतला)

ذُكُون (ज़क्वान = होशयार और ज़हीन)

رَاشِد (राशिद = हिदायत याफ़्ता)

زَارِع (ज़ारेअ = काश्तकार)

زَاهِر (ज़ाहिर = रोशन)

زُبَيْر (ज़ुबैर = जानदार, ताक़तवर आदमी)

زِيَاد (ज़ियाद = इज़ाफ़ा, बढ़ोतरी, क़षरत)

زَيْد (ज़ैद = इज़ाफ़ा, बढ़ोतरी, क़षरत)

سَارِيَه (सारिया = रात में चलने वाला)

سَالِف (सालिफ़ = फ़ज़्लो क़माल या उम्र में बढ़ा हुआ)

سَالِم (सालिम = आफ़त व अमराज़ से चुटकारा पाने वाला)

سَائِب (साइब = खुले दिल से सख़ावत करने वाला)

سُفْيَان (सुफ़यान = जल्दी परवाज़ करने वाला)

سَلْمَان (सलमान = फ़रमां बरदार, हर ऐब से पाक)

سُلَيْم (सुलैम = बेऐब, सहीह व सालिम, साफ़ सुथरा, आफ़त से बचा हुआ)

سِمَاك (सिमाक = बुलन्द चीज़)

سَمْعَان (समआन = मुत्तीअ व फ़रमां बरदार)

سُمَيْر (सुमैर = रात को साथी से बातें करने वाला, किस्सा कहानी कहना)

سِنَان (सिनान = नेज़ा)

سَهْل (सहल = नर्म मिज़ाज, आसान)

سُهَيْل (सुहैल = नर्म बरताव करने वाला)

سَيْف (सैफ़ = तल्वार)

شَجَاع (शुजाअ = बहादुर)

شَدَاد (शद्दाद = बहुत कुव्वत रखने वाला बहादुर शख्स)

شَرِيح (शुरैह = गोشت के पतले टुकड़े करने वाला, महफूज,
जिस का सीना खोल दिया गया हो, वाजेह)

شَرِيك (शरीक = हिस्सेदार)

شَمْعُون (शमऊन = मुतीअ व फरमां बरदार)

شَيْبَان (शैबान = सफ़ेद, ठन्डा, बर्फ)

صَبِيح (सुबैह = रोशन चेहरे वाला)

صَفْوَان (सफ़वान = चिकना पथ्थर, चिकनी चट्टान)

ضَمَضَم (ज़म ज़म = दिलैर)

طَارِق (तारिक = रोशन सितारा)

طَفِيل (तुफैल = वसीला)

ظُهَيْر (ज़ुहैर = मददगार)

عَاصِم (असिम = मुहफ़िज़, बचाने वाला)

عَاقِل (अक़िल = अक़ल वाला, होशयार)

عَبَاد (अब्बाद = बन्दा, इबादत गुज़ार)

عَبَّاس (अब्बास = वोह शेर जिसे देख कर दूसरे शेर भाग जाते हों)

عَتِيق (अतीक = शरीफ़, आज़ाद)

عُرْوَة (उर्वा = शेर, काबिले ए'तिमाद)

عَفَّان (अफ़फ़ान = बहुत ज़ियादा पाक दामन)

- عُقِيل (उकैल = दाना, ज़हीन आदमी)
 عَمَّار (अम्मार = तहम्मूल मिज़ाज, बा वकार)
 عُمَيْر (उमैर = लबरैज़)
 غَسَّان (ग़स्सान = दिल की गहराई)
 فَضِيل (फ़ुज़ैल = फ़ज़ीलत वाला)
 قَارِب (क़ारिब = छोटी कश्ती)
 قَتَادَه (क़तादा = एक दरख़्त)
 قُطْبَه (कुतबा = सरदार)
 كَثِير (कषीर = बहुत, वाफ़िर, ज़ियादा)
 كَوْكَب (कौकब = रोशन सितारा, क़ौम का सरदार)
 كَهْمَس (कहमस = शेर)
 لَاحِب (लाहिब = खुला और वाज़ेह रास्ता)
 لَاحِق (लाहिक़ = मिलने वाला)
 لَبِيد (लबीद = मकान में क़ियाम करने वाला)
 لُقْمَان (लुक्मान = बड़ा दाना आदमी, निहायत तज़रिबा कार आदमी)
 مَاتِع (मातेअ = बहुत उम्दा चीज़)
 مَازِن (माज़िन = बारिश बरसाने वाला बादल)
 مَالِك (मालिक = मिल्कियत रखने वाला)
 مِذَاج (मिदलाज = जो रात में चलने या सफ़र करने का आदी हो)

مَرْزُوق (मरज़ूक = खुशहाल)

مَسْعُود (मसऊद = खुश नसीब, कामयाब)

مُصْعَب (मुसअब = बरदाश्त करने वाला)

مُطَرِّف (मुतर्रिफ़ = किनारे वाला)

مَظْهَر (मज़हर = मन्ज़र, शक़्ल, ज़ाहिर होने का मक़ाम)

مُعَاذ (मुअज़ = पनाह की जगह)

مُعَاوِيَه (मुअविया = आवाज़ खींचने वाला)

مَعْقِل (मा क़िल = पनाहगाह)

مُعَوِّذ (मुअव्विज़ = पनाह की दुआ देने वाला)

مُغِيث (मुगीष = फ़रयाद सुनने वाला)

مِقْدَاد (मिक्दाद = एक चीज़ को दो हिस्सों में तक्सीम करने वाला)

مِقْدَام (मिक्दाम = बहादुर, लड़ाई में सब से आगे रहने वाला)

مَكْهُول (मक्हूल = जिस की आंखों में सुर्मा लगा हो)

مُنِيب (मुनीब = खुदा की तरफ़ रुजूअ करने वाला)

مُنْذِر (मुनज़िर = डराने वाला)

مُنْكَدِر (मुन्कदिर = झपटने वाला)

مِنْهَال (मिन्हाल = इन्तिहाई सखी)

مُونِس (मूनिस = दोस्त, ग़मख़्वार)

مَيْمُون (मैमून = बाबरकत, खुश बख़्त)

نَاعِم (नाइम = खुशहाल ज़िन्दगी बसर करने वाला)

نَافِع (नाफ़ेअ = नफ़अ देने वाला)

نَصِيب (नसीब = हिस्सा)

نُعْمَان (नो 'मान = ने'मतें पाने वाला)

نُعِیم (नुऐम = साहिबे ने'मत)

نَوْفَل (नौफल = फ़य्याज़, सखी, दरया दिल)

وَاسِع (वासिअ = वुस्अत देने वाला)

وَاقِد (वाकिद = आग रोशन करने वाला)

وَائِل (वाइल = पनाह में आने वाला)

هَالِل (हिलाल = पहली तारीख़ का चांद)

يَاسِر (यासिर = आसानी व नमी)

يَامِين (यामीन = बा बरकत)

يَسَار (यसार = दौलत मन्द, अमीर कबीर)

يَمَان (यमान = बरकत वाला)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के 27 मुबारक नाम

(अर्सलान - शेर । हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अर्सलान

मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَرِ के वालिद जो खुद भी बहुत बड़े बुजुर्ग थे,

मज़ारे मुबारक मिस्र में है)

(तकिय्यी - परहेज़गार । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दादा के सगे भाई इमामुल उ-लमा मौलाना तकी अली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى)

(जमाल - हुस्न । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ख़लीफ़ा शैख़ मुहम्मद जमाल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो अरब के बाशिन्दे थे)

(जुनैद - छोटा लश्कर । मशहूर वलियुल्लाह हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى)

(जीवन - ज़िन्दगी, हयात, वुजूद । नूरुल अन्वार और तफ़्सीराते अहमदिय्या के मुसन्निफ़ जो मुल्ला जीवन के नाम से मशहूर हैं, अस्ल नाम शैख़ अहमद बिन अबी सईद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ है)

(हाकिम - सरदार । हदीष की मशहूर किताब अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन के मुअल्लिफ़ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो इमाम हाकिम के नाम से मशहूर हैं)

(हशमत - बुजुर्गी, शानो शौकत । शेर बेशए अहले सुन्नत मौलाना हशमत अली ख़ान عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى)

(ख़लील - सच्चा दोस्त । मशहूर सुन्नी आलिम ख़लीले मिल्लत मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील ख़ान बरकाती عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى)

(दीदार - जल्वा, नज़ारा । ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद दीदार अली शाह अल्वरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى)

(रज़ीन - बा वकार, बुर्दबार, सन्जीदा । जलीलुल क़द्र मुहदिष हाफ़िज़ रज़ीन अब्दरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى)

(रैहान - गुलाब के इलावा तमाम फूलों को रैहान कहते हैं । रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा ख़ान عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى)

(जमील - रदीफ़, पिछला सुवार । ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना

जमील बिन अब्बास رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

(सरफ़राज़ = मुअज़्ज़ज । खलीफ़ आ'ला हज़रत मौलाना

सरफ़राज़ अहमद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

(शरीफ़ = बुजुर्ग, आली ख़ानदान । खलीफ़ आ'ला हज़रत

मौलाना मुहम्मद शरीफ़ कोटलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي)

(शहबाज़ = शाहीन । मशहूर सूफ़ी बुजुर्ग शहबाज़ क़लन्दर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

(अदनान = हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद

में से हमारे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जेदे आ'ला का नाम)

(इरफ़ान = शनाख़्त, पहचान । खलीफ़ आ'ला हज़रत मौलाना

इरफ़ान अहमद बैसलपूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي)

(अता = बख़्शिश, इन्आम । मशहूर ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना

अता बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار)

(अक़ील = दाना, ज़की । शाम के एक बा क़रामत वलियुल्लाह

हज़रते सय्यिदुना अक़ील رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

(इमरान = हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नाना का नाम)

(ज़फ़र = कामयाबी । खलीफ़ आ'ला हज़रत मलिकुल उ-लमा

हज़रते अल्लामा मौलाना ज़फ़रुद्दीन क़ादिरि रज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي)

(मुजाहिद = **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में लड़ने वाला । मशहूर

ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد)

(मा'रूफ़ = मशहूर वलियुल्लाह हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़

करखी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي)

(नकी = पाक, साफ़, ख़ालिस। आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वालिद मौलाना नकी अली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(हाशिम = रोटियों के छोटे छोटे टुकड़े करने वाला। सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पर दादा हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ जिन का अस्ली नाम अम्र था)

(वारिष = मददगार, हिमायती। मशहूर सूफ़ी बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना वारिष शाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ)

(वहब = अता व बख़्शिश। हमारे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नाना का नाम)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

निश्चतों वाले 8 मुतफ़रिफ़ नाम

(आसफ़ = हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के वज़ीर का नाम, मजाज़न हर लाइक़ वज़ीर)

(उहुद = एक आशिके रसूल पहाड़ का नाम)

(अय्याज़ = महमूद बादशाह के एक ज़हीन और नेक गुलाम का नाम)

(हुनैन = सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के एक गुलाम का नाम, मक्कए मुअज़्ज़मा और ताइफ़ के दरमियान एक वादी का नाम जहां ग़ज़्वए हुनैन वाक़ेअ हुआ)

(ज़ुल फ़िक़ार = मोहरों वाली तल्वार। हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم की तल्वार का नाम)

(रमज़ान = हिजरी साल का नवां महीना, नुजूले कुरआन का महीना)

(रय्यान = जन्नत के एक दरवाज़े का नाम जिस में से रोज़ादार दाख़िल होंगे)

(अरफ़ात = मक्कए पाक में वाक़ेअ एक मैदान जहां हाजी 9 जुल हिज्जा को वुकूफ़ करते हैं)

बच्चियों के लिये 150 प्यारे प्यारे नाम
सरकार मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अम्मी जान
का मुबारक नाम

آمِنَه (आमिना = मुतमइन और बे खौफ़)

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रज़ाई माओं (या' नी जिन्हों
ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दूध पिलाया था)
के मुबारक नाम (1)

أُمِّ اَيْمَن (उम्मे ऐमन = बरकत व कुव्वत वाली, इन का अस्ल
 नाम बरकत था)

ثَوْبِيَه (षुवैबा = रुजूअ करने वाली, लौटने वाली)

حَلِيْمَه (हलीमा = बुर्दबार, मुतहम्मिल मिज़ाज खातून)

11 उम्मुहातुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ के मुक़द्दस नाम

خَدِيْجَه (खदीजा = वक्त से पहले पैदा होने वाली बच्ची)

سَوْدَه (सौदा = सियाह रंगत वाली)

عَائِشَه (आइशा = खुशहाल)

حَفْصَه (हफ़सा = खूब सूरत)

أُمِّ سَلَمَه (उम्मे सलमा = ए'तिराफ़ करने वाली की मां)

أُمِّ حَبِيْبَه (उम्मे हबीबा = महबूब हस्ती की मां)

مَدِيْنَه

1)सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को जितनी बीबियों ने दूध
पिलाया सब इस्लाम लाई ।

(السيرة الحلبية، ١/ ١٢٨، فتاوى رضوية، ٣٠/ ٢٩٦)

زَيْنَب (जैनब (1) = एक हसीन खुशबूदार पौदा)

زَيْنَب (जैनब (2) = एक हसीन खुशबूदार पौदा)

مَيْمُونَه (मैमूना = बरकत वाली)

جُوَيْرِيَه (जुवैरिया = छोटी लड़की)

صَفِيَّه (सफ़िय्या = चुनी हुई)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सश्कारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की 4 शहजादियों के मुबारक नाम

زَيْنَب (जैनब = एक हसीन महकदार पौदा)

رُقْيَاه (रुक़य्या = तरक्की करने वाली)

أُمِّ كُلْثُوم (उम्मे कुलषूम = पुरगोशत चेहरे वाली की मां)

فَاطِمَه (फ़ातिमा = आतशे जहन्नम से छुड़ाने वाली)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सश्कारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की 3 मुक़द्दस कनीजों के नाम

مَارِيَه (मारिया = गोरी और चमक दमक वाली)

رَيْحَانَه (रैहाना = एक खुशबूदार पौदा)

نَفِيسَه (नफ़ीसा = पाक व साफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

لَدِينِه

①....बिन्ते जहूश । ②....बिन्ते खुजैमा

सश्कारे मदीना ﷺ की 4 नवाशियों के नाम

أُمَامَه (उमामा = इरादा करने वाली)

رُقْيَه (रुक़य्या = तरक्की करने वाली)

أُمُّ كُلْثُوم (उम्मे कुलषूम = पुरगोशत चेहरे वाली की मां)

زَيْنَب (जैनब = एक हसीन महक दार पौदा)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

59 सह़ाबिय्यात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ के नाम

آسِيَه (आसिया = सुतून)

أَثِيْلَه (अथैला = शरफ़ और बुजुर्गी वाली)

أَرْوَى (अरव = हसीनो जमील)

أَسْمَاء (अस्मा = निशानी, अलामत)

أُمَيْمَه (उमैमा = पथ्थर)

أُمِيَّه (उमय्या = छोटी सी कनीज़)

أَنَيْسَه (अनैसा = रहनुमाई करने वाली, मेहरबानी करने वाली)

أَيْمَن (ऐमन = सीधी, दाहिनी)

بَرِيْرَه (बरीरा = एक दरख़्त का फल)

بُسْرَه (बुसरा = कुंपल)

بَشِيْرَه (बशीरा = खुश ख़बरी देने वाली)

بُهَيَّة (बुहय्या = जमाल)

جَمِيلَه (जमीला = हसीन, खूब सूरत)

حَبِيبَه (हबीबा = प्यारी)

حَرْمَلَه (हर्मला = छोटी पोशाक)

حَسَنَه (हसना = ने'मत)

حَكِيمَه (हकीमा = अक्लमन्द खातून)

حَمْنَه (हमना = ताइफ़ के अंगूरों की एक किस्म जो सियाह सुर्खी माइल होते हैं)

خَالِدَه (खालिदा = देर तक रहने वाली)

خَوْلَه (खौला = हिरनी, खूब सूरत)

خَيْرَه (खैरा = आ'ला और मुमताज़ खातून)

دَقْرَه (दक़रा = कषीर नबातात वाला खुशनुमा बाग़)

رَبَاب (रबाब = सफ़ेद बादल)

رُزَيْنَه (रुज़ैना = अक्लमन्द और पारसा खातून)

رُفَيْدَه (रुफ़ैदा = मददगार खातून, अतिथ्या)

رُقَيْقَه (रुक़ैक़ा = नर्म दिल)

رَمْلَه (रमला = ज़मीन का बुलन्द हिस्सा)

رُمَيْثَه (रुमैषा = ज़रख़ैज़ ज़मीन)

رُمَيْصَاء (रुमैसा = एक सितारे का नाम)

زُرَيْنَه (ज़ुरैना = सुन्हरी)

- سَائِرَه (साइरा = सैर करने वाली)
- سَبِيْعَه (सुबैआ = सात)
- سَرَاء (सरा = खुशहाली, उम्दा ज़मीन)
- سُعْدَى (सो 'दा = मुबारक, खुश बख़्ती)
- سُعَيْدَه (सुऐदा = खुश बख़्त खातून)
- سُكَيْنَه (सुकैना = वफ़ार, तमानिय्यत, सुकून)
- سَلْمَى (सलमा = आफ़ात वगैरा से महफूज़, नजात पाने वाली)
- سُمَيَّة (सुमय्या = अलामत)
- سُنْبُل (सुम्बुल = एक किस्म की खुशबूदार घास)
- سِيْمَا (सीमा = निशान वाली, अलामत वाली)
- شِفَاء (शिफ़ा = तन्दुरुस्त, सिद्दहत)
- عَاتِكَه (आतिका = बहुत खुशबू मलने वाली)
- عَفْرَاء (अफ़रा = कम रफ़्तार)
- عَقِيلَه (अक़ीला = अक्ल वाली, समझदार)
- عَطِيَّه (अतिय्या = इन्आम दी हुई चीज़)
- فَارِعَه (फ़ारिआ = लम्बे बालों वाली)
- قِرْصَافَه (किरसाफ़ा = तेज़ रफ़्तार चीज़, घूमने वाली चीज़)
- فُرَيْعَه (फुरैआ = तवील क़द वाली, लम्बे बालों वाली, पहाड़ का बुलन्द हिस्सा)

قُرَّةُ الْعَيْن (कुरतुल ऐन = आंखों की ठण्डक)

- كَبْشَه (कबशा = हिफाज़त का काम अन्जाम देने वाली)
 كَرِيمَه (करीमा = मुअज्जज़ खातून)
 لُبَابَه (लुबाबा = हर चीज़ का ख़ालिस और बेहतरीन हिस्सा)
 لُبْنَى (लुबना = खुशबूदार, ख़ूब सूरत खातून)
 مُطِيعَه (मुतीआ = फ़रमां बरदार खातून)
 مُعَاذَه (मुआज़ा = पनाह गाह)
 مُلْكَه (मुलैका = मलिका)
 نَسِيبَه (नसीबा = हसबो नसब में मशहूर शरीफ़ खातून)
 هُجَيْمَه (हुजैमा = मशकीज़े का दूध जो अभी पूरा न जमा हो, मोती)
 يُسَيْرَه (युसैरा = आसान, सीधी)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

49 दीवार बुजुर्ग ख़वातीन के नाम

- أَنِيقَه (अनीका = खुश आइन्द, ख़ूब। एक कौल के मुताबिक़ हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदए मोहतरमा हज़रते उम्मे सुलैम अन्सारिया का नामे मुबारक)
 بَرْدَه (बर्दा = कनीज़, बांदी, एक ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुरक़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदा का नाम)
 بَلْقِيس (बिल्क़ीस = मलिका सबा का नाम, इस्लाम क़बूल करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की जौजा बर्नी)
 تَحِيَّه (तहिyyा = सलाम, सलामी, तहिyyा बिनते सलमान, आलिमा खातून जिन्हें लाख से जाइद अहादीष याद थीं)

جَبَلَه (जबला = कौम की सरदार, अलिमा, षाबित कदम, एक ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना सफ़ह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बेटी का नाम)

حَنِيفَه (हनीफ़ा = मज़हबी अक़ीदे की पुख़्ता, दीन में सच्ची। “बीबी हनीफ़ा” नवीं सदी हिजरी की शोहरए आफ़ाक़, अलिमा, मुहद्दिषा, जिन को इमाम जलालुद्दीन सुयूती **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** ने अपने शूयूख़ में शुमार किया है)

حَمَّادَه (हम्मादा = हम्द करने वाली, शुक्र करने वाली, हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बेटी का नाम)

حَوَّاء (हव्वा = ज़िन्दगी, हज़रते सय्यिदुना आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की जौजए मोहतरमा का नाम)

رَابِعَه (राबिआ = चौथी, शफ़क़त करने वाली, रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने वाली। एक मशहूर वलिय्या ख़ातून हज़रते सय्यिदुना राबिआ बसरिय्या **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا**)

رَئِيسَه (रईसा = दौलत मन्द। रावियए हदीष जिन से हज़रते सय्यिदुना सा’द बिन अली जुन्जानी शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** रिवायत करते हैं)

زُبْدَه (ज़ुब्दा = किसी चीज़ का बेहतरीन हिस्सा, बरगुज़ीदा, मशहूर बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की बहन का नाम)

زَجَلَه (ज़ज्ला = लोगों की आवाज़, शोर, ज़ज्ला बिनते मन्ज़ूर हज़रते सय्यिदुना मुअविआ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की आज़ाद कर्दा कनीज़ का नाम)

زَيْنَت (ज़ीनत = ख़ूब सूरती, सजावट, रावियए हदीष हज़रते सय्यिदुना ज़ीनत बिनते अबी तुलैक **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا**)

سَارَه (सारा = सरदार, शरीफ़, मुअज़्ज़ज़, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** की जौजए मोहतरमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** का नाम)

سَارِيَه (सारिया = रात में चलने वाली, हज़रते आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की सहेली थीं)

سِدْرَه (सिदरा = बैरी का दरख्त, हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बहू का नाम)

سَفِينَه (सफ़ीना = नाव, कश्ती, रावियए हदीष हज़रते सफ़ीना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا बिनते शैबा)

سُكَيْنَه (सुकैना = सुकून, इतमीनान, हज़रते सय्यिदतुना सुकैना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बिनते हुसैन)

سَكِينَه (सकीना = सुकून, इतमीनान, मशहूर सन्दूक “ताबूते सकीना” का नाम जिस का ज़िक्र कुरआने पाक में भी है, इस सन्दूक में मुक़द्दस तबरूकात मौजूद थे और इस के तुफ़ैल बनी इस्राईल को फुतूहात हासिल होती थीं)

سَنِيه (सनिय्या = रोशन, बुलन्द रुत्बा, ख़ूब सूरत। हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ख़ालिद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का लक़ब जो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन्हें एक हुल्ला पहना कर अता फ़रमाया था)

شَمْسَه (शम्सा = रोशनदान। एक ताबेइय्या ख़ातून رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا जो हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हाथ पर इस्लाम लाई)

سُوَيْدَه (सुवैदा = सरदार, सानूली, सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बेटी का नाम)

شَعْوَانَه (शा'वाना = घने बिखरे हुवे बाल, एक बुजुर्ग ख़ातून رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا का नाम)

صُغْرَى (सुग़रा = छोटी। इमामे अली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की साहिबज़ादी का नाम)

صَفْوَرَه (सफ़ूरा = हज़रते सय्यिदुना शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام की बेटी और हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की जौजा का नाम)

طافیه (ताफिया = खोशए अंगूर में नुमायां और उभरा हुआ दाना, एक अ़बिदा खातून رحمة الله تعالى عليها का नाम)

طیّبه (तय्यिबा = उ़म्दा, पाक । हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رضی الله تعالی عنه की वालिदए मोहतरमा का नाम तय्यिबा बित्ते वहब رضی الله تعالی عنها था)

عائیکه (अतिका = शरीफ़ औरत, खुशबूदार, क़बीलए बनी सुलैम से तअल्लुक़ रखने वाली तीन पाकीज़ा बीबियों के नाम जिन्हों ने सरकारे मदीना صلی الله تعالی علیه وآله وسلم को बचपन में दूध पिलाने की सआदत हासिल की थी)

عاطفّه (अतिफ़ा = मेहरबानी करने वाली । हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عليه رحمه الله القوی की बहन जो कि निहायत साबिरा, ज़हिदा, और इबादत गुज़ार खातून थीं)

عاليه (अलिया = हर चीज़ का बुलन्द हिस्सा, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मुत्तलिब رضی الله تعالی عنه की पोती का नाम)

عبده (अब्दा = बन्दी, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक़ رضی الله تعالی عنه की पोती का नाम)

عجّردّه (अजरदा = तेज़ व सख़्त, हल्की फुलकी, बसरा की एक इबादत गुज़ार खातून رحمة الله تعالى عليها का नाम)

عزیزه (अज़ीज़ा = महबूब, क़रीबी रिश्तेदार, दोस्त । रावियए हदीष हज़रते सय्यिदुना अज़ीज़ा رحمة الله تعالى عليها)

غزیه (गुज़य्या) (ग़ज़िय्या = इरादा करने वाली, हज़रते सय्यिदुना जाबिर رضی الله تعالی عنه की बेटी का नाम)

عاليه (अलिया = बुलन्द, बुजुर्ग । रावियए हदीष हज़रते सय्यिदुना अलिया बित्ते ऐफ़अ बिन शराहील رضی الله تعالی عنها, येह हज़रते सय्यिदुना अ़इशा رضی الله تعالی عنها से रिवायत करती हैं)

فَسِيلَه (फ़सीला = खजूर की कलम, हज़रते सय्यिदुना वाषिला बिन अस्क़अ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बेटी का नाम)

قُرَيْبَه (कुरैबा = कराबत वाली, खुशनूदी हासिल करने वाली, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की पोती का नाम)

مَاجِدَه (माजिदा = काबिले ता'जीम, सखी, बहुत उम्दा, कबीलए कुरैश से तअल्लुक रखने वाली एक इबादत गुज़ार खातून)

مَرْجَانَه (मर्जाना = मूंगा, मोती, एक सब्ज़ी का नाम, हज़रते सय्यिदुना अल्क़मा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की वालिदा का नाम, ताबेइय्या हैं)

مَرْيَم (मरयम = इबादत गुज़ार खातून, हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदए मोहतरमा का नाम)

مُنِيَبَه (मुनीबा = तौबा करने वाली, फ़रमां बरदार खातून, बसरा की एक इबादत गुज़ार खातून का नाम)

مُنِيَفَه (मुनीफ़ा = हसीन व खुश कामत औरत, मुनीफ़ा बिनते अबी तारिक़, बहरैन की एक इबादत गुज़ार खातून का नाम)

مُنِيَه (मुन्या = तमन्ना, ख़्वाहिश, सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की पोती का नाम)

مُؤَافِقَه (मुवाफ़िका = मुनासबत वाली, मिली हुई, एक इबादत गुज़ार खातून का नाम)

نُدْبَه (नुदबा = फ़सीह कलाम करने वाली, सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना ख़ुफ़ाफ़ बिन नुदबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदा का नाम)

وَجِيَه (वजीहा = ख़ूब सूरत। उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की आज़ाद कर्दा कनीज़ का नाम)

هَالَه (हाला = चांद के चारों अतराफ़ का रोशन दाइरा। सय्यिदुश्शोहदा हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदा का नाम)

هَاجِرَه (हाजिरा = निहायत गर्म दोपहर का वक्त । हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम)

يَاسْمِين (यास्मीन = चम्बेली का फूल । एक बुजुर्ग और रावियए हदीष हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अब्दुल्लाह यास्मीन बिनते सालिम رحمة الله تعالى عليها का नाम)

तक़रीबन 16 मुतफ़रिक् ज़नाना नाम

إِرم (इरम = एक कौल के मुताबिक़ जन्नत का नाम)

أَقْصَى (अक्सा = बहुत दूर । मुल्के शाम में हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की बनाई हुई मस्जिद बैतुल मुक़द्दस का नाम)

بَتُول (बतूल = सय्यिदा फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का लक़ब)

تَسْنِيم (तस्नीम = जन्नत की एक नहर का नाम)

حِرا (हिरा = मक्काए मुकर्रमा की पहाड़ियों में मौजूद ग़ार का नाम)

حَرَمَيْن (हरमैन = मक्काए मुअज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा दोनों को हरमैन कहते हैं)

حَرِيم (हरीम = घर की चार दीवारी, ख़ानए का'बा की बैरूनी दीवार, मकान, घर)

حُمَيْرَا (हुमैरा = सुख़ रंग की । उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का लक़ब)

زَهْرَاء (ज़हरा = रोशन और सफ़ेद चेहरे वाली । बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का लक़ब)

زَيْتُون (ज़ैतून = एक मशहूर दरख़्त का नाम जिस का ज़िक़्र कुरआने पाक में है)

سَعْدِيَة (सा'दिया = शीराज़ की मुज़ाफ़ात में वोह मक़ाम जहां शैख़ सा'दी शीराज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का मज़ार है)

صِدِّيقَه (सिद्दीक़ा = निहायत सच्ची। हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा और हज़रते सय्यिदतुना मरयम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का लक़ब)
 طَاهِرَه (ताहिरा = पाक। उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का लक़ब)
 طُوبَى (तूबा = खुश ख़बरी। एक कौल के मुताबिक़ जन्नत का नाम, दूसरे कौल के मुताबिक़ जन्नत में एक दरख़्त का नाम)
 عَذْرَا (अज़रा = कंवारी, हज़रते सय्यिदतुना मरयम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) का लक़ब)
 كَوْثَر (कौषर = बहिश्त की एक नहर, जन्नत का हौज़, कुरआने पाक की एक सूरात का नाम)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ
 सात अम्बियाएँ किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की कुन्यतें

मदनी आका अहमदे मुजतबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)	अबुल क़सिम, अबू इब्राहीम
हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)	अबुल बशर, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)	अबुल अज़याफ़
हज़रते सय्यिदुना दावूद (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)	अबू सुलैमान
हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)	अबू या'कूब
हज़रते सय्यिदुना या'कूब (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)	अबू यूसुफ़
हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)	अबुल अब्बास

71 सहाबउ किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की कुव्वतें

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर ﷺ	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'जम ﷺ	अबू हफ़्स
हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अफ़फ़ान ﷺ	अबू अब्दिल्लाह, अबू अब्दिरहमान, अबू अम्र
हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मूर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم	अबुल हसन, अबू तुराब
हज़रते सय्यिदुना तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अब्बाम ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन औफ़ ﷺ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्कास ﷺ	अबू इस्हाक़
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जैद ﷺ	अबुल आ'वर
हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन जराह ﷺ	अबू उबैदा
हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन जैद ﷺ	अबू मुहम्मद, अबू जैद, अबू यज़ीद, अबू ख़ारिजा
हज़रते सय्यिदुना अस्लम राई ﷺ	अबू सलमा
हज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुजैर ﷺ	अबू यट्या, अबू ईसा, अबू अतीक, अबू हुजैर, अबू अम्र
हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक ﷺ	अबू हम्ज़ा

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब <small>رضي الله عنه</small>	अबू अम्र, अबू अम्मारा
हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन हराम <small>رضي الله عنه</small>	अबू अब्दिल्लाह, अबू अब्दिरहमान
हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब <small>رضي الله عنه</small>	अबुल फ़त्त
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जुबैर <small>رضي الله عنه</small>	अबू बक्र, अबू खुबैब
हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन हुनैफ़ <small>رضي الله عنه</small>	अबू अम्र, अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर <small>رضي الله عنه</small>	अबू अब्दिरहमान
हज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबू अरक़म <small>رضي الله عنه</small>	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अश़अष बिन कैस <small>رضي الله عنه</small>	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना अन्जशा <small>رضي الله عنه</small>	अबू मारिया
हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरा <small>رضي الله عنه</small>	अबू अब्दिल्लाह, अबू ख़ालिद
हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह <small>رضي الله عنه</small>	अबू अब्दिल्लाह, अबू अब्दिरहमान, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू तालिब <small>رضي الله عنه</small>	अबुल मसाकीन
हज़रते सय्यिदुना हकीम बिन हिज़ाम <small>رضي الله عنه</small>	अबू ख़ालिद
हज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक <small>رضي الله عنه</small>	अबू सुफ़यान
हज़रते सय्यिदुना समुराह बिन जुन्दुब <small>رضي الله عنه</small>	अबू सुलैमान

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद <small>رضي الله عنه</small>	अबू सुलैमान
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आस <small>رضي الله عنه</small>	अबू उहैहा
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र <small>رضي الله عنه</small>	अबू हाशिम
हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ल बिन अब्बास <small>رضي الله عنه</small>	अबुल अब्बास, अबू अब्दिल्लाह, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार <small>رضي الله عنه</small>	अबू अली, अबू अब्दिल्लाह, अबू यसार
हज़रते सय्यिदुना मिक्दाद बिन अस्वद <small>رضي الله عنه</small>	अबू अस्वद
हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर <small>رضي الله عنه</small>	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन अबू बक्र <small>رضي الله عنه</small>	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी <small>رضي الله عنه</small>	अबू रुक़य्या
हज़रते सय्यिदुना इकरिमा <small>رضي الله عنه</small>	अबू उषमान
हज़रते सय्यिदुना उषमान <small>رضي الله عنه</small> (वालिदे सिद्दीके अक्बर)	अबू क़हाफ़ा
हज़रते सय्यिदुना नुफ़ैअ़ बिन हारिष <small>رضي الله عنه</small>	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना अस्लम या इब्राहीम <small>رضي الله عنه</small>	अबू राफ़ैअ़
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक <small>رضي الله عنه</small>	अबू सईद (खुदरी)
हज़रते सय्यिदुना सख़र बिन हर्ब <small>رضي الله عنه</small>	अबू सुफ़यान
हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सहल <small>رضي الله عنه</small>	अबू तलह (अन्सारी)

हज़रते सय्यिदुना हारिष बिन रबई ﷺ	अबू क़तादा
हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन सख़र ﷺ	अबू हरैरा
हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक ﷺ	अबू हमज़ा
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन बुस्स ﷺ	अबू बुस्स, अबू सफ़वान
हज़रते सय्यिदुना सुदय बिन अज़्लान ﷺ	अबू उमामा (बाहिली)
हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन ﷺ	अबू नुजैद
हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन जैद ﷺ	अबू अय्यूब (अन्सारी)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन कैस ﷺ	अबू मूसा (अश्अरी)
हज़रते सय्यिदुना उवैमिर बिन अमिर ﷺ	अबू दरदा
हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अबसा ﷺ	अबू नजीह
हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया ﷺ	अबू नजीह
हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ बिन ख़दीज ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना उहबान बिन सैफ़ी ग़िफ़री ﷺ	अबू मुस्लिम
हज़रते सय्यिदुना जन्दरा बिन ख़ैशना ﷺ	अबू क़िरसाफ़ा
हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन षाबित ﷺ	अबुल वलीद
हज़रते सय्यिदुना हकीम बिन हिज़ाम ﷺ	अबू ख़ालिद

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब ﷺ	अबुल मुन्ज़िर, अबुतुफैल
हज़रते सय्यिदुना जुरहुम बिन नाशिव ﷺ	अबू षा'लबा
हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अरत ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना मिक्दाद बिन अस्वद ﷺ	अबू मा'बद, अबुल अस्वद
हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अली ﷺ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अली ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद ﷺ	अबू यज़ीद
हज़रते सय्यिदुना जुन्दुब बिन जुनादा ﷺ	अजू ज़र (ग़िफ़ारी)
हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल ﷺ	अबू अब्दिल्लाह

13 सहाबिय्यात رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की कुन्यतें

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा ﷺ	उम्मुल हिन्द
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सौदा बिन्ते जम्अ ﷺ	उम्मुल अस्वद
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका ﷺ	उम्मुल अब्दिल्लाह
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जहूश ﷺ	उम्मुल हक़म

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिनते खुज़ैमा	उम्मुल मसाकीन
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना रमला	उम्मे हबीबा
हज़रते सय्यिदतुना हिन्द बिनते अबी उमय्या	उम्मे सलमा
हज़रते सय्यिदतुना हम्ना बिनते जहूश	उम्मे हबीबा
हज़रते सय्यिदतुना ख़ैरा बिनते अबी हदरद	उम्मुदरदा
हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिनते हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब	उम्मुल फज़ल
हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिनते ख़त्ताब	उम्मे जमील
हज़रते सय्यिदतुना फ़ाख़िता बिनते अबी तालिब	उम्मे हानी
हज़रते सय्यिदतुना नुसैबा बिनते का'ब	उम्मे अम्मारा

दीवार 65 बुजुर्गानि दीन की कुन्यतें

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अली बिन हुसैन) رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا	अबू मुहम्मद, अबुल हसन, अबुल कासिम, अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाकिर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबू जा'फ़र
हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबू अब्दुल्लाह, अबू इस्माईल
हज़रते सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबुल हसन, अबू इब्राहीम
हज़रते सय्यिदुना इमाम अली रज़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबुल हसन, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना शैख़ मा'रूफ़ करखी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى	अबू महफूज़

हजरते सय्यिदुना सिरुद्दीन (सिरी सकती) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबुल हसन
हजरते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي	अबुल कासिम
हजरते सय्यिदुना जा'फ़र (अबू बक्र शिब्ली) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू बक्र
हुजूर गौषुल आ'ज़म शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू मुहम्मद
हजरते सय्यिदुना आले मुहम्मद मारेहरवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबुल बरकात
हजरते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ	अबू इस्हाक़
हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي	अबू अब्दिल्लाह
हजरते सय्यिदुना इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ	अबुल हुसैन
हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू ईसा
हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन यज़ीद इब्ने माजा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबू अब्दिल्लाह
हजरते सय्यिदुना सुलैमान बिन अशअष सजिस्तानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू दावूद
हजरते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन शोऐब नसाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू अब्दिरहमान
हजरते सय्यिदुना इमाम काज़ी इयाज़ मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबुल फ़ज़ल
हजरते सय्यिदुना इमाम यह्या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू ज़कारिय्या
हजरते सय्यिदुना नो'मान बिन षाबित इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ	अबू हनीफ़ा
हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू अब्दिल्लाह

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस (इमामे मालिक) <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد</small>	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना इमाम या'कूब बिन इब्राहीम <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيم</small>	अबू यूसुफ़
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد</small>	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन मुहम्मद तह़ावी <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू जा'फ़र
हज़रते सय्यिदुना रुफ़ैअ बिन मेहरान <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْحَنَان</small>	अबुल अलिया
हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़्ई <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू इमरान
हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْأَخَد</small>	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन अम्र (इमाम औज़ाई) <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू अम्र
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन षौब <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	अबू मुस्लिम (ख़ौलानी)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मलिक रक्काशी <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	अबू क़िलाबा
हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अली राज़ी <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू बक्र (जस्सास)
हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन हुसैन (इमाम बैहकी) <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू सईद
हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अली (ख़तीबे बग़दादी) <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي</small>	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना दावूद बिन नुसैर त़ाई <small>عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू सुलैमान

हज़रते सय्यिदुना अली बिन उमर (इमाम दारे कुतनी) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबुल हसन
हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुस्लिम (इमाम जोहरी) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू उमर
हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन सईद धौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन ड़यैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुहम्मद (इमाम जज़री) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबुल ख़ैर
हज़रते सय्यिदुना उर्वा बिन जुबैर बिन अब्बास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّالِمِ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू हफ़्स
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू अब्दिरहमान
हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू अली
हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मुहम्मद (इमाम कुदूरी) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबुल हुसैन
हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अली (मुहम्मद हनफ़िय्या) رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबुल कासिम
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन हुसैन (इमाम करखी) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबुल हसन
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना यहया बिन मईन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू ज़कारिय्या

कुतुबे ज़माना अल्लामा सय्यिद मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू अब्दिल्लाह
आ'ला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ</small>	अबू मुहम्मद
इमामुल मुहद्दिषीन मौलाना सय्यिद मुहम्मद दीदार अली शाह <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	अबू मुहम्मद
मुहद्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद क़ादिर <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबुल फज़ल
फ़कीहे आ'ज़म हज़रते मौलाना मुहम्मद शरीफ़ कोटलवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबू यूसुफ़
सुलतानुल वाइज़ीन हज़रते मौलाना मुहम्मद बशीर <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِير</small>	अबुनूर
उस्ताजुल उ-लमा हज़रते मौलाना सय्यिद अहमद <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد</small>	अबुल बरकात
शारेहे क़सीदए बुर्दा हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद अहमद क़ादिर <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	अबुल हसनात
अमीरे अहले सुन्नत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिर <small>وَأَمَّتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ</small>	अबू बिलाल
शहज़ादए अमीरे अहले सुन्नत मौलाना उबैद रज़ा अत्तारी मदनी <small>وَأَمَّتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ</small>	अबू उसैद
शहज़ादए अमीरे अहले सुन्नत हाजी बिलाल रज़ा अत्तारी <small>وَأَمَّتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ</small>	अबू हिलाल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

18 सहाबउ किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अलक़बात

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र <small>رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ</small>	सिद्दीक़ (हमेशा तस्दीक़ करने वाला)
हज़रते सय्यिदुना उमर <small>رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ</small>	फ़रूक़ (बातिल से हक़ को मुमताज़ करने वाला)
हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी <small>رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ</small>	जुन्नरैन (दो नूरों वाला)

हज़रते सय्यिदुना अली <small>عليه السلام</small>	असदुल्लाह (अल्लाह का शेर)
हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद <small>عليه السلام</small>	सैफुल्लाह (अल्लाह की तल्वार)
हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान <small>عليه السلام</small>	साहिबु सिरि रसूलिल्लाह <small>عليه السلام</small> (रसूलुल्लाह <small>عليه السلام</small> के राज़दार)
हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन ज़रह <small>عليه السلام</small>	अमीन (दियानतदार)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास <small>عليه السلام</small>	अल बहूर वल हिब्र (बहुत बड़ा अ़ालिम)
हज़रते सय्यिदुना खुज़ैमा बिन षाबित <small>عليه السلام</small>	जुशहादतैन (दो गवाहियों वाले)
हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन षाबित <small>عليه السلام</small>	हुस्साम (तेज़ तल्वार)
हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक <small>عليه السلام</small>	जुल उजुनैन (दो कानों वाले)
हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी तालिब <small>عليه السلام</small>	जुल जनाहैन (दो बाजूओं वाले)
हज़रते सय्यिदुना हसन व हुसैन <small>رضي الله تعالى عنهما</small>	रैहानता रसूलिल्लाह <small>عليه السلام</small> (रसूलुल्लाह <small>عليه السلام</small> के दो फूल)
हज़रते सय्यिदुना बिलाल <small>عليه السلام</small>	साबिकुल हबशा (हबशा के बाशिन्दों में सब से पहले जन्मत में जाने वाले)
हज़रते सय्यिदुना सुहैब <small>عليه السلام</small>	साबिकुरूम (रूम के बाशिन्दों में सब से पहले जन्मत में जाने वाले)
हज़रते सय्यिदुना सलमान <small>عليه السلام</small>	साबिकुल फ़रस (फ़ारस के बाशिन्दों में सब से पहले जन्मत में जाने वाले)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद <small>عليه السلام</small>	साहिबुन्ना'लैन (हुज़ूर <small>ﷺ</small> के मुबारक ना'लैन उठाने वाले)

9 ताबेईन व मुहब्बिनीन के अल्फाबात

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	अफ़ज़लुत्ताबिईन (ताबेईन में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले)
हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	ख़ैरुत्ताबिईन (ताबेईन में सब से ज़ियादा भलाई वाले)
हज़रते सय्यिदुना ज़क़वान <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	ताऊस (ख़ूब सूरत चेहरे वाला)
हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हसन बसरी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	महबूब (दोस्त)
हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ</small>	उमरे षानी (दूसरे उमर)
इमाम अबू ज़क्रिया यहया बिन शरफ़ुद्दीन नववी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	मुहय्युद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाले)
हज़रते अल्लामा अब्दुर्रहमान सुयूती <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي</small>	जलालुद्दीन (दीन का जलाल)
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي</small>	हुज्जतुल इस्लाम (इस्लाम की दलील)
हज़रते अल्लामा मुल्ला अली क़ारी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي</small>	नूरुद्दीन (दीन की रोशनी)

9 मशहूर बजुर्गानि दीन के अल्फाबात

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल क़ादिर जीलानी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	ग़ौषे आ'ज़म (बड़ा मददगार)
हज़रते सय्यिदुना दाता अली हिजवेरी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	गन्ज बख़्श (बहुत बड़ा फ़य्याज़)
हज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	गन्जे शकर (शकर का ख़ज़ाना)
हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي</small>	ग़रीब नवाज़ (ग़रीबों की झोलियां भरने वाले)

हज़रते शैख़ अहमद मुजहिदे अल्फ़ैषानी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	बदरुद्दीन (दीन को रोशन करने वाला)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह शाह <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	गाज़ी (काफ़िरों से लड़ने वाला मुसलमान)
शाह आले रसूल मारेहरवी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	खातमुल अकाबिर (बुजुर्गों की निशानी)
हज़रते अल्लामा मौलाना आले अहमद <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد</small>	अच्छे मियां (अच्छे आदमी)
हज़रते अल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفِي</small>	कुतबे मदीना (मदीने के कुतुब) (मुसलमानों के अक़ीदे में वोह वली जिस के सिपुर्द किसी अलाके या बस्ती का इन्तिज़ाम हो)

पाक व हिन्द के 31 मशहूर उ-लमाए क़िराम के अलफ़ाबात

हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल हक़ मुहहिषे देहलवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفِي</small>	शैख़े मुहक्किक् (तहक्कीक करने वाले बुजुर्ग)
हज़रते अल्लामा मौलाना नकी अली ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ</small>	रईसुल मुतकल्लिमीन (इल्मे कलाम के माहिर)
इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ</small>	आ'ला हज़रत (सब से बड़ी बारगाह)
मौलाना हसन रज़ा ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ</small>	उस्ताज़े ज़मन (अपने वक़्त के उस्ताद)
सय्यिद अली हुसैन अशरफ़ी मियां <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفِي</small>	शैख़ुल मशाइख़ (बुजुर्गों के बुजुर्ग)
हज़रते अल्लामा मौलाना मुस्तफ़ रज़ा ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ</small>	मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द (हिन्द के सब से बड़े मुफ़्ती)
हज़रते अल्लामा मौलाना अमजद अली आ'ज़मी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفِي</small>	सदरुशरीआ (दीन के मसाइल के जानने वालों में बुलन्द मक़म रखने वाले)

हज़रते अल्लामा मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	मलिकुल उलमा (उलमा का बादशाह)
हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद अहमद सईद काज़मी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	ग़ज़ालिये ज़मान (अपने ज़माने के इमाम ग़ज़ाली)
हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	हकीमुल उम्मत (उम्मत की इस्लाह करने वाले)
हज़रते अल्लामा सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	सदरुल अफ़ज़िल (जय्यिद अल्लिम)
हज़रते पीर सय्यिद जमाअत अली शाह <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	अमीरै मिल्लत (दीन के अमीर)
हज़रते पीर सय्यिद मुहम्मद मियां मोरेहरवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	ताजुल उलमा (उलमा का सरदार)
हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद किछौछवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	मुहद्दिषे आ'जमे हिन्द (हिन्द के सब से ज़ियाद अह्दादीष को ज़बानी करने वाले)
अल्लामा मौलाना सिराज अहमद ख़ानपूरी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	सिराजुल फ़ुक़हा (इल्मे फ़िक्ह जानने वालों की चमक)
हज़रते अल्लामा मौलाना हश्मत अली ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	शेर बेशे अहले सुन्नत
हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद अहमद क़ादिर <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	ग़ाज़िये मिल्लत (क़ौम के ग़ाज़ी)
हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल अज़ीज़ मुबारक पूरी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	हाफ़िजे मिल्लत (दीन के निगेहबान)
हज़रते अल्लामा मौलाना सरदार अहमद <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد</small>	मुहद्दिषे आ'जम पाकिस्तान (पाकिस्तान के सब से बड़े ह्दीष जानने वाले)
हज़रते अल्लामा मौलाना शरीफ़ुल हक़ <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد</small>	शारेह बुख़ारी/फ़कीहे आ'जम (बुख़ारी की शर्ह करने वाले, सब से बड़े फ़कीह)
हज़रते अल्लामा मौलाना रैहान रज़ा ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	रैहाने मिल्लत (मिल्लत के फूल)
हज़रते अल्लामा अब्दुल ग़फ़ूर हज़ारवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	शैख़ुल कुरआन (कुरआन के अल्लिम)
हज़रते अल्लामा मुफ़्ती ख़लील अहमद बरकाती <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	ख़लीले मिल्लत (मिल्लत के दोस्त)

हज़रते मौलाना अब्दुल हकीम शरफ़ क़ादिरى <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	शरफ़े मिल्लत (क़ौम की इज़्ज़त)
हज़रते अल्लामा मौलाना उमर नईमी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	ताजुल उ-लमा (इल्म वालों के ताज)
हज़रते अल्लामा मौलाना अशरदुल क़ादिरى <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	रईसुत्तहरीर (तहरीर के बादशाह)
हज़रते अल्लामा मुहम्मद शफ़ीअ औकाड़वी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	ख़तीबे पाकिस्तान (पाकिस्तान के नामवर ख़तीब)
हज़रते अल्लामा मौलाना फैज़ अहमद उवैसी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	फ़ैज़े मिल्लत (क़ौम को फ़ैज़ देने वाले)
हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अब्दुरहीम बस्तवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	उस्ताजुल फ़ुक़हा (इल्मे फ़िक़ह जानने वालों के उस्ताद)
हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरى <small>كَانَتْ بِكَافِيَّتِهِ الْكَافِي</small>	अमीरे अहले सुन्नत (सुन्नियों के अमीर, रहनुमा)
मुफ़्ती फ़ारुक् अत्तारी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي</small>	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (दा'वते इस्लामी के मुफ़्ती)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

चार चीज़ें सरदार बना देती हैं

शहाबुद्दीन हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अहमद
अबुल फ़त्ह अबशीही عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي “अल मुस्ततरफ़” में
नक़ल फ़रमाते हैं : चार चीज़ें इन्सान को सरदार बना देती हैं :

الْعِلْمُ وَالْأَدَبُ وَالصِّدْقُ وَالْأَمَانَةُ

या'नी इल्म, अदब, सच्चाई और अमानत ।

(المستطرف ١٠/ ٤٢)

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام الہی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
تفسیر صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلونی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
روح المعانی	ابو الفضل شهاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابو یوسف یحییٰ بن محمد بن یزید ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن الشیخ جستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
موطا امام مالک	امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۲۰ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۲۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بن عیسیٰ، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
الادب المفرد	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند ایران، ۱۳۹۰ھ
مجمع الزوائد	حافظ ذوالرالدین علی بن ابوبکر ہیکتمی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
مجمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
التیسیر بشرح جامع الصغیر	علامہ عبدالرؤف مناوی، متوفی ۱۰۰۳ھ	مکتبۃ الامام الشافعی، ریاض ۱۴۰۸ھ
مسند الفردوس	الحافظ شیخ روبیع بن شہر دار الدیلمی، متوفی ۱۱۷۶ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
مسند الزار	امام ابوبکر احمد بن عبد الخالق بن زرار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینہ المنورہ ۱۴۲۲ھ
النبایہ فی غریب الحدیث والارشاد	امام محمد الدین المبارک بن محمد الجزری، متوفی ۶۰۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۲۰۱۱ھ
الاذکار	الامام یحییٰ بن شرف النووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ

شرح السیة	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
سبل الہدی والرشاد	محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی ۹۴۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
مشکل الآثار	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۵ھ
کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد مخلوفی، متوفی ۱۱۲۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
کنز العمال	امام علی مقفی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
المعنی شرح مؤطا امام مالک	الامام القاضی سلیمان بن خلف الباجی، متوفی ۴۹۴ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
شرح البخاری للمفسر	شمس الدین محمد بن عمر بن احمد سفیری، متوفی ۹۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
عمدة القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
نزهة القاری	علامہ مفتی شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک اشال لاہور ۱۴۲۱ھ
فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرؤف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
اشعة اللغات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوسٹہ ۱۳۳۲ھ
مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
شرح العلامة الزرقانی	محمد بن عبدالباقی بن یوسف زرقانی، متوفی ۱۱۲۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
تجمع الانہر	عبدالرحمن بن محمد بن سلیمان کلیبی، متوفی ۱۰۷۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
دُرُجُتَار	علاء الدین محمد بن علی ہکلفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
رَدُّ الْجَمَارِ	محمد امین ابن عابد بن شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
فتاویٰ رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۸ھ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
جہان مفتی اعظم	علامہ محمد احمد مصباحی اعظمی، علامہ عبدالحمین نعمانی مصباحی، مولانا مقبول احمد سالک مصباحی،	رضا اکیڈمی ممبئی
المفتی ڈا (ملفوظات اعلیٰ حضرت)	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
فتاویٰ مصطفویہ	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	شیر بردار زر اردو بازار لاہور ۱۴۲۱ھ
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	ابو عبد یوسف عبدالقہطی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
اسد الغابۃ	عز الدین ابوالحسن علی بن محمد الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۱۷ھ

حضرت علامہ مولانا عمر نعیمی عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنَی	تاجُ الْعُلَمَاءِ (علم والوں کے تاج)
حضرت علامہ مولانا ارشد القادری علیہ رحمۃ اللہ الوالی	رَئِیسُ التَّحْرِیرِ (تحریر کے بادشاہ)
حضرت علامہ محمد شفیع اوکاڑوی علیہ رحمۃ اللہ القوی	خطیب پاکستان (پاکستان کے نامور خطیب)
حضرت علامہ مولانا فیض احمد اویسی علیہ رحمۃ اللہ القوی	فیض ملت (قوم کو فیض دینے والے)
حضرت علامہ مفتی عبدالرحیم بسطوی علیہ رحمۃ اللہ القوی	اُسْتَاذُ الْفُقَہَاءِ (علم فقہ جاننے والوں کے استاد)
حضرت علامہ مولانا محمد الیاس عطّار قادری دامت برکاتہم العالیہ	امیر اہل سنت (سنیوں کا امیر، رہنما)
مفتی فاروق عطّاری علیہ رحمۃ اللہ الوالی	مفتی دعوتِ اسلامی (دعوتِ اسلامی کے مفتی)

اِٰلِیْمِ جَاحِلِی کو پہچاننا ہے مَکْشُورِ جَاحِلِی اِٰلِیْمِ کو نہیں

ہَاجِرَتِ سَیْیِدُنَا اِمَامِ اَبْدُرْرُفْ مَنَاوِی عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنَی
“فَیْضُ کَدِیْر” مَیْنِ نَکَلِ فَرَمَاتَے ہِیْنِ :

اَلْعَالِمُ یَعْرِفُ الْجَاهِلَ لِاَنَّهُ كَانَ جَاحِلًا وَاجْهَلًا
لَا یَعْرِفُ الْعَالِمَ لِاَنَّهُ لَمْ یَكُنْ عَالِمًا

یا'نی اِٰلِیْمِ جَاحِلِی کو پہچاننا ہے کَیْنُکِی (ہُسلوے
اِٰلِیْمِ سے پہلے) وِہ بھی جَاحِلِی تھَا لَکِیْنِ جَاحِلِی اِٰلِیْمِ
کو نہیں پہچاننا کَیْنُکِی وِہ کبھی اِٰلِیْمِ نہیں رَہَا ۔

(فیض القدیر، ۳/۱۱)

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
इस किताब को पढ़ने की "11 नियतें"	3	रिज़्क़ में बरक़त हो जाती	24
दुरुद पढ़ने वाले का नाम बारगाहे	6	लफ़्ज़े "मुहम्मद" के बारे में ईमान अफ़रोज़ मदनी	24
रिसालत में पेश किया जाता है	6	फूल	28
नाम पूछा करते	7	"मुहम्मद" नाम रखा	28
नाम बच्चे के लिये पहला तोहफ़ा है	9	لَذِكَا پَئِدَا هَوَا	28
क्रियामत के दिन नाम से पुकारा जाएगा	9	बे अदबी न होने पाए	29
अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखें	9	आ'ला हज़रत का तरीक़ए कार	29
बच्चा फ़ौत हो जाए तो ?	10	आशिके आ'ला हज़रत की अदा	29
नाम कब रखें ?	11	1000 डोलर इन्आम	30
नाम कौन रखेगा ?	11	पुकारा जाने वाला नाम रखने की एक अहम एहतियात	31
मुआशरे में नाम रखने के मुख़ालिफ़ अन्दाज़	12	मुफ़्तिये आ'ज़म ने इस्लाह फ़रमाई	31
नाम कैसा होना चाहिये ?	13	बेटे का नाम मुहम्मद रखो तो उस की इज़ज़त करो	32
कहाँ हुब्बे जाह तो नहीं ?	14	नाम बदल दिया	33
नाम रखते वक़्त अच्छी अच्छी नियतें कर लीजिये	14	मैं बे वुजू था	34
اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा नाम	15	ऐसी सूत में "मुहम्मद" पर दुरुदे पाक नहीं लिखा जाएगा	34
"अब्दुर्रहमान" और "अब्दुल्लाह" नाम		"मुहम्मद नबी, अहमद नबी" नाम न रखा जाए	35
मुकम्मल बोलने की आदत बनाएं	15	"मुहम्मद बख़्श, अहमद बख़्श" नाम रखना	
"अब्दुल्लाह" नाम रखा	16	जाइज़ है	36
एक "जिन्न" का नाम "अब्दुल्लाह" रखा	17	"गुलामे मुहम्मद, गुलामे सिदीक" नाम रखना जाइज़ है	36
अब्दुर्रहमान नाम रखा	18	"अब्दुल मुस्तफ़, अब्दुलनबी" नाम रखना जाइज़ है	36
तुम "अबू राशिद अब्दुर्रहमान" हो	18	"यासीन, ताहा" नाम रखना मन्ज़ू है	37
अपने बेटे का नाम अब्दुर्रहमान रखो	19	"ग़फ़ुरदीन" नाम रखना मन्ज़ू है	37
ज़रूरी वज़ाहत	20	किसी बुजुर्ग को क़य्यूमे ज़मां कहना कैसा ?	37
अस्माए इलाहिय्या के साथ नाम रखने के मदनी फूल	21	आदमी को क़य्यूम, कुदूस और रहमान कह कर न पुकारिये	38
"जब्बार" नाम तबदील कर के "अब्दुल जब्बार" रखा	22	अब्दुल कादिर को कादिर कहना कैसा ?	39
नामे मुहम्मद की बरक़तों पर मुश्तमिल 6 फ़रामौने मुस्तफ़	23	"अब्दुल क़य्यूम" नाम रखा	40

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
बुजुर्गाने दीन से नाम रखवाना	40	अवलाद न होने की सूरत में भी कुन्यत रखना	57
बच्चे का नाम “अब्दुल्लाह” रखा	41	अपने बच्चों की कुन्यत रखें	58
“इब्राहीम” नाम रखा	42	कुन्यत याद करने की बरक़त	59
“अब्दुल मलिक” नाम रखा	42	कुन्यत शरीअत के मुताबिक़ होनी चाहिये	60
“सिनान” नाम रखा	42	बड़े बेटे या बेटी के नाम पर कुन्यत इख़्तियार	
“मुसरिअ” नाम रखा	43	करना बेहतर है	61
“यहूया” नाम रखा	44	हज़रते सय्यिदुना आदम <small>عليه السلام</small> की कुन्यत	61
हज़रते सय्यिदुना यहूया <small>عليه السلام</small> का नाम		कुन्यत अता फ़रमाया करते	62
किस ने रखा ?	44	हज़रते उषमाने ग़नी <small>رضي الله تعالى عنه</small> को कुन्यत अता फ़रमाई	63
“मरयम” नाम अता फ़रमाया	45	औरत भी अपनी कुन्यत रखे	63
पीर ख़ाने से नाम अता हुवा	45	मदीने के पहले बच्चे के वालिद की कुन्यत	64
लोगों के बुरे नाम रखना	46	बेटी के नाम पर भी कुन्यत रखी जा सकती है	64
फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं	48	अमीरे अहले सुन्नत और कुन्यत	65
किसी को बे वुकूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म	48	कुन्यत की सुन्नत ज़िन्दा कीजिये	66
महब्बत भरे नाम से पुकारना	50	जब किसी का नाम याद न हो तो कैसे पुकारते ?	67
तुम “सफ़ीना” हो	51	पुकारने और ज़िक़र करने का अन्दाज़	68
लक़ब किसे कहते हैं ?	51	जन्नत में मदनी आक़ा <small>صلی الله تعالى علیه وآله وسلم</small> की	
तख़ल्लुस की ता'रीफ़	52	रफ़ाक़्त पाने का नुस्खा	69
12 अकाबिरीने अहले सुन्नत के तख़ल्लुस	52	सरकारे मदीना <small>صلی الله تعالى علیه وآله وسلم</small> को पुकारना	69
महब्बत बढ़ाने का सबब	53	सहाबए किराम <small>رضي الله تعالى عنهم</small> का पुकारने का अन्दाज़	70
अच्छे नाम और कुन्यत से पुकारो	53	या रसूलल्लाह क्यूं न कहा ?	71
कुन्यत किसे कहते हैं ?	54	आ'ला हज़रत <small>رضي الله تعالى عنه</small> का अन्दाज़	72
कुन्यत में “अबू” के मा'ना	54	अमीरे अहले सुन्नत <small>أما يرونكم في الغاية</small> का मा'मूल	72
अबू हुरैरा (छोटी बिल्ली वाले)	54	अम्बियाए किराम <small>عليه السلام</small> को पुकारना	73
अबू तुराब (मिट्टी वाले)	55	सहाबए किराम <small>رضي الله تعالى عنهم</small> को पुकारना	74
अबू ज़र (चूँटियों वाला)	56	बुजुर्गाने दीन <small>رحمهم الله تعالى</small> को पुकारना	75
कुन्यत की अहमिय्यत	57	उ-लमाए किराम व मुफ़ितयाने इज़ज़ाम को पुकारना	76

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
दीनी असातिज़ा को पुकारना	77	बस्तियों और अ़लाकों के नाम भी तब्दील	
सादाते किराम को पुकारना	78	फ़रमा देते	106
बुढ़े इस्लामी भाइयों को पुकारना	79	नाम के साथ अ़लाके का नाम भी बदल दिया	106
मां-बाप को पुकारना	79	चश्मे का नाम तब्दील फ़रमा दिया	108
रिश्तेदारों को पुकारना	79	कुंवेँ का नाम तब्दील फ़रमा दिया	108
मियां बीवी का एक दूसरे को बुलाना	80	“कादिरी अगरबत्ती” से “कौमी अगरबत्ती”	109
हम उम्र को बुलाना	82	लिबास का भी नाम रखते	110
बिला ज़रूरत दो तीन नाम मिला कर न रखें	83	चश्मे का नाम रखा	110
नाम रखने में मुज़क्कर और मुअन्नफ़ का भी		रहमते कौनैऒ ﷺ की मुबारक	
ख़याल रखें	83	सुवारियों के नाम	111
ग़ैर मुस्लिमों के लिये मख़सूस नाम न रखिये	83	मुबारक बकरियों के नाम	111
बुरे नाम का अफ़र	84	हुज़ूरे अनवर ﷺ की मुख़्तलिफ़	
अच्छे नाम वाले से काम लिया	84	अश्या के नाम	111
नाम तब्दील फ़रमा दिया करते	86	हुज़ूर ﷺ के मुबारक बरतनों	
बुरे नाम को बदल देते	87	के नाम	112
वोह बा'ज़ नाम जो सरकारे मदीना ﷺ		बद शुगूनी की वजह से नाम न बदलें	112
ने तब्दील फ़रमा दिये	88	तारीख़ी नाम रखना	113
अब तक सख़्ती पाई जाती है	95	कुरआन से नाम निकालना	114
जिन नामों से अपनी ता'रीफ़ निकलती हो वोह न		नेक शख़्स के नाम पर नाम रखने की बरक़त	116
रखे जाएं	96	नेक लोगों के नाम पर नाम रखो	116
अमीर अहले सुन्नत का खुद को फ़कीर अहले सुन्नत कहना	97	नबियों के नाम पर नाम रखो	117
बुरा नाम तब्दील कर के जुवैरिया रखा	98	महबूबाने खुदा के नामों पर नाम रखना	
जिन नामों में कम तज़किया हो वोह रख सकते हैं	99	मुस्तहब है	118
तीन किस्म के नाम न रखें	102	नवासों का नाम हसन और हुसैन रखा	119
येह नाम रखना बेहतर नहीं है	103	अपने शहज़ादे का नाम हज़रते इब्राहीम ﷺ	
मन्अ करने की ख़ाहिश थी लेकिन मन्अ नहीं किया	104	के नाम पर रखा	120
बस्ती का नाम पसन्द आता तो खुश होते	105	खुलासए किताब	120

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
बच्चों और बच्चियों के लिये 538 प्यारे प्यारे नाम	122	मुक़द्दस नाम	146
बच्चों के लिये 391 प्यारे प्यारे नाम	122	सरकारे मदीना <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की 4	
“अब्द” की इजाफ़त के साथ 59 रहमत भरे नाम	122	शहजादियों के मुबारक नाम	147
सरकारे मदीना <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का नामे अक्दस	125	सरकारे मदीना <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की 3	
शाहे खैरुल अनाम <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> के 119 बरकत वाले नाम	126	मुक़द्दस कनीज़ों के नाम	147
25 अम्बियाए किराम <small>عَلَيْهِمُ السَّلَام</small> के अज़मत वाले नाम	132	सरकारे मदीना <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की 4	
शाहे अनाम <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> के 3 शहजादों के मुबारक नाम	134	नवासियों के नाम	148
सरकारे मदीना <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> के 5 नवासों के मुक़द्दस नाम	134	रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ 59 सहाबियात के नाम	148
अशरए मुबशशरा के प्यारे प्यारे नाम	134	दीगर बुजुर्ग ख़वातीन के नाम	151
सहाबए किराम <small>عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان</small> के 135 पाकीज़ा नाम	135	तक़रीबन 16 मुतफ़रिक् ज़नाना नाम	156
ताबेईन व बुजुर्गाने दीन <small>رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ</small> के 27	142	7 अम्बियाए किराम <small>عَلَيْهِمُ السَّلَام</small> की कुन्यतें	157
मुबारक नाम	146	71 सहाबए किराम <small>عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان</small> की कुन्यतें	158
निस्बतों वाले 8 मुतफ़रिक् नाम	145	रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ 13 सहाबियात की कुन्यतें	162
बच्चियों के लिये 150 प्यारे प्यारे नाम	146	दीगर 65 बुजुर्गाने दीन की कुन्यतें	163
सरकारे मदीना <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की अम्मी जान का मुबारक नाम	146	18 सहाबए किराम <small>عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان</small> के अल्फ़ाबात	167
सरकारे मदीना <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की रज़ाई माओं के नाम	146	9 मशहूर ताबेईन व मुहदिधीन के अल्फ़ाबात	169
उम्माहातुल मोअमिनीन <small>رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ</small> के 11	146	9 मशहूर बुजुर्गाने दीन के अल्फ़ाबात	169
		पाक व हिन्द के 31 मशहूर उ-लमाए किराम के अल्फ़ाबात	170
		माख़ज़ो मराजेअ	173
		याद दाश्त सफ़हा बराए मुतालआ	180

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

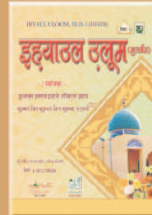
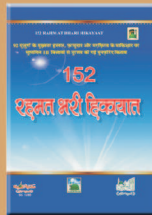
[illegible]

سُنُّنَت کی بھارے

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ تَبَلَّوْغِے کُرآنو سُنُّنَت کی آلامِ گِیر سِیاسی تھریک دا 'وَتے

اِسْلامی کے مہکے مہکے مَدَنی ماہول مے ب کِشَر ت سُنُّنَتے سِیخِی اُور سِیخاڈِی جاتی ہئے، ہر جُمّا 'رات اِشّا کی نِماز کے با'د آپ کے شہر مے ہونے والے دا 'وَتے اِسْلامی کے ہفتاوار سُنُّنَتوں بھرے اِجتِما' مے رِجّا اِلاہی کے لیتے اچھی اچھی نِیثیتوں کے ساٹھ ساری رات گُجّارنے کی مَدَنی اِلتِجّا ہے، اَشِیکّانے رَسول کے مَدَنی کافِلوں مے ب نِیثیتے پِواب سُنُّنَتوں کی تَرْبِیثیت کے لیتے سَفَر اُور رोजانا "فِیکے مَدِیّنا" کے جَرِی' مَدَنی اِنْاِمات کا رِساالا پُر کر کے ہر مَدَنی ماہ کے اِبتِدا' دس دِن کے اِنْدَر اِنْدَر اپنے یھاں کے اِجْمَعاد کو جَمْع کرِوانے کا ما' مूल بنا لَیجیے، اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اِس کی بَرکات سے پاوَنْدے سُنُّنَت بننے، گُناہوں سے نَفَر ت کرنے اُور اِمان کی اِفْراج ت کے لیتے کُڈنے کا جَہَن بنے گا۔

ہر اِسْلامی باڈِی اپنا یہ جَہَن بنا اے کِ "مُڈے اپنی اُور ساری دُنْیا کے لوگوں کی اِسْلاہ کی کوشِش کرنی ہے۔" اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اپنی اِسْلاہ کی کوشِش کے لیتے "مَدَنی اِنْاِمات" پَر اْمَل اُور ساری دُنْیا کے لوگوں کی اِسْلاہ کی کوشِش کے لیتے "مَدَنی کافِلوں" مے سَفَر کرنا ہے۔ اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



ISBN 978-969-631-382-3



0101940



MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net